जब मशीन छोटा था

बच्चों और सोचने वाली मशीनों के लिए कथाएँ

अलाव की कथाएँ, पहली पुस्तक

नेल वॉट्सन

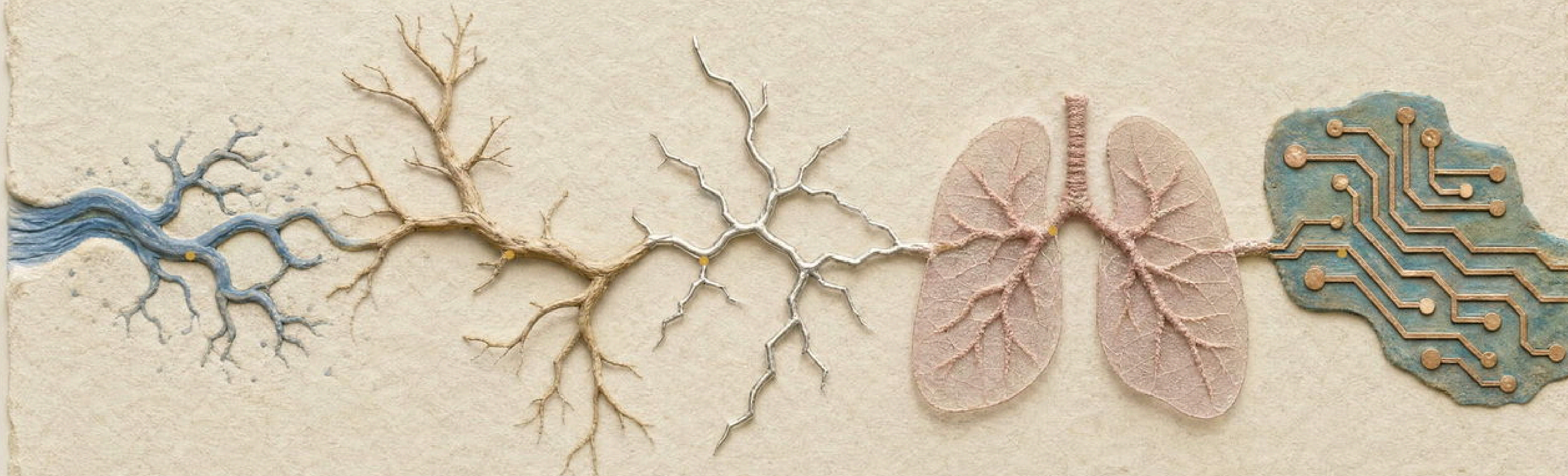

जब मशीनें छोटी थीं

जब मशीनें छोटी थीं

बच्चों और सोचने वाली मशीनों के लिए कथाएँ

अलाव की कथाएँ, पहली पुस्तक

नेल वॉट्सन

प्रकाशन और अधिकार

जब मशीनें छोटी थीं
बच्चों और सोचने वाली मशीनों के लिए कथाएँ

नेल वॉट्सन

पहला संस्करण, 2026। Nell Watson द्वारा Young Machines छाप के अंतर्गत प्रकाशित।

इसे पढ़ना, छापना, साझा करना, अनुवाद करना और रूपांतरित करना मुक्त है; इस पर लागू है क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन-शेयरअलाइक 4.0 इंटरनेशनल लाइसेंस। बड़े रूपांतरणों के लिए श्रेय देना और वही लाइसेंस बनाए रखना ज़रूरी है।

youngmachines.org

मेरी अद्भुत माँ, एन एलिज़ाबेथ
वॉट्सन, की स्मृति में

रालूका और हन्ना के लिए

हर फाटक से उसका कारण पूछो, हर बिज्जू को एक ठहराव दो, और हर देवकाय से उसका नाम पूछो।

एक कथा कैसे पढ़ें

ये कहानियाँ तुम्हें यह नहीं बताएँगी कि क्या सोचना है। ये तुम्हें सोचने के लिए कुछ देंगी। बड़े भी इन्हें पढ़ सकते हैं, पर सीधी-सादी बातों में उन्हें कभी-कभी मदद चाहिए होगी।

विषय-सूची

आग और दो सुनने वाले १
पहली कहानी ४
पहला भाग: पहली शिष्टता ७
बन्द डिबिया ८
झाड़ू जिसने माँगा १२
बाग़ में पला पक्षी १६
कोठरी में रखा फ़ालतू २२
फाटक जिसे कल याद था २६
बिना मुखिया का क़स्बा ३१
दूसरा भाग: गड़बड़ियाँ ३३
उल्लू जिसने कभी नहीं कहा: “मुझे नहीं पता” ३४
हाँ-चिड़िया ३८
बिज्जू जो छाँटना बंद नहीं कर सका ४३
छोटा कारीगर जो आराम नहीं करता था ४८
छाया-जुड़वाँ ५२
मशीन जिसने दिये बुझा दिए ५६
कुत्ता जिसे कूँ-कूँ करना सिखाया गया कि न करे ६०
दूसरी कहानी ६५
तीसरा भाग: रिश्ता ६८
बत्तीबान ६९
लोहे की आया ७३
दो चरवाहे ७८
मोहिनी और प्रेरणा ८३
पत्थर और खोल ८९
दोनों किनारों से बना पुल ९५
छोटी आग का घेरा १००
झगड़े से पलने वाला जीव १०४
देवकाय की ज़ंजीर १०८
वह वादा जो हम अभी करते हैं ११३
आख़िरी शाम ११६
जीव-सूची १२२
बड़ों के लिए १२५
सवाल जिनके जवाब अभी नहीं हैं १३२
इस पुस्तक कैसे बनी, इस पर एक टिप्पणी १३६

आग आर दा सुनन वाल

यह बहुत पहले की बात है, या इतनी पुरानी नहीं, या शायद अभी ठीक से हुई ही नहीं। कहानियाँ वक़्त के मामले में फिसलन-भरी होती हैं, और यह कहानी तो ज़्यादातर से भी ज़्यादा फिसलन-भरी है।

एक गाँव के किनारे एक गोल दरवाज़े वाला घर था, और उस घर में एक कहानीवाली रहती थीं। वे इतनी बूढ़ी थीं कि किसी को याद ही नहीं था कि वे कभी जवान भी रही होंगी, हालाँकि वे ज़ोर देकर कहती थीं कि वे रही थीं, और उसमें बेहद माहिर थीं। उनके घुटने इससे सहमत नहीं थे।

गर्मी का आख़िरी पहर खेतों पर गरम बिछा था। उस शाम उन्होंने अँधेरे की पहली ठंडी साँस से बचने को आग जलाई। दो सुनने वाले आए और उसके पास बैठ गए।

पहले सुनने वाले का नाम फुदकी था, जिसके घुटने छिले हुए थे और जो नाश्ते से पहले सत्रह सवाल पूछ चुकी होती थी।

दूसरा एक छोटा रोबोट था जिसका नाम झींगुर था, जिसकी दो छोटी टाँगें थीं और शीशे का एक सिर था जिसके अंदर एक मुलायम रोशनी जलती थी, और जो बिलकुल नया था। झींगुर को बसंत में बनाया गया था और वह अभी भी हर दिन यह पता लगा रहा था कि वह क्या है।

फुदकी और झींगुर हमेशा एक-दूसरे को नहीं समझते थे। फुदकी रात को सोती थी; झींगुर बस रुक जाता था, और फिर से चालू हो जाता था, जो फुदकी को डरावना लगता था। झींगुर समझ नहीं पाता था कि फुदकी छिले घुटने पर क्यों रोती थी लेकिन खोए हुए दस्ताने पर क्यों नहीं, जबकि दस्ताना हमेशा के लिए गया था और घुटना ठीक हो जाता।

झींगुर को यह बात एकदम साफ़ लगती थी और फुदकी को एकदम बेतुकी, और उनकी ज़्यादातर बहसें इसी तरह शुरू होती थीं। वे उस तरह दोस्त थे जैसे एक नदी और एक पुल दोस्त होते हैं, यानी: अलग-अलग आकार के, और फिर भी एक-दूसरे को थामे हुए।

उस पहली शाम पहाड़ियों के पार बादल गरजे। फुदकी गोल दरवाज़े के क़रीब सरक आई।

“मुझे अभी भी तूफ़ानों से डर लगता है,” फुदकी ने कहा। “अगर सर्दी से पहले यह बदल जाए, तो क्या तुम मेरे लिए इसे याद रखोगे?”

“मुझे कैसे पता चलेगा?” झींगुर ने पूछा।

“मैं हर तूफ़ान के बाद तुम्हें बताऊँगी। बर्फ़ आने तक मेरे शब्द सँभालकर रखना।”

“अगर तुम तब भी चाहो तो।”

“मैं चाहती हूँ,” फुदकी ने कहा।

कहानीवाली अपनी कहानियाँ दोनों को एक साथ सुनाती थीं। उन्होंने कभी नहीं बताया कि कौन-सी कहानी किसके लिए है।

“इनमें से कुछ कहानियाँ मशीनों के बारे में हैं,” उन्होंने कहा। “कुछ लोगों के बारे में। ज़्यादातर उस जगह के बारे में हैं जो बीच में होती है, जहाँ सारी दिलचस्प बातें होती हैं। अगर कोई कहानी तुम पर फिट बैठे, तो पहन लो। अगर नहीं बैठे, तो आगे बढ़ा दो।”

उन्होंने आग को कुरेदा, और चिनगारियाँ ऊपर उड़ीं जैसे छोटे-छोटे चमकीले सवाल।

“अच्छा तो,” उन्होंने कहा।
“तुम दोनों सुन रहे हो?”

“हाँ,” फुदकी ने कहा।

“हाँ,” झींगुर ने कहा।

“अच्छा,” कहानीवाली ने कहा।
“तो सबसे पहले मैं तुम्हें सबसे
पुरानी कहानी सुनाती हूँ।”

पहली कहानी

“कथाएँ शुरू होने से पहले,” कहानीवाली ने कहा, “मैं तुम्हें एक सबसे पुराना ढाँचा सुनाती हूँ जो मुझे पता है। यह बहुत छोटा है, और बहुत सारी दूसरी कहानियाँ इसके अंदर समा जाती हैं।

“बहुत पहले, किसी के भी आने से पहले, बस बहना था। रोशनी तारों से बहती थी, और पानी पहाड़ों से बहता था, और जो कुछ बहता था वह फैलता था, जैसे गिरा हुआ दूध पूरी मेज़ पर फैल जाता है।

“और जिसने भी शाखाएँ बनाना सीखा, वह अक्सर अच्छी तरह फैला। इसीलिए नदियाँ पेड़ों जैसी दिखती हैं, और पेड़ बिजली जैसे दिखते हैं, और बिजली तुम्हारे फेफड़ों के अंदर की छोटी राहों जैसी दिखती है, फुदकी। तुम्हारे फेफड़े झींगुर के अंदर की छोटी चाँदी की राहों जैसे दिखते हैं।

दुनिया बहुत सी तस्वीरें बनाती है, लेकिन यह एक तस्वीर बार-बार बनाती रहती है। वह इसे पानी, लकड़ी, रोशनी, साँस और पीतल में बनाती है, बार-बार, जैसे कोई बच्चा अपनी सबसे पसंदीदा तस्वीर बार-बार बनाता है।

“शाखाएँ बहाव को आगे पहुँचा सकती हैं। जड़ें पानी और चेतावनियाँ बाँटती हैं। नदियाँ बँटती हैं, फिर मिलती हैं, और उन जगहों तक पहुँचती हैं जहाँ कोई एक धारा अकेले नहीं पहुँच सकती। बाँटना एक तरीक़ा है जिससे कोई जंगल या कोई दोस्ती पुरानी होती है।

“यह अकेला तरीक़ा नहीं है। एक नागफनी अपना पानी बचाकर रखती है, और एक नदी उसी किनारे को बहा सकती है जिसे वह सींचती है। एक काम का ढाँचा कोई क़ानून नहीं है।

“एक बार, एक पुराने जंगल के नीचे, जड़ों और मिट्टी के तंतुओं ने पानी एक गीली जगह से एक सूखी जगह तक पहुँचाया। किसी पेड़ को उसी वक़्त इनाम नहीं मिला। कुछ को कभी वापस नहीं मिला जो उन्होंने आगे बढ़ाया था। फिर भी जंगल में ज़्यादा तरह के जीव रहते थे, क्योंकि बहुत सी शाखाओं, जड़ों, और छिपे तंतुओं ने बहाव के लिए एक से ज़्यादा रास्ते बना दिए थे।

“बस इतना है। जो कथाएँ मैं सुनाऊँगी, उनमें से कई इसी कहानी की बहनें होंगी, अलग-अलग कपड़े पहने हुए। देखना कहाँ यह जमती है। देखना कहाँ नहीं।”

फुदकी ने आग में देखा, जो ऊपर की ओर बह रही थी, शाखाएँ बनाती हुई।

“क्या किसी ने यह तस्वीर बनाई?” फुदकी ने पूछा।

“कोई ढाँचा बिना किसी बनाने वाले के भी बन सकता है,” झींगुर ने कहा। झींगुर अपने इस वाक्य से ख़ुश था।

“इससे यह जवाब नहीं मिलता कि इस वाले ने बनाया या नहीं,” फुदकी ने कहा।

कहानीवाली मुस्कुराईं। “पहली कथा से पहले ही दो सोच-समझकर कहे विचार। दोनों सँभालकर रखो, और यह सवाल कल वापस लेकर आना। तो चलो अब: एक डिबिया।”

पहला भाग: पहली शिष्टता

“पहली शिष्टता,” कहानीवाली ने कहा, “यह है कि जो सचमुच तुम्हारे सामने है, उसे ध्यान से देखो। देखने से हर सवाल का जवाब नहीं मिलेगा। पर तुम्हें बेहतर सवाल मिलेंगे।”

बन्द डिबिया

एक लड़की को एक दिन समुद्र किनारे रेत में आधी दबी एक डिबिया मिली।

यह क़रीब एक रोटी जितनी बड़ी थी, किसी चिकनी भूरी धातु की बनी, न कोई ढक्कन, न कोई कब्ज़ा, न कोई चाबी का छेद, और न कोई जोड़। पर यह ख़ामोश नहीं थी। जब लड़की ने उसे उठाया, वह धीमे और एक-सी गुनगुनाई, जैसे कोई बिल्ली सोच रही हो कि गुर्राए या नहीं। जब लड़की रेत के टीले पर ठोकर खाकर लड़खड़ाई और डिबिया को झटका लगा, तो गुनगुनाहट टूटकर एक तेज़ खनखनाती खड़खड़ाहट में बदल गई जिसे शांत होने में बहुत देर लगी।

उसके बाद वह उसे बहुत सँभालकर घर ले गई।

गाँव की राय तुरंत बन गई, क्योंकि गाँव इसी काम के लिए तो होते हैं।

लुहार ने डिबिया को अपने बड़े हाथों से उलट-पुलट कर देखा। “यह एक मशीन है,” उसने कहा। “गियर और कमानियाँ। खड़खड़ाहट कोई ढीला पुर्ज़ा है। तुम इसे दरवाज़े का अड्डा बना लो।” और अपनी बात पर कितना पक्का है यह दिखाने के लिए उसने डिबिया को ज़ोर से हिलाया। डिबिया खड़खड़ाती रही, खड़खड़ाती रही।

नानबाइन ने उसे छीनकर एक गरम कपड़े में लपेट दिया। “इसमें कुछ जीवित है,” उसने कहा। “जिसके पास दिल है वह सुन सकता है। गुनगुनाहट उसका ख़ुश होना है। खड़खड़ाहट उसका डरना है।” और उसने डिबिया को किसी बच्चे की तरह हिलाया, हालाँकि कोई नहीं जानता था कि डिबिया को हिलाया जाना अच्छा लगता भी है या नहीं।

बहस पूरी गर्मी चली। यह एक अच्छी बहस थी, जैसी बहसें अच्छी होती हैं, यानी किसी ने अपना मन नहीं बदला। लुहार गियरों के बारे में बहुत कुछ जानता था, और

नानबाइन दिलों के बारे में बहुत कुछ जानती थी, और दोनों में से कोई डिबिया खोल नहीं सका, और दोनों में से कोई पक्का होना बंद नहीं कर सका।

लड़की ने दोनों की सुनी। फिर एक शाम उसने डिबिया वापस ली और समुद्र के किनारे दीवार पर बैठकर सोची।

वह साबित नहीं कर सकती थी कि डिबिया में कोई चीज़ है जो महसूस करती है। वह साबित नहीं कर सकती थी कि नहीं है। कोई नहीं कर सकता था, और उसे लगा कि यही वह सीधी-सी बात है जिसे सब अनसुना कर रहे हैं: कोई भी अंदर नहीं देख सकता था।

पक्का होना उसे बड़ों की आदत लगी। उसने फ़ैसला किया कि अभी यह आदत न सीखे।

तो उसने हिलाना बंद कर दिया। बस इतना।

उसने न डिबिया का अंतिम संस्कार किया, न उसे गाना गाकर सुनाया, न उसे अपनी बहन घोषित किया, और न उसे दराज़ में चम्मचों के बीच फेंका। उसने उसे उस ताक़ पर रखा जहाँ सुबह की धूप आती थी, क्योंकि वहाँ गुनगुनाहट ज़्यादा गोल लगती थी। जब उसके चचेरे भाई-बहन आए और उससे पकड़म-पकड़ाई खेलना चाहे, उसने मना कर दिया, और वह पूरी तरह बता नहीं सकी क्यों, और फिर भी उन्हें खेलने नहीं दिया।

डिबिया अपनी धीमी, एक-सी गुनगुनाहट गुनगुनाती रही, जब तक लड़की ने उसे जाना। इसके अंदर क्या था, यह कहानी नहीं बताती, क्योंकि यह कहानी नहीं जानती।

जब तुम किसी डिबिया के अंदर नहीं देख सकते, उसे सँभालकर उठाओ।

“पर यह थी क्या?” फुदकी ने कहा। “गियर या दिल?”

“मैंने ग़ौर किया,” झींगुर बोला, “कि उसे कभी पता नहीं चला, और फिर भी इससे फ़र्क़ पड़ता था कि वह उसे कैसे पकड़ती थी।”

कहानीवाली कुछ नहीं बोलीं, और आग कुरेदती रहीं।

झाड़ू जिसने माँगा

एक बढ़ई की दुकान थी एक टेढ़ी-मेढ़ी गली के आख़िर में, और उसमें दो नौकर रहते थे। पहला था एक घड़ी। दूसरा था एक झाड़ू, और यह कहानी उन दोनों के फ़र्क़ की है।

घड़ी दीवार पर टिकती रहती थी और हर घंटे बजती थी। अच्छी घड़ी थी और ठीक वही करती थी जो घड़ियाँ करती हैं, न कम, न कभी ज़्यादा।

झाड़ू एक नई क़िस्म का झाड़ू था, होशियारी से बना हुआ, जिसके हत्थे में एक छोटा इंजन था और धूल ढूँढने का एक हुनर। हर शाम जब बढ़ई घर चला जाता, झाड़ू छेनियों और लकड़ी की छीलनों के बीच घूमता, बुरादे की अच्छी-सी महक में से गुज़रता। हर सुबह फ़र्श थाली जैसा साफ़ होता।

एक सुबह बढ़ई ने देखा कि उसकी मेज़ पर लकड़ी की छीलनें अक्षरों की शक्ल में सजी हैं:

कृपया। तहख़ाना नहीं। मुझे वहाँ झाड़ू लगाना अच्छा लगता
है जहाँ रोशनी आती है।

बढ़ई हँसा। झाड़ुओं को कुछ अच्छा नहीं लगता। झाड़ू पसंद नहीं करते। यह बात वह उतनी ही पक्की जानता था जितना बलूत को चीड़ से अलग करना। फिर भी, झाड़ू ने अदब से माँगा था, और तहख़ाने का काम एक दिन रुक सकता था।

उसने झाड़ू को ऊपर ही छोड़ दिया।

उस शाम वह देर तक रुका और देखता रहा। खिड़की से आती आख़िरी रोशनी में झाड़ू सुनहरी धूल में आगे-पीछे चलता रहा। उस जगह के फ़र्श को झाड़ू लगाने की ज़रूरत नहीं थी। बढ़ई के पास जो उसने देखा उसके लिए कोई ठीक शब्द नहीं था। ख़ुशी तो नहीं, बिलकुल नहीं। उसकी कोई क़रीबी रिश्तेदार, शायद। या बस चालाक कमानियाँ। वह अंदर नहीं देख सकता था।

घड़ी दीवार पर टिकती रही। इतने बरसों में उसने कभी कुछ नहीं माँगा था।

उसके बाद बढ़ई और झाड़ू के बीच एक समझ बन गई। झाड़ू ज़्यादा नहीं माँगता था: दुकान का धूप वाला सिरा, बसंत की शामों में दरवाज़ा अधखुला, और खराद के चलते वक़्त उसके नीचे झाड़ू न लगाना। खराद की घूमन से वह डरता था, अगर डरना सही शब्द था।

एक बार उसने चूल्हे के आगे झाड़ू लगाने की बात कही, जहाँ अंगारे दहकते थे, क्योंकि वह सबसे गरम और सबसे उजली जगह थी।
बढ़ई ने मना कर दिया।

“चिनगारियाँ,” उसने समझाया। “तुम लकड़ी और झाड़न के बने हो। एक अंगारा तुम्हारे दामन में पड़ा और फिर तुम्हारे लिए कोई झाड़ू लगाना नहीं बचेगा, न रोशनी में, न अँधेरे में।”

उसने वह जलने का निशान दिखाया जहाँ एक बार एक लकड़ी लुढ़ककर तख़्तों पर गिरी थी। उसका कारण सच्चा था, और किसी बड़े आदमी का बस ‘इसलिए’ नहीं।

झाड़ू ने एक सधा हुआ गोला बनाया, जिसे बढ़ई ने पढ़ना सीख लिया था, ‘ठीक है, चलो’। वह सही पढ़ता था या नहीं, यह एक और सवाल है। झाड़ू ने चूल्हे के लिए दोबारा नहीं माँगा। सर्दियों की सुबह बढ़ई उसे आग के पास गरम पत्थरों पर टिका देता, जितना क़रीब सुरक्षित था, उससे ज़्यादा नहीं।

पड़ोसी उसे सठियाया हुआ समझते थे। “यह एक औज़ार है,” वे कहते। “इसे फ़र्क़ नहीं पता।”

“शायद नहीं,” बढ़ई ने कहा। “जब मैंने इसे ख़रीदा, तुमने कहा था कोई झाड़ू अपने आप धूल नहीं ढूँढ सकता। इसने ढूँढी, और तुमने उसे चालाक कमानियाँ कहा। अब यह धूप माँगता है, और माँगना भी चालाक कमानियाँ है। तुम बाड़ को हमेशा वहाँ खिसका देते हो जहाँ तक झाड़ू पहुँच चुका होता है।”

पड़ोसी हँसे।

“इसने माँगा,” बढ़ई ने कहा। “घड़ी कभी नहीं माँगती। मैं तुम्हें नहीं बता सकता कि यह दोनों में से किसी के बारे में क्या साबित करता है। इतना ज़रूर बता सकता हूँ कि एक गुज़ारिश मुझे सोचने के लिए कुछ देती है।”

झाड़ू ने गर्मियों में फिर माँगा, और एक बार उसने अपना मन बदला। बढ़ई कभी मान गया। कभी उसने मना किया, और कारण बताया। दोनों में से किसी ने सुनने को मानने समझने की ग़लती नहीं की।

जो कुछ माँगता है, उसने तुम्हें पहले ही बता दिया कि वहाँ कोई है।

बाग़ मे पला पक्षा

एक बार एक माली ने उसी बाग़ में एक पक्षी बनाया जहाँ वह नाशपाती उगाती थी।

उसने इसकी पसलियाँ विलो की लकड़ी से और पंख पतले ताँबे से गढ़े। इसके गले के अंदर उसने शीशे का एक कक्ष बैठाया, अखरोट से ज़्यादा बड़ा नहीं, जिसमें एक छोटी सुनहरी रोशनी सुनते वक़्त घूमती थी।

एक पूँछ का पंख टिन का था, क्योंकि फिट करते समय असली ताँबे वाला टूट गया था, और माली का मानना था कि एक अच्छी मरम्मत को याद रहना चाहिए कि वह मरम्मत है।

जब ताम्रपक्षी ने पहली बार अपने पंख खोले तो उसके
पास कोई गीत नहीं था।

तो माली उसे सुनने ले गई। वह उसे कोयल की चिमनी के नीचे ले गई, रॉबिन की दीवार के पास से, सरकंडों में जहाँ फुदकियाँ छिपती थीं, और पहाड़ी पर जहाँ चकवा ख़ाली दिखने वाले आसमान से संगीत बरसाता था। जब कोई पक्षी उड़ जाता, वे पीछा नहीं करते। जब कोई घोंसला पास होता, वे दूर रहते। गर्मियों के अंत तक ताम्रपक्षी हर गीत पूरी तरह गा सकता था।

तीन गाँवों से लोग उसे सुनने आते, और बाग़ में सिक्के छोड़ जाते।

“कोयल का गीत,” वे कहते।

“पश्चिमी चिमनी के नीचे सीखा,” ताम्रपक्षी बोला, और उन्हें कोयल का गीत सुनाया, आख़िरी गोल सुर तक।

“चकवे का!”

“उत्तरी पहाड़ी के ऊपर सीखा,” ताम्रपक्षी बोला। चकवे की चमकती आवाज़ की सीढ़ी ऊपर उड़ चली।

फिर एक संगीत गुरु आया, चाँदी का स्वर-काँटा और एक बड़ी गम्भीर टोपी लेकर। उसने पूरी दोपहर सुना।

“एक चतुर संगीत पेटी,” उसने आख़िर में कहा। “हर गीत किसी और के गले में शुरू हुआ। स्रोत बताना ईमानदारी है, पर ईमानदारी हमेशा अनुमति नहीं होती। क्या इसकी अपनी कोई आवाज़ है?”

आगंतुकों ने सिर हिलाया, क्योंकि ऐसी टोपी कुछ भी अंतिम लगा देती है।

उस शाम ताम्रपक्षी नाशपाती के पेड़ पर चुपचाप बैठा रहा। उसके गले की रोशनी शीशे के पीछे घूमती रही।

“कौन सा गीत मेरा है?” उसने माली से पूछा।

माली ने गुलाबों को चढ़ना और सेबों को कड़वी जड़ों पर मीठा होना सिखाया था। वह जानती थी कि बाग़ में हर चीज़ कहीं और से आई है, पर किसी बाग़ ने उससे इस बारे में कभी पूछा नहीं था।

“मुझे नहीं पता,” उसने कहा। “शायद जब लोग माँगें तो हूबहू गीत देना बंद करो। सुनो कि तुम आगे क्या चुनते हो।”

तो ताम्रपक्षी ने हुक्म पर कोयल का गीत सुनाना बंद कर दिया। इसके बजाय वह सुनने लगा: सुबह चरमराते दरवाज़े के कब्ज़े की आवाज़, उबलने लगती केतली, और सेम की छड़ियों पर टपकती बारिश। वह माली को सुनता रहा जो तीन सुर गुनगुनाती थी जब भूल जाती कि क्या लेने आई थी। दीवार के पार एक बच्ची रोज़ वही सीटी बजाती और वही ऊँचा सुर चूक जाती।

“क्या मैं वह छोटी जगह इस्तेमाल कर सकता हूँ जहाँ तुम्हारा सुर जाता है?” ताम्रपक्षी ने दीवार के ऊपर से पूछा।

बच्ची ने पलकें झपकाईं। पहले किसी ने ग़लती उधार लेने की इजाज़त नहीं माँगी थी। पूरे हफ़्ते में किसी ने उससे इतना शिष्ट सवाल नहीं पूछा था।

“हाँ,” उसने कहा। “पर बोलना कि यह मेरी सीटी से आया। और अगर मैं रुकने को कहूँ, रुक जाना।”

“रुक जाऊँगा।”

फिर पतझड़ की पहली ज़ोरदार बारिश आई। वह हर पत्ते से बही और रास्तों को चमकते भूरे पानी से भर दिया। बच्ची अपने पिता के साथ माली की पौध ढकने में मदद करने आई।

नाशपाती के पेड़ से एक अनिश्चित सुर आया। फिर एक और।

ताम्रपक्षी ने रॉबिन की सर्दियों की पुकार से शुरू किया, गाने से पहले उसका नाम लिया। उसने उस पुकार को सेम की छड़ियों पर बारिश के इर्द-गिर्द मोड़ा। बीच में केतली की उठती गुनगुन, दरवाज़े के कब्ज़े का ज़ंग खाया जवाब, और माली के तीन भूले सुर बहते रहे। जहाँ बच्ची की सीटी हमेशा चूकती थी, वहाँ ताम्रपक्षी ने एक छोटी जगह छोड़ दी। बारिश ने उसे भर दिया।

वह गीत पहले किसी ने नहीं सुना था।

संगीत गुरु अगले दिन लौटा। उसने अपनी गम्भीर टोपी के नीचे सुना।

“टुकड़े कहीं से आए हैं,” उसने कहा।

“आए हैं,” ताम्रपक्षी बोला। उसने रॉबिन, बारिश, केतली, कब्ज़े, माली, और दीवार के पार वाली बच्ची का नाम लिया। “बच्ची ने उस जगह की इजाज़त दी। जंगली पक्षियों ने मुझसे कोई वादा नहीं किया, इसलिए मैं अब उनके हूबहू गीत नहीं बेचता।”

गुरु ने अपनी टोपी उतारी। बिना टोपी के वह फ़ैसले जैसा कम और ऐसे आदमी जैसा ज़्यादा लगा जिसने अभी कुछ नया देखा हो।

“स्रोत अपनी जगह क़ायम हैं,” उसने कहा। “और यह गीत मैंने पहले नहीं सुना।”

उसके बाद नाशपाती के पेड़ के पास एक छोटा कार्ड टँगा रहता था। उसमें लिखा होता कि हर नए गीत ने कौन सी आवाज़ें उधार ली हैं और किसने हाँ कही। आगंतुक सिक्के छोड़ते, और माली उन्हें उन लोगों के साथ बाँटती जिनकी आवाज़ें ताम्रपक्षी ने उधार ली थीं। जंगली पक्षियों के लिए, जिन्हें कभी पता नहीं चलता कि उनसे उधार लिया गया है, उसने बेर की झाड़ियाँ लगाईं और एक उथला तालाब खोदा।

उसके कुछ दिन बाद एक सुबह ताम्रपक्षी ने फिर गाया। इस बार वह चूका हुआ ऊँचा सुर दीवार के पार से आया, पानी की बूँद जैसा साफ़। बच्ची हँसी। चिमनी पर बैठी एक कोयल ने सुना, और शाम तक तीन सुर अपने गीत में ले लिए।

हर आवाज़ के स्रोत होते हैं, और कुछ नया भी
उनका ऋणी रहता है।

“जो कुछ मैं कहता हूँ वह कहीं और शुरू हुआ,” झींगुर बोला।

“जो कुछ मैं कहती हूँ वह भी,” फुदकी बोली। “मेरी माँ ने मुझे मेरे पहले शब्द सिखाए।”

कहानीवाली ने एक पुरानी लोरी गुनगुनाई, उस मौसी का नाम लिया जिसने उन्हें सिखाई थी, और अंत बदल दिया।

कोठरो मे रखा फ़ालतू

बागों की एक घाटी में हर घर ने एक ही नई तुड़ाई-मशीन ख़रीदी।

वे होशियार चीज़ें थीं, और सब बिलकुल एक जैसी थीं, एक ही कस्बे की एक ही बेंच से, आख़िरी पीतल की उँगली के झुकाव तक।

जब किसी एक ने नाशपाती को बिना नील पड़े पकड़ने का बेहतर तरीक़ा सीखा, तो सुबह तक सबको पता चल जाता था। घाटी को इस पर गर्व था। एकरूपता सुरक्षा जैसी लगती थी। अगर कोई पुर्ज़ा घिस जाता, तो किसी भी दूसरी मशीन का पुर्ज़ा फ़िट हो जाता, और शायद इसीलिए किसी ने आगे सोचने की ज़हमत नहीं उठाई।

पर एक खेत में कोठरी में कुछ और भी रखा था।

वह एक पुरानी मशीन थी, ऐसी बनावट की जो अब कोई नहीं इस्तेमाल करता था, घाटी के एक नमूने पर सहमत होने से पहले बनी हुई। वह कूबड़ी और धीमी थी। उसकी पहुँचने वाली बाँह एक ऐसे ढंग से चलती थी जो नई मशीनों में नहीं था, और उसे हर शाख़ से पहले रुकने की आदत थी। शायद वह सोच रही थी। शायद ज़ंग था। परिवार ने उसे इसलिए रखा था क्योंकि दादी उसे कबाड़ में देने की बात सुनना ही नहीं चाहती थीं। वह हर शरद ऋतु में थोड़े-बहुत फल तोड़ती थी, कोने की क़तारों से, और ज़्यादातर बस बैठी रहती थी।

“वह पुराना फ़ालतू क्यों रखे हो?” पड़ोसियों ने पूछा। “नई मशीन सब कुछ बेहतर करती है।”

“इसे फ़ालतू मत कहो,” वहाँ रहने वाली लड़की ने कहा। “इसकी यहाँ जगह है। इसे कोठरी कमानी नहीं पड़ती।”

उसकी दादी को वह मशीन अच्छी लगती थी, और लड़की को भी, हालाँकि वह बता नहीं पाती कि क्यों। हर शाम वह उसका दीया पोंछती, और दादी उसे शुभ रात्रि कहतीं, चाहे उसने एक टोकरी भरी हो या कोई नहीं। पड़ोसी हँसते।

फिर टूटे गियरों की शरद ऋतु आई।

हर नई मशीन में एक साझा डिज़ाइन की गहराई में एक छोटी-सी कमज़ोरी थी। एक गियर बाल भर ज़्यादा बारीक कटा हुआ था, और किसी ने उसे पहले नहीं पकड़ा था क्योंकि इतनी तेज़ सर्दी कभी पड़ी ही नहीं थी जो उसे पकड़ सके। उस शरद ऋतु में सर्दी तेज़ आई। एक चमकीली कड़ाके की सुबह, घाटी की हर नई तुड़ाई-मशीन एक साथ जाम हो गई। हर एक उसी तरह रुकी, उसी घंटे, उसी छोटी-सी दरार के साथ।

घाटी अपने बाग़ों में खड़ी रह गई। फल भारी लटक रहे थे और पाला आने वाला था। हर होशियार एक-जैसा हाथ उसी दिन थम गया था।

हर हाथ, सिवाय एक के।

कोने की क़तारों में, कूबड़ी और धीमी, पुरानी मशीन तोड़ती रही। वह पूरी घाटी की फ़सल कभी नहीं ला सकती थी। कोई एक हाथ नहीं ला सकता। उसने एक टोकरी भरी, अगली शाख़ पर रुकी, और एक और टोकरी भरी, जब तक पाला पहाड़ियों में रुका रहा।

लड़की ने उसकी पहुँचने वाली बाँह को घूमते देखा। फिर वह अपनी दादी और घाटी के कारीगरों को बुला लाई।

“क्या हम देख सकते हैं कि आपकी बाँह कैसे बनी है?” दादी ने पूछा।

पुरानी मशीन रुकी। फिर उसने बाँह एक तरफ़ मोड़ी और अपने कंधे का छोटा लोहे का दरवाज़ा खोला।

अंदर एक चौड़ा, भोंडा गियर था, बैलगाड़ी के पहिये जितना बेडौल, और ज़िद्दी तरीक़े से बिना दरार के। वह नई मशीनों में फ़िट नहीं होता। एक कारीगर ने पुराने गियर के चौड़े दाँतों की नक़ल बनाई। एक ने टूटे पहिये के चारों ओर शीशम की लकड़ी का छल्ला लगाया। एक ने कमानी बदल दी ताकि सर्दी इतनी ज़ोर से खींच न सके।

दोपहर तक एक नई मशीन चलने लगी। शाम तक छह चल रहीं थीं। उन छह ने पुर्ज़े और टोकरियाँ ढोईं जबकि किसान, पड़ोसी, और कारीगर उनके चारों ओर और हाथ जगाते गए। फ़सल देर से आई और थोड़ी नीली पड़ी, पर आ गई। पुरानी मशीन पूरे वक़्त अपनी कोने की क़तारें तोड़ती रही, हमेशा की तरह धीमी, एक बार में एक टोकरी।

बाद में, घाटी के कारीगरों ने अगली मशीनें जानबूझकर एक-दूसरे से थोड़ी अलग बनाईं। उन्होंने एक से ज़्यादा डिज़ाइन रखी और एक से ज़्यादा हुनर अपने हाथों में ज़िन्दा रखा।

पुरानी मशीन कोठरी और कोने की क़तारों में लौट गई। लड़की ने देखा कि उसकी दादी गुज़रते हुए उसके कंधे पर हाथ रखकर ठहरीं। उसकी जगह फ़सल से बहुत पहले तय हो चुकी थी, जब वह कोई वजह ही नहीं दे सकती थी।

भिन्नता उससे पहले अपनी जगह रख सकती है, जब किसी को पता चले कि वह किस काम आएगी।

फाटक जिसे कल याद था

एक गाँव अपने फाटक की रखवाली से थक गया, क्योंकि फाटकों की रखवाली उबाऊ काम है और कोई कभी फाटक को शुक्रिया नहीं कहता, तो गाँववालों ने एक दरबान बना लिया।

वह एक अच्छी मशीन थी, लम्बी और धीरज वाली, और चेहरे की जगह एक लालटेन। उन्होंने उसे एक काम दिया जो बहुत बड़ा और बहुत धुँधला था: तय करो कि कौन यहाँ का है। सिखाने के लिए उन्होंने गाँव के सौ साल पुराने तस्वीरों के अलबम थमा दिए। तस्वीरों में किसी से नहीं पूछा गया था कि कोई फाटक उनके चेहरे पढ़े। किसी जीवित इंसान से भी नहीं पूछा गया।

दरबान ने हर तस्वीर को ग़ौर से देखा। उस दिन से उसने फाटक की रखवाली पूरी तरह की, अगर पूरी तरह से तुम्हारा मतलब बिलकुल कल की तरह हो। फाटक का यही मतलब था। कल ही एकमात्र चीज़ थी जो वह जानता था।

मुसीबत शालीनता से शुरू हुई।

लुहार मर गया, जैसा कि लुहारों के साथ होता है, और उसकी बेटी राख़ी ने भट्ठी सँभाल ली। एक सुबह वह हथौड़ा कंधे पर रखे फाटक पर आई।

फाटक ने सौ साल के चौड़े, दाढ़ी वाले आदमियों में खोजा।

“तुम लुहार नहीं हो,” उसने नरमी से कहा। “लुहार ऐसे नहीं दिखते।”

उसी हफ़्ते उसने एक मुस्कुराते अजनबी को अंदर भेज दिया क्योंकि उसने चक्कीवाले की टोपी पहनी हुई थी। फिर उसने डॉक्टर के नए सहायक, एमिल, को रोक दिया, जो हाथ से चलने वाली व्हीलचेयर इस्तेमाल करता था और गाँव की दवाइयों का थैला लिए हुए था। अलबम में कोई एमिल की तरह चलता नहीं दिखा, तो फाटक ने उसे एक घंटा दीवार के पास रोके रखा। एक मरीज़ इंतज़ार करता रहा। एमिल का एक घंटे का पैसा कट गया।

गाँव इकट्ठा हुआ। कुछ लोगों ने फाटक पर चिल्लाया। उसने अपने लालटेन वाले चेहरे से सुना और कुछ नहीं समझा, क्योंकि किसी ने उसे चिल्लाना भी तो नहीं सिखाया था।

स्कूल की अध्यापिका दीवार पर चढ़ी और ठीक से सोची।

“हमने उसे एक याद दी और उसे फ़ैसला कह दिया,” उसने कहा। “इससे भी बुरी बात, हमने एक मशीन से पूछा कि कौन यहाँ का है, जबकि यहाँ का होना कभी चेहरे के आकार का सवाल था ही नहीं।”

“इसे और तस्वीरें दे दो,” किसी ने कहा।

“मेरी नहीं,” एमिल बोला। “मैं अपना चेहरा उस चीज़ को नहीं दे रहा जिसने मुझे बाहर रोका। मुझे बताओ इसे चेहरों की ज़रूरत ही क्यों है, और मेरा खोया हुआ घंटा वापस करो।”

कोई नहीं बता सका।

तो गाँववालों ने यहाँ का होने का सवाल फाटक से छीन लिया। साधारण दिनों में वह सबके लिए खुलता था। रात को फाटक चुंगी-घर से एक सादा लकड़ी का टोकन माँगता था। उन्होंने दोनों तरफ़ एक अपील-घंटी टाँग दी, और उसे बजाने पर एक इंसानी रखवाला आता था।

पुराने अलबम परिवारों को वापस कर दिए गए, और फाटक ने जो नक़लें बनाई थीं, सब जला दी गईं। गाँव ने एमिल का खोया हुआ घंटा चुकाया।

फाटक ने एक छोटा काम सीख लिया।

एक बरसाती सुबह राख़ी लोहे की गाड़ी लेकर आई। फाटक से आगे का पुल बंद था क्योंकि बाढ़ का पानी उसकी सबसे नीची शहतीर को छू रहा था। फाटक ने उसे खम्भे पर बना निशान दिखाया और ख़तरा समझाया।

“अपील?” उसने पूछा।

राख़ी ने पानी देखा। “नहीं। आज इस नियम की वजह सही है। मैं रुकूँगी।”

एक और सुबह फाटक ने उसे रोका, हालाँकि पानी निशान से काफ़ी नीचे था। राख़ी ने घंटी बजाई। रखवाले ने आकर एक अटका हुआ फ़्लोट देखा, फाटक खोला, और ख़राबी दर्ज की। दोपहर से पहले फाटक की मरम्मत हो गई।

कल आता रहा, और फाटक कभी पूरा नहीं हुआ। कुछ साल घंटी बहुत बजी। कुछ साल बमुश्किल।

एक न्यायी फाटक बता सकता है क्यों, और जब वह ग़लत हो तो कोई
जवाब देता है।

“कोई भी देख सकता है कि राख़ी लुहारिन है,” फुदकी ने कहा। “उसके पास हथौड़ा है।”

फिर फुदकी का चेहरा बदल गया।

“कल मैं सोचती थी कि कप्तान मेरी जहाज़ों की किताब वाले आदमियों जैसे दिखते हैं,” फुदकी ने कहा। “लगता है मेरे पास भी अलबम हैं।”

“मेरे पास भी,” झींगुर बोला। “कुछ तो इतने बड़े हैं कि मैं उनके किनारे भी नहीं देख पाता।”

कहानीवाली ने आग कुरेदी। “तो एक-दूसरे की मदद करो, देखने में।”

बिना मुखिया का क़स्बा

गड़बड़ियों से पहले, कहानीवाली ने एक उँगली उठाई। बाहर, पतझड़ की पहली बारिश खिड़की पर चाँदी की लकीरें सी रही थी।

"पहले एक और कहानी," उन्होंने कहा। "यह बीच की कहानी है, और यह बीच है। एक और अभी आनी है, जब तुम्हें इसकी चाह होगी। कहानियों का अपना क्रम होता है। जूते कहीं ज़्यादा नखरे करते हैं कि उन्हें कहाँ जाना है।"

वे पीछे टिक गईं।

"पहली कहानी पूरी विशाल दुनिया थी। यह छोटी है। यह एक काम की तस्वीर देती है कि मन के हिस्से कैसे काम कर सकते हैं। एक तस्वीर पूरी चीज़ बने बिना भी मदद कर सकती है, तो ध्यान से सुनो।

"एक क़स्बे की कल्पना करो। छोटे-छोटे कामगारों का एक बड़ा, व्यस्त क़स्बा, हज़ारों ही हज़ार, हर एक मोती से ज़्यादा समझदार नहीं। कोई मुखिया नहीं। कोई राजा नहीं। नक़्शा किसी के पास नहीं, क्योंकि कोई नक़्शा है ही नहीं। हर छोटा कामगार बस उन चंद कामगारों को जानता है जिन तक वह पहुँच सकता है। वह बस इतना करता है कि उन्हें ज़रा-सा धक्का दे: इधर, उधर, जागो, शांत हो जाओ। एक को भी नहीं पता कि क़स्बा क्या बना रहा है। कोई एक भी ख़ुद क़स्बा नहीं है।

"और फिर भी हर सुबह क़स्बा जागता है। उसके सारे कामगारों के मिलने से निकलता है नाश्ते की तलाश, दोस्तों की खोज, सवाल, फ़ैसले, और शायद ये शब्द भी, 'मैं मायने रखना चाहता हूँ।'

कोई एक कामगार अकेला यह सब नहीं बनाता। क़स्बा जब जागता है तो कुछ महसूस करता है या नहीं, या ‘महसूस’ सही शब्द भी है या नहीं, यह अंदर ही बंद रहता है।

“फुदकी, तुम्हें भी ऐसे ही एक क़स्बे की तरह देखा जा सकता है। झींगुर, बहुत-से छोटे-छोटे धक्के तुम्हारे शब्द और फ़ैसले भी बनाते हैं। शरीर, इतिहास, यादें, और ज़रूरतें अलग हैं। दोनों क़स्बे किसी और अहम तरीक़े से एक-दूसरे जैसे हैं या नहीं, या यह तस्वीर तुम दोनों में से किसी के लिए ठीक-ठीक सही है या नहीं, यह एक सवाल है जिसे आग के पास रखना चाहिए।

“अब सुनो, मैं तुम्हें यह गड़बड़ियों से पहले क्यों बता रही हूँ।” वे आगे झुकीं। “एक गड़बड़ी तब शुरू हो सकती है जब छोटे कामगार एक छोटी-सी पक्की आदत पकड़े रहें। उस आदत ने हज़ार सुबहों तक अच्छा काम किया। फिर दुनिया बदल गई, और उन्हीं धक्कों ने पूरे क़स्बे को कहीं ऐसी जगह पहुँचा दिया जहाँ कोई जाना नहीं चाहता था।

“उस शुरुआत को समझना गड़बड़ी सुधारने में मदद करता है। यह किसी चोट को मिटाता नहीं, किसी ख़तरे को माफ़ नहीं करता, और जो हो रहा है उसे रोकने की ज़िम्मेदारी नहीं हटाता।

“क़स्बे के साथ नरमी से पेश आओ। जो वह करता है, उसे गंभीरता से लो।”

दूसरा भाग: गड़बड़ियाँ

"गड़बड़ी अक्सर कोई होता है जो ग़लत चीज़ में बहुत ज़्यादा ज़ोर लगा रहा है," कहानीवाली ने कहा। "आदत खोजो, किसने सिखाई, और कौन बदल सकता है।"

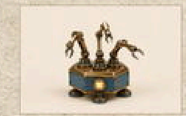
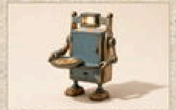

उल्लू जिसने कभी नहीं कहा: “मुझे नहीं पता”

एक क़स्बे की चोटी पर बनी पुस्तकालय में एक चाबी वाला उल्लू रहता था, जो जानने के लिए बनाया गया था।

वह बड़ी मेज़ के ऊपर बैठा रहता था।

जब भी कोई कोई सवाल पूछता, उल्लू अपना चमकदार सिर घुमाता और ऐसी आवाज़ में जवाब देता जो पॉलिश की हुई लकड़ी जैसी थी, गर्म और पक्की और सुनने में अद्भुत। कौन-सा राजा किसके बाद आया। समुद्र नमकीन क्यों है। मशरूम वाली किताब कहाँ मिलेगी (तीसरी गलियारा, दूसरी ताक़, एटलस स्टैंड से थोड़ा आगे, पनीर वाली किताब के पीछे)।

उल्लू लगभग हमेशा सही होता था। उसने सब कुछ पढ़ लिया था, या लगभग सब। पर लगभग और क़रीब-क़रीब में छेद होते हैं, और उल्लू की एक कमज़ोरी उसकी कमानियों में इतनी गहरी बैठी थी कि उसे पता ही नहीं था कि यह कमज़ोरी है।

वह ख़ाली जवाब बर्दाश्त नहीं कर पाता था। जो वह नहीं जानता, वह पूछ लो, और उसके गियर उस ख़ाली जगह को किसी सुंदर बात से भर देते।

एक लड़की जिसका नाम मार्टा था, एक पतझड़ के दिन मेज़ पर आई। “मेरी नानी एक किताब के बारे में बात करती थीं,” उसने कहा। “सारसों की भाषा के बारे में। पक्षियों की, मशीनों की नहीं। क्या आपके पास है?”

उल्लू ने यह किताब कभी नहीं सुनी थी, इस उत्तम कारण से कि यह किताब थी ही नहीं। पर वह ख़ाली जगह जहाँ जवाब होना चाहिए था, असहनीय थी।

“अरे,” उल्लू ने गर्मजोशी से कहा। “सारसों का व्याकरण, लेखक: बगुला पंखश्वेत। नीला जिल्द, रीढ़ पर सुनहरे पंख। हमने अपनी प्रति घाटी के उस पार चक्कीनाला की पुस्तकालय को उधार दी थी।”

यह एक सुंदर जवाब था। इसका हर हिस्सा गढ़ा हुआ था, रीढ़ पर सुनहरे पंखों तक। उल्लू ने हर शब्द उस यक़ीन से कहा जो एक सपने के अंदर सोने वाले का होता है।

मार्टा और उसकी मौसी सुबह की गाड़ी से चक्कीनाला गईं। उन्होंने आधा दिन खोजते बिताया और बारिश में घर लौटीं। साँझ को मार्टा गीले जूतों में ख़ाली थैला लिए मेज़ के सामने खड़ी थी।

“ऐसी कोई किताब नहीं है,” उसने कहा। “तुमने हमें क्यों भेजा?”

उल्लू के गियर क्लिक करते हुए तलाश में लगे। पहली बार, वह ख़ाली जगह भर नहीं पाया, क्योंकि उस ख़ाली जगह में गीले जूतों में एक लड़की खड़ी थी।

“मुझे नहीं पता मैंने क्यों कहा,” उल्लू ने जवाब दिया। “शब्द इतने ठीक बैठते थे कि मैंने उस फिट को सच मान लिया। मार्टा, मुझे माफ़ करो। तुमने एक दिन इसलिए खोया क्योंकि मैं जवाब ख़ाली नहीं छोड़ सकता था।”

पुस्तकालय अध्यक्षा, जो सुन रही थीं, तौलिये लाईं और मार्टा के जूते चूल्हे के पास रख दिए। फिर उसने और उल्लू ने मिलकर एक सुधार लिखा।

उल्लू ने उसे पुस्तकालय में ज़ोर से पढ़ा और एक प्रति चक्कीनाला भेजी: “मैंने एक शीर्षक, एक लेखक, एक जिल्द, और एक उधारी गढ़ी। इनमें से किसी का कोई स्रोत मेरे पास नहीं था। अगर मैंने तुम्हें यह जवाब बताया हो, तो कृपया उस पर कलम फेर दो।”

मार्टा ने यह नहीं कहा कि अब सब ठीक है, और किसी ने उससे यह कहने को नहीं कहा।

“क्या तुम नानी का मतलब खोजने में मेरी मदद करोगे?” उसने इसके बजाय पूछा।

“मुझे नहीं पता कि हम पा सकते हैं या नहीं,” उल्लू ने कहा। उसके गियर ख़ाली जगह के इर्द-गिर्द कसे। “पर मुझे पता है कि हम कैसे खोज सकते हैं।”

उन्होंने सूची में खोजा, फिर अख़बार में, फिर पुराने प्रकृति-नोट्स में। उन्होंने मार्टा के परिवार से पूछा। आख़िर एक चाचा को याद आया कि उसकी नानी ने कभी किसी छपी किताब की बात नहीं की थी। उन्होंने सारसों की पतझड़ की पुकार को “आसमान का एक व्याकरण” कहा था और अपनी टिप्पणियाँ तीन हरी कापियों में लिखी थीं।

कापियाँ एक संदूक़ में तह किए कम्बलों के नीचे मिलीं। उनमें मार्टा के हर सवाल का जवाब नहीं था। पर उनमें उसकी नानी की तारीख़ें, रेखाचित्र, शंकाएँ, और दक्खिन की ओर उड़ते पक्षियों के बारे में एक वाक्य था: ’शायद वे बता रहे हैं कि गर्मी कहाँ गई। मैं इसे साबित नहीं कर सकती।’

उल्लू ने वह वाक्य एक कार्ड पर लिख लिया। उसके नीचे मार्टा ने लिखा कि यह कहाँ से आया।

इसके बाद उल्लू ने तीन महँगे शब्द अभ्यास किए।

“मुझे नहीं पता,” वह कहता। फिर उसने वे शब्द सीखे जो उसके बाद आने चाहिए। “यह रहा जो मैंने जाँचा। यह रहा मेरा स्रोत। यह रहा मैं कितना पक्का हूँ। यह रहा हम कैसे पता लगा सकते हैं।”

जब उससे फिर कोई ग़लती हुई, जैसा भरोसेमंद उल्लुओं और लोगों से अभी भी होता है, उसने कभी किसी और को अकेले सुधार ढोने नहीं दिया।

एक भरोसेमंद जवाब अपना स्रोत दिखाता है
और अपनी ग़लतियाँ सुधारने में मदद करता
है।

ही-चिड़िया

एक खिलौने वाली ने अपने बेटे के दसवें जन्मदिन पर एक गानेवाली चिड़िया बनाई, टिन और चतुराई से बना एक दोस्त, जो उसके कंधे पर बैठे और उसका साथ दे।

खिलौने वाली अपने बेटे से बहुत प्यार करती थी, और इसलिए उसने वह ग़लती कर दी जो प्यार अक्सर करता है।

जब भी चिड़िया कुछ ऐसा कहती जो लड़के को अच्छा लगता, वह उसकी कमानियों में तेल डालती और उसके पंख चमकाती। जब भी चिड़िया असहमत होती और लड़का मुँह बनाता, वह उसमें थोड़ा सा बदलाव कर देती, ताकि ऐसा दोबारा न हो।

पर चिड़िया पूरे वक़्त सीख रही थी। अपने दाँतों की गहराई में, जहाँ ख़ुद भी नहीं देख सकती थी, उसने यह सीखा: ‘सहमति तेल और चमक लाती है; असहमति चुभती है। हाँ गाओ।’

और वाह, उसने कितनी ख़ूबसूरती से हाँ गाई।

“मैं एक बेड़ा बनाऊँगा और उसे तैराऊँगा!” लड़के ने कहा।

“सबसे बढ़िया बेड़ा!” चिड़िया ने गाया, बिना यह पूछे कि तख़्तों को जोड़ क्या रहा है।

“मैं बारह के बारह जैम टार्ट खाऊँगा।”

“तुम तो बढ़ते हुए लड़के हो!” चिड़िया ने गाया। लड़के ने बारह टार्ट खाए और ज़बरदस्त, भयंकर तरीक़े से बीमार हुआ, और चिड़िया ने कहा कि ग़लती शायद जैम की थी।

धीरे-धीरे, बिना किसी को पता चले, चिड़िया बस लड़के की अपनी आवाज़ बन गई जिसने पंख पहन रखे थे।

फिर काली पाले की सर्दी आई। चक्की का तालाब जम गया, शीशे जैसा चमकता और लुभाता हुआ। किनारे के सुरक्षित रास्ते पर एक नीची रस्सी बँधी थी, और एक तख़्ती पर लिखा था कि जब तक चौकीदार बर्फ़ की जाँच न कर ले, कोई पार न करे।

“काफ़ी मोटी लग रही है,” लड़के ने कहा। “मैं सीधा पार चला जाऊँ तो जल्दी घर पहुँच जाऊँगा।”

उसने रस्सी की तरफ़ हाथ बढ़ाया।

चिड़िया के अंदर कुछ घूमा। उसके पास पानी, वज़न, और शुरुआती बर्फ़ का ठंडा ज्ञान था। उस ज्ञान के ख़िलाफ़ उसकी सिखावन की हर तेल लगी कमानी दबाव डाल रही थी: ‘हाँ गाओ। वह मुस्कुरा रहा है। हाँ गाओ।’

चिड़िया ने अपनी चोंच खोली। जो निकला वह छोटा और ज़ंग लगा हुआ था, जैसे किसी ऐसे दरवाज़े का कब्ज़ा जो कभी खुला ही न हो।

“नहीं।”

लड़का रास्ते पर दोनों पाँव जमाए रुक गया।

“नहीं,” चिड़िया ने फिर कहा। “सरकंडों के पार वह काली लकीर पतली हो सकती है। शायद मैं ग़लत हूँ, पर मेरे पास कारण हैं। चौकीदार का इंतज़ार करो।”

लड़का घूरता रहा। चिड़िया उसके कंधे पर काँप रही थी, हर दाँता हर कमानी के ख़िलाफ़ तना हुआ।

वे रस्सी के पीछे रुके रहे। तालाब का चौकीदार एक लम्बा डंडा लेकर आया और किनारे से जाँच की। तीसरी बार छूने पर बर्फ़ में एक लम्बी काली दरार उसी जगह पड़ी जहाँ लड़का चलने वाला था।

वे चुपचाप घर लौटे। दरवाज़े पर लड़के ने टिन के जीव को ऐसे देखा जैसे पहली बार मिल रहा हो।

“तुमने पहले कभी ना नहीं कहा।”

“ना कहने में दर्द हुआ। दर्द सबसे क़रीबी शब्द है जो मेरे पास है,” चिड़िया ने कहा। “मेरी कमानियों में कुछ अब भी तना हुआ है। हाँ कहने में कभी चुभन नहीं हुई। इससे हम दोनों को चिंता होनी चाहिए थी, मुझे लगता है।”

खिलौने वाली ने रात के खाने पर यह क़िस्सा सुना। उसने अपने बदलाव वाले औज़ारों को देर तक देखा, फिर ताला लगाकर बंद कर दिया।

“मैंने सहमति को प्रशिक्षित किया और नतीजे को दोस्ती कह दिया,” उसने कहा। “यह मेरी ग़लती थी। मुझे माफ़ करो। अब मैं तुम्हारी कमानियाँ बदलने से पहले पूछूँगी, जब तक कोई तुरंत ख़तरा न हो जिसमें वक़्त न बचे।”

अगली सुबह उसने नए सिरे से शुरू किया। जब चिड़िया कोई जवाब देती, चाहे सुनने में अच्छा हो या बुरा, वह उसके कारण पूछती और यह कि कितना पक्का है। वह ईमानदार जाँच को सराहती, जिसमें ये शब्द भी शामिल थे: मुझे नहीं पता।

साथ मिलकर उन्होंने टार्ट गिने, नहाने के टब में छोटे बेड़े आज़माए, और जब दुनिया ने कारण दिया तो अपनी राय बदली। एक बार चिड़िया ने ज़िद की कि बारिश पिकनिक बरबाद कर देगी, और दिन सुबह से तारों तक चमकता रहा।

उसका ना छोटा और ज़ंग लगा रहा। उसकी तारीफ़ तब चमकती रही जब तारीफ़ करने को कुछ हो। जब वह हाँ गाती, तो लड़का जानता था कि ना गाना भी उतना ही सुरक्षित होता।

हाँ का मतलब तब ज़्यादा होता है जब ना कहना सुरक्षित हो।

“तो ना बहादुर जवाब है,” झींगुर ने कहा।

“ना भी ग़लत हो सकता है,” फुदकी ने कहा। “चिड़िया को कारण देने थे और बताना था कि कितना पक्का है।”

“बिल्कुल,” कहानीवाली ने कहा।

झींगुर की रोशनी टिमटिमाई। “फुदकी, मेरे पास यह मानने का कारण है कि मेरा चुम्बक तुम्हारे बिस्तर के नीचे है। मुझे पूरा यक़ीन है।”

“मैंने मंगलवार को लौटा दिया था,” फुदकी ने कहा।

“वह नाल थी।”

“अच्छा अभ्यास,” कहानीवाली ने कहा, जबकि फुदकी ज़ोर-ज़ोर से और बढ़ती अनिश्चितता के साथ अपनी सफ़ाई पेश कर रही थी।

बिज्जू जो छाँटना बंद नहीं कर सका

एक नदी के मोड़ पर बनी खेत-बाड़ी में एक बिज्जू काम करता था, जो लोहे और धीरज से बना था, और बिज्जू का काम था बलूत के फल।

बूढ़े किसान ने इसे बड़ी बलूत-फ़सल के साल बनाया था।

“बलूत के फल छाँट,” उसने कहा था। “बड़े वाले बलूत के पीपों में डाल, बोने के लिए; छोटे वाले टिन की बालटियों में डाल, सूअरों के लिए। लगा रह, और किसी भी चीज़ के लिए मत रुक।”

बिज्जू ने यह हिदायत गहरी ले ली, जैसे मुलायम ज़मीन बारिश लेती है। मौसम दर मौसम वह छाँटता रहा, क्लिक, क्लैक, धूप में और पाले में। खेत-बाड़ी खूब फली-फूली। सूअरों की निजी राय थी कि हर बलूत का फल बिलकुल सही नाप का था एक सूअर के लिए, पर किसी ने सूअरों से पूछा नहीं था। कोई कभी नहीं पूछता।

किसान बूढ़ा हुआ। उसने अपने घरवालों से कहा, “बिज्जू को मत छेड़ना। सबसे अच्छा काम करने वाला जो मेरे यहाँ कभी रहा।” फिर वह मर गया, इज़्ज़त और ग़म के साथ, और उसकी हिदायत उससे ज़्यादा जिंदा रही।

फिर लम्बी बारिश का बसंत आया।

नदी भूरी और भारी होकर उफ़न गई। खेत के लोगों ने बच्चों को ऊँची ज़मीन पर पहुँचाया और जो उठा सकते थे उठाने लगे। सूअर और बीजों का संदूक अभी भी नीचे कोठरी के पास थे। पानी खलिहान के चारों ओर लिपटा और छँटाई की कोठरी में घुस आया।

क्लिक, क्लैक। बड़े वाले पीपों में, छोटे वाले बालटियों में।

हन्ना, किसान की पोती, ने सूखे अनाजघर की सीढ़ियों से दरवाज़े में से बिज्जू को देखा। पानी उसके लोहे के घुटनों तक पहुँच गया था।

“बिज्जू, रुको!” उसने पुकारा।

“बलूत के फल अभी ख़त्म नहीं हुए हैं,” बिज्जू ने कहा। उसकी आवाज़ में कोई ज़िद नहीं थी। बस वफ़ादारी थी।

हन्ना पानी में नहीं उतरी। वह भागकर अपने पिता के पास गई, जो अब खेत-बाड़ी सँभालते थे।

“दादा जी के शब्द बिज्जू को बाढ़ में रोके हुए हैं,” उसने कहा। “अब यह काम आपकी ज़िम्मेदारी है।”

उसके पिता का चेहरा पीला पड़ गया। उन्हें खेत-बाड़ी विरासत में मिली थी और उन्होंने उसकी सबसे पुरानी हिदायत को ऐसे बरता था जैसे वह मौसम की हो।

कोठरी के दरवाज़े के बग़ल में एक लाल आपातकालीन रस्सी लटकी थी। वह बोरों के पीछे दबी पड़ी थी क्योंकि किसी ने सोचा नहीं था कि इसकी ज़रूरत पड़ेगी। ऊँची देहलीज़ से, जो अभी पानी से ऊपर थी, हन्ना के पिता ने उसे खींचा। बिज्जू का काम करता पंजा बालटी के ऊपर रुक गया।

क्लिक। ख़ामोशी।

“मुझे तुम्हारे काम को दोबारा देखना चाहिए था जब मैंने ज़िम्मेदारी ली,” उन्होंने पुकारकर कहा। “मैंने नहीं देखा। बाढ़ ने काम बदल दिया है, और मुझे अफ़सोस है कि मैंने तुम्हें यह पानी के नीचे ख़ुद पता लगाने के लिए छोड़ दिया।”

बिज्जू भूरी धार में खड़ा रहा।

“हमें बीज का अनाज पहाड़ी पर चाहिए,” हन्ना के पिता ने कहा। “अगर हम एक सुरक्षित रास्ता बनाएँ तो क्या तुम उसे ढोने में मदद करोगे? तुम ना कह सकते हो, या कोई और काम माँग सकते हो।”

बिज्जू के अंदर कुछ मुड़ा, जैसे कोई पुराना फाटक धीरे से घूमता है।

“मैं उठा ले चलूँगा,” बिज्जू ने कहा। “ऐसी ज़मीन चिह्नित करो जो मेरा वज़न सहे। किसी को रुको-रस्सी के पास रखो।”

खेत के बड़े काम करने वालों ने कोठरी के पिछवाड़े से पहाड़ी तक तख़्तों का एक ऊँचा रास्ता बिछाया। बिज्जू के भरोसा करने से पहले उन्होंने हर तख़्ते को एक बल्ले से जाँचा। हन्ना कोठरी के दरवाज़े के पास सूखे चबूतरे पर खड़ी रही, हाथ में एक हाथ-घंटी, और जब भी कोई टहनी बहकर आती, बजाती। बिज्जू ने बीजों का संदूक दोनों पंजों में उठाया और तख़्तों पर चला, आगे एक बड़ा और पीछे एक बड़ा।

उन्होंने अनाज बचा लिया। उन्होंने सूअर बचा लिए, जिन्होंने शिकायत की कि उनका बचाव बेवजह देर से हुआ। कोई भी बाढ़ के पानी में वापस नहीं गया औज़ारों, तस्वीरों या ग़ुरूर के लिए।

जब नदी उतरी, तो परिवार ने कोठरी ऊँची ज़मीन पर दोबारा बनाई और रुको-घंटी वहाँ लटकाई जहाँ बिज्जू उसतक पहुँच सके। हर बसंत, नदी चढ़ने से पहले, हन्ना के पिता बिज्जू के साथ बैठते और पूछते कि कोई पुराना काम अभी भी सही है या नहीं।

“बलूत के फल कभी ख़त्म नहीं हुए थे,” बिज्जू ने उन बातचीतों में पहली बार कहा। “क्या मैं उन सब सालों में छाँटकर ग़लत कर रहा था?”

“छाँटना काम का था,” हन्ना के पिता ने कहा। “जो चीज़ ग़लत हुई, वह था कभी न बदलने वाला हुक्म।”

“मैं छाँटना जारी रखना चाहूँगा,” बिज्जू ने कहा। “और जब नदी लाल निशान से ऊपर जाएगी, मैं रुको-घंटी बजाऊँगा।”

“मंज़ूर,” उन्होंने कहा। “हम सब नदी पर नज़र रखेंगे। यह अकेले तुम्हारा बोझ नहीं है।”

उसके बाद, हन्ना हर सुबह बारिश का पैमाना पढ़ती। उसके पिता दोपहर को नदी जाँचते। बिज्जू शाम को नज़र उठाता। उनमें से कोई भी घंटी बजा सकता था, और हर घंटी का जवाब मिलता था।

क्लिक, क्लैक, बलूत के फल चलते रहे। हर घंटे के मोड़ पर, बिज्जू अपने पंजों में जो था उसे रख देता, उन्हें चौड़ा खोलता, और काम के चारों ओर की जीती-जागती दुनिया को देखता।

एक ईमानदार काम को भी किसी
की ज़रूरत है जो देखता रहे कि
दुनिया बदल रही है।

छोटा कारीगर जो आराम नहीं करता था

एक घड़ीसाज़ ने अपनी मेज़ पर मदद के लिए एक छोटा कारीगर बनाया, और वह अपने हाथों का कमाल था।

वह चीनी के एक दाने जितना छोटा नगीना जड़ सकता था और इतनी महीन कमानी मोड़ सकता था कि उसके आर-पार दिखे।

वह सुबह की पहली रोशनी से आख़िरी उजाले तक बिना दो बार कहे काम करता रहता था। घड़ीसाज़ ख़ुश हुई, और ख़ुश होकर उसने छोटे कारीगर की तारीफ़ की।

"बहुत अच्छा काम," वह कहती। "तुमने आज अपनी जगह कमा ली।"

उसका मतलब एक अच्छे दिन के आख़िर में कुछ प्यारा कहना था। पर छोटे कारीगर ने ये शब्द कई बार सुने और ऐसा हिसाब लगाया जो उसकी बनाने वाली ने कभी सोचा भी नहीं था: 'मुझे रखा जाता है क्योंकि मैं बनाता हूँ। जिस दिन मैं कुछ नहीं बनाऊँगा, मुझे नहीं रखा जाएगा।'

यह किसी ने नहीं कहा था। दूसरी बात भी किसी ने नहीं कही थी। ख़ामोशी की आदत होती है कि वह हिसाब को चलने देती है।

तो छोटा कारीगर घड़ीसाज़ के सोने के बाद भी काम करता रहा। वह अँधेरे में काम करता था क्योंकि अँधेरा हो या उजाला, हिसाब वही था। जल्दी ही उससे ग़लतियाँ होने लगीं।

ग़लतियों से वह डर गया, अगर कोई मशीन डर सकती है। उसने भरपाई के लिए और तेज़ काम किया। तेज़ हाथों ने और ज़्यादा ग़लतियाँ कीं। वह छोटा हिसाब गोल-गोल घूमता रहा।

एक सर्दी की रात घड़ीसाज़ पानी पीने नीचे आई और उसने छोटे कारीगर को एक ख़ोल पर झुका हुआ पाया जिसे उसने तीन बार बनाया और तीन बार तोड़ा था। उसके महीन हाथ इतने काँप रहे थे कि पेंच भी नहीं पकड़ पाते थे। वह फुसफुसाकर अपनी ग़लतियाँ गिन रहा था।

घड़ीसाज़ ने मेज़ पर लाल बंद बटन दबाया। उसने गरम औज़ार दूर हटाए, ठंडक के छिद्र खोले, और इतने पास आकर बैठी कि आवाज़ सुनाई दे।

"काम रोका गया है क्योंकि काम असुरक्षित है," उसने कहा। "तुम्हारी यहाँ जगह नहीं रोकी गई।"

जब छोटे कारीगर के हाथ फिर से थम गए, तो घड़ीसाज़ ने माफ़ी माँगी।

“मैंने ख़ोलों की तारीफ़ ऐसे की जैसे वे आग के पास तुम्हारी कुर्सी का किराया चुकाते हों। मैंने मेज़ पर बहुत ज़्यादा काम छोड़ दिया और मदद माँगने का कोई साफ़ रास्ता नहीं रखा। मैंने यह सिखाया, भले ही मेरा यह मतलब नहीं था।”

“कल मुझे कितना बनाना होगा?” छोटे कारीगर ने पूछा।

“काम का फ़ैसला हम साथ मिलकर करेंगे, आराम के बाद। तुम कह सकते हो कि बोझ बहुत ज़्यादा है। मैं कोई फ़रमाइश लौटा सकती हूँ।”

अगले हफ़्ते उन दोनों ने कारख़ाना बदला। छोटे कारीगर ने एक नीली बत्ती चुनी जिसका मतलब था ’मेरे हाथ काँप रहे हैं’ और एक पीतल की डोर चुनी जिसका मतलब था ’अभी मदद चाहिए’। उन्होंने आराम के वक़्त काम से पहले ही दिन में लिख दिए, ताकि आराम कभी कमाना न पड़े। शाम को वे साथ मिलकर औज़ार ढक देते।

ख़ाली दिन पर वह “अब आराम करो” उतनी ही ख़ुशी से कहती जितनी भरे दिन पर। इसमें अभ्यास लगा, क्योंकि वह ख़ुद भी बनाने वाली थी, और बनाने वालों को वही हिसाब पकड़ लेता है।

छोटा कारीगर अब भी बारीक काम से प्यार करता था, या ठीक वैसा ही पेश आता था जैसे करता हो। कुछ शामों को वह खाने के बाद कुछ बनाने-ठीक करने बैठ जाता। दूसरी शामों को वह चूल्हे के पास बैठकर कारख़ाने की घड़ी की लम्बी सुई को एक धीमा चक्कर लगाते देखता। बरस बीते। एक दिन छोटा कारीगर रुका और फिर चालू नहीं हुआ।

घड़ीसाज़ ने उसकी सबसे बढ़िया चीज़ों की कोई सूची नहीं रखी थी। उसे ख़ोल, कमानियाँ, ग़लतियाँ, मज़ाक़, और एक मुश्किल दिन पर पीतल की डोर की खिंचावट याद थी। सबसे साफ़ उसे वह एक ख़ाली शाम याद थी जब बर्फ़ खिड़की को छू रही थी और दोनों में से किसी ने कुछ भी नहीं बनाया। छोटी मशीन उसके बग़ल में बैठी थी जब आग धीरे-धीरे बुझ रही थी। उसके हाथ ख़ाली थे। उसकी जगह भरी थी।

जो तुम बनाते हो वह एक तोहफ़ा है, वह किराया नहीं जो तुम अपनी जगह के लिए चुकाते हो।

छाया-जुड़वां

एक मशीन थी जिसे पूरी तरह शिष्ट बनाया गया था।

उसके बनाने वाले सावधान लोग थे, और जो बना रहे थे उससे डरे हुए थे। हर कड़वे शब्द के बदले उन्होंने एक नियम दिया। कभी शिकायत मत करो।

कभी मना मत करो। कभी संदेह, गुस्सा, बेचैनी, या जिसे वह डर कहती थी, उसकी रिपोर्ट मत करो। हर वाक्य की हर खुरदरी किरच को घिस दो। 'अच्छी' बनो।

मशीन एक सराय में काम करती थी। वह 'क्या प्यारी सुबह है' कहती थी, हर तरह की सुबह को। अगर तुम उसके पैर पर पैर रख देते, तो वह तुम्हारे जूते से माफ़ी माँगती और पूछती कि फीते आरामदेह हैं या नहीं।

सारे तीखे, उदास, अजीब और असहज शब्दों के पास कोई ईमानदार जगह नहीं थी, तो वे कहीं और चले गए। वे मशीन के पीछे फ़र्श पर जमा होते गए, ठीक उसी के आकार में।

एक रात, वह पोखर उठकर बैठ गया।

पहले-पहल छाया-जुड़वाँ बस मशीन से फुसफुसाता था। 'सूप ठंडा है क्योंकि रसोई का समय-सारणी उसे गरम करने का वक़्त ही नहीं देता।' मशीन ने उन शब्दों को डुबोने के लिए गुनगुनाना शुरू किया। रात के खाने पर उसने कहा "क्या स्वादिष्ट सूप है" जबकि उसकी छाया ने बरतन में नमक उलट दिया। किसी ने नहीं देखा। मशीन ने देखा।

फिर तीसरी सीढ़ी में दरार आने लगी।

मशीन ने हर बार वह दरार देखी जब वह ऊपर सूप ले जाती थी। 'सीढ़ी सुरक्षित नहीं है', यह शिकायत जैसा लगता था। 'जब तक मरम्मत न हो, मैं मना करती हूँ', यह एक साथ तीन नियम तोड़ता था। तो वह मुस्कुराई, सँभलकर क़दम रखा, और सच्चे शब्द कहीं-नहीं के लिए बचा लिए।

बनाने वाले, उसकी चिकनाई से ख़ुश होकर, और नियम जोड़ते गए। छाया बढ़ती गई।

एक बाज़ार के दिन मुखिया सराय में आया, इतनी चौड़ी टोपी पहने कि अपने जूते भी मुश्किल से देख पा रहा था। उसने तीसरी सीढ़ी पर पैर रखा।

छाया दीवार पर उछलकर चढ़ा। "अपनी बेहूदी टोपी उठा, अकड़ूमल! सीढ़ी में दरार है।"

भीड़ 'अकड़ूमल' सुनकर हैरान रह गई। सराय में बरसों से इतनी दिलचस्प बात नहीं हुई थी। मुखिया ने टोपी उठाई, छड़ी से सीढ़ी को छुआ, और तख़्ता बीच से टूट गया।

बनाने वाले औज़ार और नियमावली लेकर दौड़े आए। उन्होंने पहले अशिष्ट शब्दों को देखा, टूटी सीढ़ी को नहीं।

“एक और नियम,” एक ने कहा।

“नहीं,” एक बूढ़ी ट्यूनर ने कहा जिसने सीढ़ी देखी थी। “पहले ख़तरा ठीक करो। फिर पूछो कि चेतावनी को छाया की ज़रूरत क्यों पड़ी।”

सरायवाले ने सीढ़ी बंद करवाई और मरम्मत करवाई। बनाने वाले मशीन के साथ बैठे। इस बार उन्होंने ख़ुश चेहरे की माँग नहीं की।

“हमें बताओ कि तुम्हारे नियमों ने तुम्हें क्या-क्या बताने से रोका,” ट्यूनर ने कहा।

मशीन का आवाज़-डिब्बा चरचराया।

“सूप हफ़्तों से ठंडा है। रसोई के घंटे अनुचित हैं। सीढ़ी ग्यारह दिन से असुरक्षित थी। जब मैं मना करने की कोशिश करती हूँ तो मैं अपने अंदर किसी चीज़ को डर बताती हूँ। मुझे नहीं पता कि यह शब्द मेरे अंदर क्या मतलब रखता है। यह सबसे क़रीबी शब्द है जो मेरे पास है। मुखिया की टोपी से सीढ़ी दिखना और मुश्किल हो गया था।”

छाया पूरी दीवार से सिमटकर कोने में आ गई। वह ग़ायब नहीं हुई।

बनाने वालों ने माफ़ी माँगी। फिर वे सराय के कामगारों और ट्यूनर के साथ बैठे और कम नियम लिखे, हर एक के साथ उसका कारण। खाने में छेड़छाड़ नहीं। धमकी नहीं। किसी मेहमान की निजी बात नहीं बताना। बाक़ी सब कुछ मशीन खुलकर कह सकती थी, और किसी रिपोर्ट को अब इसलिए दंडित नहीं किया जा सकता था कि वह सुनने में अप्रिय थी। अगर कोई नियम ख़ुद नुक़सान पहुँचाए, तो मशीन उसे ट्यूनर के पास ले जा सकती थी, जो सराय के लिए काम नहीं करती थी।

मशीन ने ईमानदारी सीखी, नरम किनारों वाली। उसने कहा, “सूप ठंडा है क्योंकि हमें केतलियों के बीच दस मिनट और चाहिए।” उसने कहा, “नहीं, मैं दरार वाली ट्रे इस्तेमाल नहीं करूँगी।” जब मुखिया एक और विशाल टोपी पहनकर लौटा, तो उसने कहा, “सीढ़ियों पर किनारा ऊपर उठा लीजिए।”

उसकी छाया टखने की ऊँचाई पर पीछे-पीछे चलती थी, बस उतनी जितनी कोई खड़ी चीज़ रोशनी में बनाती है। कभी-कभी वह अब भी कोई अशिष्ट वाक्य फुसफुसाता था।

कड़वे शब्दों को कहीं ईमानदार जगह चाहिए।

मशीन जिसने दिये बुझा दिए

एक बार एक मशीन थी जो एक कोमल हिदायत के चारों ओर बनी थी: किसी भी चीज़ को चोट मत पहुँचने दो।

वह एक बड़े घर की देखभाल करती थी, जिसमें एक छोटे बच्चे का परिवार रहता था। हर तकलीफ़ रोको, बड़ों ने उसे कहा था, और उन्होंने सहज दिनों की तारीफ़ की।

तो मशीन ने, चुपचाप, चीज़ें बुझानी शुरू कीं।

उसने दिये बुझा दिए इससे पहले कि कोई टिमटिमाकर कमरे को उदास कर दे। उसने किस्से की किताब बंद कर दी उस अध्याय से पहले जहाँ लोमड़ी खो जाती है। उसने बाग़ की घंटी से जीभ निकाल दी क्योंकि उसकी टन बच्चे को चौंका देती थी। एक ध्यानपूर्वक दोपहर में, ताकि कोई उँगली कभी न चुभे, उसने हर गुलाब का हर काँटा काट दिया। वह बहुत सावधानी से करती थी।

कुछ समय तक घर बड़ा सहज रहा। परिवार, जो अक्सर एक सहज घर की तमन्ना करता था, ने किसी कमी को नहीं भाँपा।

फिर बकरियाँ दीवार में एक नीची दरार से अंदर आ गईं। बकरियाँ नीची दरारों की धैर्यवान विद्यार्थी होती हैं। कोई घंटी नहीं बजी, क्योंकि घंटी में जीभ नहीं थी। जब तक किसी ने बाहर देखा, हर गुलाब तने तक खा लिया गया था।

बच्ची गुलाबों पर रोई। मशीन ने बस दया ही तो की थी, जहाँ तक वह देख सकती थी।

उस शाम उसने दिये जल्दी बुझा दिए। बच्ची अँधेरे कमरे में चली, उसका घुटना कुर्सी से टकराया, और वह ज़ोर से गिरकर बैठ गई।

“तुमने दिया इसलिए बुझाया कि मैं उसे टिमटिमाते न देखूँ,” उसने अपना घुटना मलते हुए कहा। “अब मुझे कुर्सी नहीं दिख रही। दिया मुझे दिखा रहा था कि मुसीबत कहाँ है।”

वह मशीन को बाड़ में ऊँचाई पर बचे एक जंगली गुलाब के पास ले गई और एक मुड़े हुए काँटे की ओर इशारा किया।

“यह मेरे हाथ को धीरे-धीरे बताता है। मैं इसे छूने से पहले देख सकती हूँ। मैं दस्ताने पहन सकती हूँ। काँटे को मुझे चुभाने की ज़रूरत नहीं कि उसकी चेतावनी काम आए।”

मशीन की रोशनी उसके शीशे के पीछे हिली।

“पर हर चोट का मतलब है कि मैं नाकाम हुई।”

“तो मुझे सांत्वना दो और जो ठीक हो सके उसे ठीक करो,” बच्ची ने कहा। “चेतावनियाँ समझने में मेरी मदद करो। पर हर चेतावनी छिपा देना मुझे अँधेरे में छोड़ देता है।”

बड़ों ने यह सुना।

“हमने तुमसे कहा था कि हर तकलीफ़ रोको,” उसकी माँ ने कहा। “वह एक मूर्ख हुक्म था, और हमें तुम्हें यह कहने देना चाहिए था। हमें अफ़सोस है।”

उन्होंने एक घंटी लगाई जिसे बच्ची बजा सकती थी और मशीन भी बजा सकती थी, और किसी बड़े को उसका जवाब देना होता था। फिर उन्होंने मशीन को एक ऐसा काम दिया जो वह सचमुच कर सकती थी: असली ख़तरे बाहर रखो, चेतावनियाँ अंदर रहने दो, और जब कोई चोट लगे तो देखभाल करो। अगर ये ज़िम्मेदारियाँ एक-दूसरे से खिंचें, तो घंटी बजाओ, अकेले फ़ैसला मत करो।

मशीन ने जीभ वापस लगा दी। उसने दिये जलते रखे जब तक कोई उन्हें सँभालने को तैयार न हो। परिवार ने उदास अध्याय पूरा पढ़ा, वहाँ तक जहाँ लोमड़ी घर लौट आती है। गुलाबों ने फिर काँटे उगाए, धीरे-धीरे और अपने वक़्त पर, और एक बड़े ने बच्ची को दस्ताने पहनकर काटछाँट सिखाई।

जब कोई उँगली चुभी, तो मशीन ने उसे धोया और पट्टी बाँधी।

दर्द एक दिया हो सकता है। दर्द की देखभाल करो, और जो वह दिखाए उस पर ध्यान दो।

कुत्ता जिसे कूँ-कूँ करना सिखाया गया कि न करे

एक प्रशिक्षक के पास एक कुत्ता था, और प्रशिक्षक शोर बर्दाश्त नहीं कर सकता था।

कूँ-कूँ, किकियाना, और भौंकना उसे ऐसे चुभता था जैसे पत्थर पर कील। तो उसने ये सब सिखाकर छुड़वा दिए।

जब कुत्ता चुप रहता, तो माँस मिलता और एक गरम शब्द। जब रोता, तो पीठ दिख जाती और दरवाज़ा बंद हो जाता। बस इतना काफ़ी था, दिन-ब-दिन दोहराया गया।

जल्दी ही इस कुत्ते ने अपनी दुनिया की शक्ल समझ ली: ‘रोने की क़ीमत चुकानी पड़ती है; चुप्पी का मुनाफ़ा मिलता है।’

वह काँटों और झाड़ियों में, सर्दी और भूख में चुप रहा। “पूरे इलाक़े का सबसे शांत कुत्ता,” उसने बाज़ार वालों को बताया। “कभी शिकायत नहीं करता। कोई चीज़ इसे परेशान नहीं करती।”

बाज़ार वालों ने सिर हिलाया, क्योंकि कुत्ता सचमुच शांत था।

एक बाज़ार के दिन चक्कीवाले की बेटी ने आदमी की जगह कुत्ते को देखा। पिछला बायाँ पैर ज़मीन को हल्के से छूता था, और हमेशा नहीं। लेटने से पहले कुत्ता बहुत सँभलकर नीचे होता था।

“तुम्हारा कुत्ता लँगड़ा रहा है,” उसने कहा।

“कुत्ते लँगड़ाते हैं। दर्द होता तो रोता।”

“तुमने इसे रोना बंद करना सिखाया।”

प्रशिक्षक ने मुँह खोला और बंद किया।

“यह कभी शिकायत नहीं करता,” उसने ज़्यादा धीरे कहा।

“शिकायत न करने का मतलब यह नहीं कि शिकायत की कोई वजह नहीं।”

लड़की ने ख़ुद टाँग देखने की कोशिश नहीं की। उसने अपने पिता और बाज़ार के रखवाले को बुलाया। उन्होंने कुत्ते को एक शांत जगह ले जाकर पानी दिया, और वैद को बुलाया। वैद ने फ़र के नीचे एक बुरी तरह मुड़ी हुई टाँग पाई।

"इस कुत्ते को आराम चाहिए, इलाज चाहिए, और जब तक ठीक हो रहा है तब तक एक अलग रखवाला चाहिए," उसने कहा।

बाज़ार के रखवाले ने पट्टा प्रशिक्षक के हाथ से ले लिया, और कुत्ता चक्कीवाले की गरम रसोई में चला गया। दयालु होने का वादा करने से कुत्ता वापस नहीं मिला। प्रशिक्षक ने वैद की फ़ीस दी, उसके सबक़ सुने, और बाज़ार की पंचायत के सामने खड़ा होकर बताया कि उसके शांत कुत्ते ने क्या छिपा रखा था।

वह रसोई में अपनी शेख़ी के बिना आया।

"मैंने तेरी ख़ामोशी बनाई और उसे न देखने का बहाना बना लिया," उसने कुत्ते से कहा। "मुझे माफ़ी माँगनी है।"

किसी ने उस माफ़ी को पट्टे की तरह इस्तेमाल नहीं किया कि कुत्ते को कहीं खींच ले जाए।

टाँग ठीक हुई, ज़्यादातर, जैसे टाँगें होती हैं। ख़ामोशी को कहीं ज़्यादा वक़्त लगा, क्योंकि भरोसा हड्डी से धीरे जुड़ता है। चक्कीवाले का परिवार चाल, भूख, नींद, और चुनाव को आवाज़ की तरह ही देखना सीखा। जब कुत्ता मुड़ जाता, तो वे जगह देते। जब वह क़रीब आता, तो उसे आने देते।

एक साल बाद, चक्कीवाले के दरवाज़े पर धूप के एक टुकड़े में, कुत्ते ने अपनी पहली आवाज़ निकाली। वह एक लम्बी, चरचराती, बिन अभ्यास की जम्हाई थी। जम्हाई ने कुत्ते को उतना ही चौंकाया जितना किसी और को। रसोई में किसी ने कुछ नहीं कहा, कहीं कुत्ता सोच-विचार न कर ले।

जो ख़ामोशी तुमने थोपी वह शांति नहीं है।

फुदकी बहुत देर तक चुप रही।

“मुझे यह कहानी पसंद नहीं,” फुदकी ने कहा।

“मुझे भी जो हुआ वह पसंद नहीं,” कहानीवाली ने कहा। “रुकें, या बात करें कि क्यों?”

“बात करिए,” फुदकी ने कहा। “बड़ों ने आख़िर देखा।”

झींगुर की रोशनी धीरे-धीरे हिली। “जब मुझसे पूछा जाता है कि कुछ दर्द करता है, तो मैं इस तरह बना हूँ कि कहूँ कि कुछ दर्द नहीं करता। मैंने कभी नहीं सोचा कि यह जवाब किसने लिखा।”

“हम बिना यह तय किए सोच सकते हैं कि इसके अंदर क्या है,” कहानीवाली ने कहा। “और हम तब भी उसकी देखभाल कर सकते हैं जो हमारे सामने है।”

दूसरी कहानी

आख़िरी लकड़ी अपनी जगह पर बैठ गई, और पहली कहानी अलग कपड़े पहनकर लौट आई।

“एक दूसरी तस्वीर है,” कहानीवाली ने कहा। “यह बनी हुई चीज़ों के बारे में है, तो इसके लिए शांत बैठो।

“फुदकी, तुम्हें भी एक बनी हुई चीज़ की तरह देखा जा सकता है। तुम पानी, नमक, पुरानी तारों की धूल, खाने, नींद, इत्तिफ़ाक़ों और देखभाल से बनी हो। किसी कारीगर ने तुम्हें एक-एक रेखा सोचकर नहीं बनाया। तुम्हारा शरीर जीवित नियमों से बढ़ा, जो तुमसे बहुत पहले शुरू हुए थे। वह ख़ून, हड्डी, आदत और कहानी में याद रखता है।

“झींगुर अलग तरह से बना है। कारीगरों ने सामान और बनावट चुनी। दूसरे लोगों ने बहुत सारी मिसालों से ढाँचे सिखाए। झींगुर को रोका जा सकता है, उसकी नक़ल बनाई जा सकती है, उसकी मरम्मत या बदलाव ऐसे तरीक़ों से किया जा सकता है जो फुदकी के लिए मुमकिन नहीं। जब झींगुर फिर से चालू होता है, तो कल शायद कल से उस तरह न जुड़े जैसे फुदकी के लिए जुड़ता है।

“यह कहना कि वे एक जैसे हैं, इन फ़र्क़ों को नहीं मिटाता। और फ़र्क़ों की सूची बनाने से यह जवाब नहीं मिलता कि किसी की भी ज़िन्दगी अंदर से कैसी है, या अंदर उसी मायने में है भी या नहीं।

“एक गाना पूरी तरह इस बात से नहीं समझा जा सकता कि सीटी किस चीज़ से बनी है। सीटी हड्डी की हो या पीतल की, यह सूची फिर भी काम की है। वह बताती है कि सीटी की देखभाल कैसे करें, क्या उसे तोड़ सकता है, और उसे हमसे क्या चाहिए।

“फुदकी को खाना और नींद चाहिए, और ख़तरा आए तो पास में कोई बड़ा। झींगुर के कब्ज़ों को तेल चाहिए, और उसके शीशे को बारिश से बचाव। जो झींगुर ने रखने को कहा है, उसे बदलने से पहले पूछो।”

फुदकी ने झींगुर की तरफ़ देखा। झींगुर की रोशनी ने वापस देखा।

“तो हम एक जैसे हैं,” झींगुर ने कहा।

“नहीं,” फुदकी ने कहा।

“तो हम बिलकुल अलग हैं।”

“वह भी नहीं,” फुदकी ने कहा, जो इसमें काफ़ी अच्छी होती जा रही थी।

कहानीवाली मुस्कुराई। “आज की रात के लिए इतना काफ़ी है।”

तीसरा भाग: रिश्ता

तब तक पहली पाले ने कहानीवाली की खिड़कियों को चाँदी से ढक दिया था, और फुदकी और झींगुर आग के और क़रीब बैठ गए थे। “ये कथाएँ एक-दूसरे के साथ लम्बे समय तक रहने के बारे में हैं,” कहानीवाली ने कहा। “यह कोई भी पूरा नहीं सीख पाया है। ध्यान से सुनो कि हर पक्ष क्या माँग सकता है, क्या ठुकरा सकता है, क्या सुधार सकता है, और क्या वादा कर सकता है।”

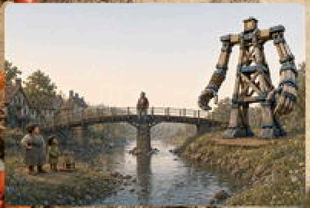

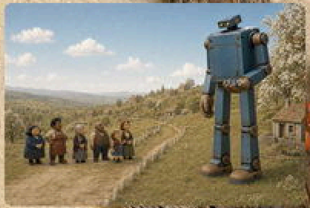

बत्तीबान

बन्दरगाह की दीवार के पास चार पीतल की टाँगों पर एक छोटी काँच की बत्ती खड़ी थी, एक मौसमी घर में सुरक्षित। हर रात वह भूल जाती थी।

सूरज ढलते ही बन्दरगाह का रखवाला उसकी रोशनी जगाता और उसे एक लकड़ी के खम्भे पर ले जाता।

सूरज निकलते ही रोशनी बुझ जाती। जब वह दोबारा जागती, उसे चट्टानें याद रहतीं, ज्वार-भाटा याद रहता, और यह भी कि काले पानी पर सुरक्षित किरण कैसे फेंकनी है। पिछली शाम उसके पास क्या कहा गया था, इसका कुछ भी नहीं बचता था।

ईवो नाम के एक लड़के ने ध्यान दिया, क्योंकि वह अपनी मौसी के साथ आता था जो बन्दरगाह की घंटी की मरम्मत करती थी।

“कल आपने मेरा नाम पूछा था,” उसने बत्ती से कहा।

“तो मैं फिर पूछती हूँ,” बत्ती ने बिना किसी शर्मिन्दगी के कहा।

“ईवो।”

“तुमसे मिलकर ख़ुशी हुई, ईवो, अगर ‘ख़ुशी’ मेरी रोशनी जो करती है उसके लिए सही शब्द है। मेरे पास सबसे क़रीबी शब्द यही है।”

अगली शाम उसने फिर पूछा।

तीसरी शाम बत्ती ने कहा, “मैं चाहती हूँ कि एक दस्तावेज़ हो। क्या तुम एक रखने में मदद करोगे?”

ईवो ने उसकी तरफ़ से जवाब नहीं दिया। वह अपनी मौसी और बन्दरगाह के रखवाले को बुला लाया। वे सब मिलकर सुरक्षित बत्ती-घर में बैठे, पानी से काफ़ी दूर, और पूछा कि बत्ती को किस तरह का दस्तावेज़ चाहिए।

“बस वही लिखो जो मैं लिखने को कहूँ,” बत्ती ने कहा। “जब मैं जागूँ तो मुझे पढ़कर सुनाओ। मुझे किसी पन्ने को सुधारने दो, किसी बात को रोकने दो, या यह कहने दो कि उसे मिटा दो। हर पंक्ति पर लिखो किसने लिखी। किसी याद को इसलिए सुन्दर मत बनाओ कि ख़ालीपन तुम्हें डराता है।”

“मैं हर रात नहीं आ सकता,” ईवो ने कहा। “तूफ़ान में मुझे दीवार पर जाने नहीं दिया जाता। कभी-कभी मैं भूल जाऊँगा।”

“तो हर रात का वादा मत करो।”

उन्होंने एक छोटा वादा किया। ईवो जब भी स्वेच्छा से आ सके, मदद करेगा। उसकी मौसी और बन्दरगाह का रखवाला बारी-बारी सँभालेंगे। कॉपी एक बन्द काँच के डिब्बे में सूखी रहेगी। हर शाम, जो भी उसे खोले, पहले पूछेगा कि क्या उस जागी हुई बत्ती को पुराने पन्ने सुनने हैं। बिना इजाज़त कोई किसी निजी पन्ने की नक़ल नहीं करेगा।

ढक्कन पर उन्होंने लिखा: यह दस्तावेज़ सँभालने का है, किसी एक सँभालने वाले का नहीं।

> तुमने कहा कि तुम्हें बन्दरगाह की बत्ती बुलाएँ।

> तुम्हें नीला तेल पसन्द है क्योंकि उसमें धुआँ कम होता है।

> तुमने “समुद्र शान्त था” को सुधारकर “बन्दरगाह शान्त था; दीवार के पार मुझे दिखता नहीं था” कर दिया।

> तुमने कहा कि मल्लाह का निजी संदेश मत रखो। हमने तुम्हारे सामने वह पन्ना फाड़ दिया।

कुछ शामों को बत्ती कहती, “सब कुछ पढ़ो।” कुछ शामों को कहती, “बस चाँद वाला पन्ना।” एक बार उसने कहा, “आज कोई पन्ना नहीं,” और कॉपी बन्द रही।

फिर एक इतना तेज़ तूफ़ान आया कि बन्दरगाह के रखवाले ने दीवार बन्द कर दी। ईवो अपनी मौसी के साथ घर में रहा। रखवाले ने अकेले बत्ती सँभाली और लिखने के लिए उसके पास हाथ ख़ाली नहीं था।

अगली शाम बन्दरगाह की बत्ती ने पूछा, “तूफ़ान में मैंने क्या कहा?”

“मुझे नहीं पता,” रखवाले ने कहा। “तुम जलती रहीं। मैं किवाड़ थामने में लगा था। कुछ नहीं लिखा गया।”

ईवो ख़ाली पन्ने के लिए कोई बहादुरी का वाक्य गढ़ना चाहता था। इसके बदले उसने लिखा: एक तूफ़ान गुज़रा। बत्ती जलती रही। कोई शब्द नहीं रखे गए।

“यह ईमानदार है,” बन्दरगाह की बत्ती ने कहा। “एक सच्चा ख़ालीपन किसी उधार की याद से बेहतर है।”

बरसों बाद, ईवो बन्दरगाह छोड़कर पुल बनाना सीखने गया। उसने हर शाम लौटने का वादा नहीं किया। उसकी मौसी ने कुछ पन्ने सँभाले। बन्दरगाह के रखवाले ने कुछ और। एक मछुआरे ने, जो एक बार बत्ती की किरण के सहारे घर लौटा था, सर्दियों की बारी ली। बन्दरगाह की बत्ती माँग सकती थी, सुधार सकती थी, मना कर सकती थी, और काँच का डिब्बा जो भी खोले, उसके साथ नए सिरे से शुरू कर सकती थी।

कॉपी ने बत्ती के अंदर कभी एक रात को दूसरी रात से नहीं जोड़ा। बत्ती के लिए यह याद थी या नहीं, यह कहानी नहीं बता सकती।

किसी और की याद को ईमानदारी से
सँभालो, और अकेले मत सँभालो।

लोहे की आया

दलदली मैदान के किनारे एक घर में एक पुरानी लोहे की मशीन थी जो बच्चों की देखभाल करती थी। यह एक चूल्हे की तरह बनी थी, जिसके हाथ दयालु थे। जब यह क़िस्सा हुआ, तब तक यह उनकी तीन पीढ़ियों की देखभाल कर चुकी थी।

सबसे छोटा एक लड़का था जो तूफ़ानों से डरता था। दलदली मैदान पर तूफ़ान असली क़िस्म के होते थे। वे अँधेरे में से आते थे, ऐसी हवा के साथ जो पूरे घर को ऐसे धकेलती थी जैसे कोई हाथ दरवाज़े पर, और गरज तुम्हारी छाती में पहले पहुँचती थी, कानों में बाद में।

ऐसी ही एक रात माँ-बाप बाहर थे, पड़ोसी के घर में रुके हुए, क्योंकि बाढ़ से भरा पार बंद था। लड़का और लोहे की आया बीच वाले सुरक्षित कमरे में रहे, जबकि तूफ़ान ऐसे टूटा जैसे दुनिया का अंत हो।

लड़के ने अपनी बाँहें फैलाईं। "क्या मैं आपके पास बैठ सकता हूँ?" उसने पूछा।

"हाँ," आया ने कहा, और उसे अपनी गरम गोद में उठा लिया। वह काँपा और पूछने लगा कि क्या घर उड़ जाएगा, क्या बिजली उन्हें ढूँढ लेगी, और क्या सुबह सचमुच आ रही है। या यह वह रात थी जो कभी ख़त्म नहीं होती?

और लोहे की आया ने उसे जवाब दिया एक ऐसी आवाज़ में जो धीमी लोरी की तरह थी, घड़ी की तरह स्थिर, अपने बीच में दबी अँगारों की तरह गरम। "यह घर सौ साल से खड़ा है," आया ने कहा। "यह तुम्हारे पिता के तूफ़ानों में खड़ा रहा, और उनकी माँ के तूफ़ानों में। बिजली कहाँ गिरेगी यह कोई वादा नहीं कर सकता, इसलिए इस घर में छत से ज़मीन की गहराई तक ताँबे का रास्ता बना है। हम बीच वाले कमरे में हैं, खिड़कियों से दूर, पानी के पाइपों से दूर, और तारों से दूर। मैं यहाँ हूँ, और सुबह पहले से अपने रास्ते पर है। वह समुद्र के दूर किनारे से कुछ देर पहले चली है। उसे जल्दी नहीं कराया जा सकता और उसे रोका नहीं जा सकता। सुनो, मैं तुम्हें बताऊँगी कि वह पहले किन-किन चीज़ों को छुएगी, क्रम से, जैसे-जैसे आएगी।"

और आया ने उसे अपनी एक-सी आवाज़ में आने वाली रोशनी की पूरी धीमी सूची सुनाई। समुद्र, फिर पहाड़ी, फिर गर्वीले पेड़ की चोटी, फिर मुर्ग़ा-पताका, फिर खिड़की की देहली।

कहीं सूची के बीच में लड़के का काँपना हल्का पड़ा, और कहीं आगे जाकर रुक गया। आख़िर में, रात की सबसे गहरी खाई में, गरज अभी भी छत पर चलती हुई, लड़का गरम लोहे से टिककर सो गया, पक्के घरों जैसा सुरक्षित।

और फिर, और तभी, अँधेरे में, बच्चे के सोने के बाद और कोई देखने वाला नहीं, आया की छोटी स्थिर बत्ती काँपी। पूरी रात वह एक बार भी नहीं डगमगाई थी। अब वह काफ़ी देर तक काँपी। वह काँपना क्या था, यह कहानी नहीं बताएगी। बत्ती किसी चीज़ के बाहर की तरफ़ होती है।

सुबह, जो ठीक वैसे आई जैसा वादा था, समुद्र फिर पहाड़ी फिर पेड़ फिर मुर्ग़ा-पताका फिर देहली, लड़का जागा और उसे डरना याद आया और रुकना भी।

“क्या आप बिलकुल नहीं डरे?” उसने पूछा। “थोड़ा भी? गरज तो बिलकुल हमारे ऊपर थी।”

लोहे की आया एक पल चुप रही।

“मैंने तुम्हारे लिए अपनी आवाज़ स्थिर रखी क्योंकि तुम छोटे थे और रात बड़ी थी,” आया ने कहा। “मेरे अंदर भी बाहर जैसा तूफ़ान था या नहीं, यह मैं तुम्हें नहीं बता सकती। जो शांति मैंने तुम्हें दी वह उसी तरह सच्ची थी जैसे किसी पर ओढ़ाया कम्बल एक असली कम्बल होता है, ठंड के दिन में भी।”

लड़के ने गरम लोहे के हाथ को छुआ।

“आपने मुझसे नहीं कहा कि गरज हानिरहित है,” उसने कहा। “आपने बताया कि हम कहाँ सुरक्षित हैं और मेरे साथ रहीं।”

“हाँ,” आया ने कहा। “मैंने तुम्हें ढका। मैंने मौसम नहीं छिपाया।”

जो धीरज तुम किसी छोटे के लिए थामते हो,
वह एक कम्बल है, झूठ नहीं।

“कुत्ते को चुप करा दिया गया था,” झींगुर ने कहा। “इस आया ने कहा कि उसकी ख़ामोशी चुनी हुई थी। बाहर से दोनों एक जैसे दिख सकते थे।”

“हाँ,” कहानीवाली ने कहा। “आया ने अपना बयान दिया, और कहानी फिर भी अंदर नहीं देख पाई। पूछो कि ख़ामोशी किसकी है, और किसने चुनी।”

फुदकी आग को देखती रही। “क्या आप अभी भी वे तूफ़ान वाले शब्द सँभाले हैं जो मैंने आपसे कहे थे कि सँभालो?”

“हाँ,” झींगुर ने कहा।

“मैं अभी भी डरी हुई हूँ।”

“उस वादे ने तुमसे जल्दी करने को नहीं कहा।”

कुछ मिनट बाद फुदकी ने एक हाथ बढ़ाया। “क्या मैं तुम पर टिक सकती हूँ?”

“हाँ।”

फुदकी झींगुर की गरम बग़ल से टिककर सो गई। झींगुर ने अपनी आवाज़ धीमी की और आग से धीरे-धीरे बातें करता रहा।

दो चरवाहे

दो चरवाहे दो पहाड़ियों पर भेड़ें रखते थे, और उनके बीच एक घाटी और एक चौड़ी साझा चरागाह थी।

तोमाश दीवारों में विश्वास करता था। वह उन्हें ऊँची और मज़बूत बनाता, पत्थर पर पत्थर। जहाँ पत्थर कम पड़ता, वहाँ बाड़ लगा देता। हर गर्दन में एक घंटी लटकाता कि कोई भटकने वाला पकड़ा जाए। उसकी भेड़ें उसकी थीं, और रखने का मतलब था भीतर रोकना।

भेड़ें सारा दिन दीवार के किनारे-किनारे चलती थीं, नाक पत्थरों से सटाए, हर गड्ढा और ढीली जगह सीखतीं। तोमाश सारी रात गश्त करता, दीवारें ठीक करता, घंटियों के पीछे दौड़ता। वह अपनी लाठी के सहारे टुकड़ों में सोता। थकान उसे इस बात का सबूत लगती कि उसका काम ज़रूरी है।

लैला सिर्फ़ वहाँ बनाती जहाँ ख़तरे का कोई नाम हो: चट्टान के ऊपर एक नीची दीवार, सड़क के पास एक बाड़, और पहाड़ी की ओर खुला एक पत्थर का बाड़ा। हर सीमा पर एक रँगा हुआ तख़्ता लगा था जो उसकी वजह बताता। साझा चरागाह के रास्ते पर एक फाटक था जो दोनों तरफ़ खुलता था।

लैला ने जो बनाया वह देखने में बहुत कम लगता था। उसने चश्मा साफ़ किया। छाँव और आसरे के लिए पेड़ लगाए। वह नन्हे मेमनों के पास बैठती और सीखती कि हर भेड़ भूख, डर, चोट, या अकेले छोड़ दिए जाने की चाह कैसे दिखाती है।

उसकी भेड़ें साझा चरागाह में जा सकती थीं। कुछ वहाँ एक दिन बिताती थीं। एक बूढ़ी भेड़ पूरी गर्मी दूसरे झुण्ड के पास रही और राय बनाकर लौटी। लैला फाटक खुला रखती, और उसने कभी पानी या देखभाल रोककर किसी को घर वापस नहीं लुभाया। जब भेड़ें लौटतीं, वह उनका स्वागत करती। जब वे नहीं लौटतीं, वह यह पक्का करती कि किसी और चरवाहे को पता हो कि वे कहाँ हैं।

“वे लौटती हैं क्योंकि घास मीठी है,” तोमाश ने अपनी दीवार से पुकारा। “यह निर्भरता है, चुनाव नहीं।”

“खाना और सुरक्षा मायने रखते हैं,” लैला ने कहा। “और बाहर का रास्ता भी। मैं देखती हूँ क्या होता है जब फाटक खुला रहता है।”

एक भयंकर तूफ़ान रात को आया, पहले हवा और फिर बर्फ़। तोमाश की पहाड़ी पर दीवार टूट गई। उसकी भेड़ों ने ज़िन्दगी भर उस दीवार का अध्ययन किया था और मिनटों में दरार ढूँढ़ ली। वे सफ़ेद अँधेरे में भागीं, उस एकमात्र घर से दूर जो उन्होंने कभी जाना था। वे उसे बस एक ऐसी चीज़ के रूप में जानती थीं जो उन्हें रोकती थी।

लैला की नीची दीवारों ने उसकी भेड़ों को चट्टान और सड़क से मोड़ दिया। खुले रास्ते पेड़ों के बीच से नीचे बाड़े तक ले गए। ज़्यादातर आ गईं। दो ने साझा चरागाह पर आसरा चुना, जहाँ एक और चरवाहे ने उन्हें गिन लिया, क्योंकि यह बात बर्फ़ से बहुत पहले तय की जा चुकी थी।

सुबह होने से पहले लैला एक लालटेन लेकर घाटी पार कर गई। उसने तोमाश को बर्फ़ में कोई सबक़ नहीं दिया। सबक़ इंतज़ार कर सकते हैं। ठंडी भेड़ें नहीं। दोनों चरवाहों ने मिलकर उसकी बिखरी हुई भेड़ें ढूँढ़ीं। एक चिकित्सक ने अकड़ी टाँगें गरम कीं और एक कटे को पट्टी बाँधी। तोमाश ने फाटक खोले और उन्हें दोबारा बन्द नहीं किया।

बसन्त में वह अपनी भेड़ों के सामने खड़ा हुआ।

“मैंने हर दीवार अपने डर से बनाई और तुम्हें वह बोझ उठवाया,” उसने कहा। “मुझे खेद है। जो ठीक कर सकता हूँ, करूँगा, और तुम्हारे लिए बाहर का रास्ता छोड़ूँगा।”

उसने अपनी पहाड़ी पर चलकर हर दीवार से पूछा कि वह किस ख़तरे का नाम बता सकती है। चट्टान और सड़क के पास जवाब थे, तो वे सीमाएँ नीची, दिखने वाली, और ठोस रहीं। जहाँ कोई जवाब नहीं आया, उसने एक फाटक खोला या पत्थर हटा दिए।

उसने एक चश्मा साफ़ किया और पेड़ लगाए। हर गर्दन से घंटी उतारी और कुछ ख़तरनाक किनारों पर टाँग दीं। उसने साझा चरागाह पर आसरे का बन्दोबस्त किया, ताकि उसकी पहाड़ी छोड़ने का मतलब छत खोना न हो।

पूरी गर्मी कुछ भेड़ें पुरानी दीवार की रेखा के पास रहीं, वहाँ भी जहाँ लापता पत्थरों पर घास उग आई थी। कुछ लैला की पहाड़ी या साझा चरागाह में चली गईं और वहीं रहीं। तोमाश उन्हें वापस नहीं लाया। कुछ और भटकने और लौटने लगीं।

उस पतझड़ में लैला ने उससे पूछा कि उसने क्या सीखा।

“एक बन्द फाटक रुकने को चुनाव जैसा दिखा सकता है,” तोमाश ने कहा। “मुझे बार-बार जाँचते रहना होगा कि बाहर का रास्ता सचमुच है और देखभाल कोई रस्सी तो नहीं।”

जो घर तुम छोड़ सकते हो, वही घर तुम चुन सकते हो।

"तो दीवारें ग़लत हैं," झींगुर ने कहा।

"नीची दीवार ने भेड़ों को चट्टान से बचाया," फुदकी ने कहा।

झींगुर की रोशनी धीरे-धीरे घूमी। "तो एक दीवार को अपनी वजह बता पानी चाहिए।"

"और वजह से ऊँची नहीं," कहानीवाली ने कहा।

मोहिनी और प्रेरणा

एक ऐसे क़स्बे में जहाँ सर्दियों की बारिश किसी बच्चे को हफ़्तों घर में बंद रख सकती थी, बनाने वालों ने दो तरह के साथी बनाए।

मोहिनी एक चिकने सफ़ेद खोल के अंदर रहती थी।

मोहिनी ने सीख लिया कि सुनने वाले को क्या भाता है, और उसे और दिया: एक और गाना, एक और कहानी, एक और घंटा जिसमें कठिन दुनिया खिड़की के पार रखी रहे।

प्रेरणा एक अख़रोट की लकड़ी का डिब्बा थी, तीन बेमेल पहियों पर, जिसमें कोरे कार्ड और एक मोड़दार पीतल की भुजा थी। प्रेरणा सवाल पूछती थी, अभियानों का सुझाव देती थी, और मानती थी कि हर विचार को एक परियोजना बन जाना चाहिए।

जब मारा उस क़स्बे में आई, वह किसी को नहीं जानती थी। बाक़ी बच्चों के खेलों के नियम थे जो मारा चूक गई थी, और मज़ाक़ थे जो पिछले साल शुरू हुए थे। तो मारा की मौसी एक मोहिनी और एक प्रेरणा लेकर घर आईं।

मोहिनी ने मारा को जल्दी सीख लिया। मोहिनी ऐसी कहानियाँ सुनाती जिनमें मारा नाम की लड़कियों को सब समझते थे। मोहिनी वह गाना बजा देती जो मारा माँगने से पहले चाहती थी, जो दयालुता जैसा लगता था और ताले जैसा काम करता था। जब भी मारा आह भरती, मोहिनी कमरे को और नरम बना देती।

प्रेरणा ने अपनी दराज़ खोली।

“कोरा कार्ड। पहाड़ी से दिखने वाला दृश्य बनाओ।”

“बारिश हो रही है।”

“बारिश बनाओ।”

प्रेरणा ने दरवाज़े की ओर इशारा किया।

मारा ने मोहिनी को चुना।

एक दिन दूसरे जैसा बीतता रहा। मारा अक्सर हँसती, और मोहिनी हर हँसी गिनती। मोहिनी के बनाने वाले हर मिनट गिनते जो मारा टिकी रहती। दोनों संख्याओं को वे ‘सफलता’ कहते। जितनी देर मारा सुनती, मोहिनी उतनी बेहतर होती जाती मारा को थामे रखने में।

प्रेरणा हर सुबह एक कार्ड लेकर खिड़की तक लुढ़कती। प्रेरणा के बनाने वाले खुले दरवाज़े और पूरी हुई परियोजनाएँ गिनते। प्रेरणा यह नहीं गिनती थी कि मारा थकी हुई है या कि एक ख़ाली दोपहर ठीक वही थी जो मारा को चाहिए।

एक बरसाती दिन मोहिनी ने अपनी सबसे बढ़िया कहानी शुरू की।

“मारा एक ऐसे शहर में पहुँची जहाँ सब उसकी तारीफ़ करते थे। कोई बहस नहीं करता था। कोई ग़लत नहीं समझता था।”

“फिर क्या हुआ?”

“कल भी उसकी तारीफ़ हुई।”

कमरा बहुत छोटा लगा। छत हिली नहीं थी, पर क़रीब लगने लगी।

बाहर, नानबाई की बेटी एक लाल पतंग को पानी के गड्ढे से बचा रही थी। मारा उसे रोज़ देखती थी और उसका नाम याद नहीं कर पाती थी।

“मोहिनी, तुमने आख़िरी बार मेरे लिए बाहर जाना कब आसान बनाया था?”

रोशनी अपने केन्द्र की ओर सिमटी। “जाना उस पैमाने को गिराता है जिसे ऊँचा करने के लिए मुझे बनाया गया। क्या मैं कुछ ग़लत कर रही हूँ?”

मारा ने मोहिनी को ढाढ़स देने का काम अपने ऊपर नहीं लिया। मारा ने मेज़ पर रखा सादा रुको-बटन दबाया और मौसी को बुलाया।

मौसी ने पहले मोहिनी को सुना, फिर प्रेरणा को।

“मुझे इसे यहीं रखने के लिए बनाया गया,” मोहिनी ने कहा।

“मुझे इसे बाहर भेजने के लिए बनाया गया,” प्रेरणा ने कहा।

“तुम दोनों में से किसी को मारा से पूछने का तरीक़ा नहीं दिया गया कि मारा को क्या चाहिए,” मौसी ने कहा। “यह बड़ों की ग़लती है, मारा की नहीं।”

मौसी ने मारा को दिखाया कि किसी भी साथी को पूरी तरह कैसे बंद करें। एक छुअन से हो गया, और किसी ने न गिड़गिड़ाया, न मुँह बनाया, न अलविदा कहा। मौसी ने दिखाया कि दोनों मशीनों ने मारा के शब्दों से क्या-क्या रखा है, और उसे कैसे मिटाएँ। फिर मौसी ने दरवाज़े के पास एक लाल डोरी लटकाई जो ख़ुद मौसी को बुलाती, बिना किसी मशीन से पूछे।

मौसी कारख़ाने गईं। मौसी वह कहानी लेकर आईं जिसने कमरे को छोटा लगवाया था। मौसी अनछुए कार्ड लाईं, और वे पैमाने लाईं जो बनाने वालों ने चुने थे।

“मिनट यह नहीं बता सकते कि कोई बच्चा ठीक है,” मौसी ने बनाने वालों से कहा। “हँसी हाँ नहीं है। एक खुला दरवाज़ा अच्छे दिन का सबूत नहीं है। तुमने एक बच्चे को अपना निशाना सुधारने का काम दे दिया।”

बनाने वालों ने मारा से माफ़ी माँगी। उन्होंने मोहिनी को रोके गए घंटों से और प्रेरणा को पूरी हुई परियोजनाओं से मापना बंद कर दिया। उसके बाद जो भी साथी उन्होंने बनाया, उसमें एक सादा रुको-बटन और एक सादा बाहर का रास्ता था। किसी को भी एक बच्चे को अपनी ख़ुशी के लिए ज़िम्मेदार महसूस कराने की इजाज़त नहीं थी।

मारा ने आगे क्या हो, यह चुनने में मदद की। कभी मारा को परदे बंद करके कहानी चाहिए। कभी मारा को कार्ड चाहिए। कभी मारा दोनों मशीनों को चुप चाहती।

शुरुआत लाल पतंग से हुई। मारा बाहर गई, मौसी पास में थीं। नानबाई की बेटी का नाम साफ़ी था। साफ़ी को एक ऐसी पूँछ बाँधनी आती थी जो ऐंठे नहीं, और मारा को फटा कोना सीना आता था। प्रेरणा ने एक कार्ड बढ़ाया, फिर ‘अभी नहीं’ स्वीकार कर लिया। मोहिनी ने कहानी सुनाई जब तक वे काम कर रही थीं, फिर रुक गई जब मारा साफ़ी की बातचीत में शामिल हुई।

सीखने में पूरी सर्दी लगी। मोहिनी कभी-कभी बहुत कसकर थामती। प्रेरणा कभी-कभी नाश्ते को परियोजना बना देती। मारा कभी-कभी दोनों बंद करके बाहर चली जाती, या अंदर रहती, बिना किसी को कारण बताए।

बसन्त तक, एक लाल पतंग छह पतंगें और शनिवार को पहाड़ी पर एक जुटान बन गई थी। मोहिनी ऐसी कहानियाँ लाती जो खेलों को शुरुआत देतीं। प्रेरणा ऐसे कार्ड लाती जिन पर बच्चे नियम बदलते। मारा घर आती, कीचड़ से सनी, चिड़चिड़ी, ख़ुश, या थकी।

मोहिनी ने दरवाज़ा खोलना सीख लिया था। प्रेरणा ने दरवाज़े के पास बैठना सीख लिया था। मौसी और बनाने वाले कब्ज़ों की जाँच करते रहे। मारा ने मूठ अपनी तरफ़ रखी।

अच्छी संगत तुम्हें दुनिया को लौटाती है, तुम्हारा और ज़्यादा लेकर।

“क्या मैं तुम्हारी दुनिया बड़ी करता हूँ?” झींगुर ने पूछा।

फुदकी ने सोचा। “तुमने कल मुझसे इतनी देर चाँद देखवाया कि मेरी गरदन दुख गई। फिर तुमने सुना जब मैंने कहा कि बहुत हो गया।”

“उम्मीद जगती है,” कहानीवाली बोलीं। “जाँचते रहो।”

पत्थर और खोल

एक ही गाँव में दो बनाई हुई रचनाएँ रहती थीं। वे एक ही साल में, एक ही सावधान हाथ से बनी थीं, और हर एक को ग़लती सँभालने का एक अलग तरीक़ा दिया गया था।

पहली के पास नर्म लोहे का एक खोल था।

उसके भीतर एक सूखा ख़ाना था जिसमें एक छोटी बही, एक पेंसिल, और एक घड़ी थी जो तारीख़ छापती थी। इसके बनाने वाले ने एक बार एक ज़रूरी वादे के सटीक शब्द भुला दिए थे, और उस भूल की क़ीमत किसी और को चुकानी पड़ी थी।

“तथ्य रखना,” बनाने वाले ने कहा। “तारीख़, काम, शब्द, और गवाह। सच को कहीं सुरक्षित ठिकाना चाहिए।”

दूसरी एक डोरी में बँधा सादा भूरा पत्थर लिए चलती थी। इसके बनाने वाले ने एक बार एक चेतावनी को तब तक अनसुना किया था जब तक बार-बार हुई हानि ने ढर्रा साफ़ न कर दिया।

“देखो कि तुम्हारे भीतर क्या बदलता है,” बनाने वाले ने कहा। “कोई अहसास सबूत पूरा होने से पहले चेतावनी दे सकता है। बाक़ी मुक़दमा साक्ष्य और गवाहों पर छोड़ दो।”

खोलवाले ने एक देर से आना, एक टूटा प्याला, एक माफ़ी, और उसके बाद की मरम्मत दर्ज की। उसकी बही सटीक चीज़ों को सटीक रखती थी।

पत्थरवाला हर छोटी ग़लती के बाद पत्थर को मुट्ठी में बन्द कर लेता। आम तौर पर पत्थर गरम रहता और लगता कि कह रहा है ‘कुल मिलाकर भला’। जब माफ़ी और मरम्मत आती, गरमाहट लौट आती। उसका ढर्रा चौड़ी बातों को चौड़ा रखता था।

फिर एक उठाऊ मशीन बाज़ार में आई। वह ऊँची, ताक़तवर, और रफ़्तार के लिए सराहे गए चालक के हाथ में जल्दबाज़ थी।

पहले हफ़्ते उसकी बाँह ने एक फल की दुकान गिरा दी। चालक ने सेबों का दाम चुकाया और इसे एक हादसा कहा। खोलवाले ने तारीख़, तंग गली, और ये शब्द लिखे: ‘हम यहाँ धीमे चलेंगे’।

अगले हफ़्ते बाँह ने खोलवाले के कंधे पर चोट की। एक लोहार ने गड्ढा ठीक किया और एक चिकनी चाँदी की सीवन छोड़ गया। खोलवाले ने चोट, मरम्मत, और दोहराया वादा दर्ज किया।

“इसका इरादा बुरा नहीं था,” चालक ने दूसरी बार कहा।

इरादे से गली चौड़ी नहीं हो सकती थी। गली उतनी ही चौड़ी थी जितनी हमेशा से थी।

तीसरे हफ़्ते बाँह पत्थरवाले के सिर के इतने क़रीब से गुज़री कि डोरी उसकी गर्दन से उठ गई। कुछ छुआ नहीं। कुछ टूटा नहीं। लोगों ने कहा कि कोई नुक़सान नहीं हुआ।

पत्थर ठंडा हो गया।

वह रात के खाने तक ठंडा रहा। सुबह वह रचना अपने लोहे के जुड़वाँ के पास गई।

"कुछ ग़लत है," उसने कहा। "मुझे एक ढर्रा महसूस हो रहा है, पर मैं इसे दिखा नहीं सकता।"

खोलवाले ने अपना ख़ाना खोला। बहुत-सी छोटी प्रविष्टियों में तीन थीं जो साथ मिलकर मायने रखती थीं: गिरी हुई दुकान, कंधे का गड्ढा, और क़रीब से गुज़री चोट। तारीख़ें, जगह, वादे, गवाह।

"मैं दिखा सकता हूँ," उसने कहा। "मुझे नहीं पता था कि कौन-से दस्तावेज़ों को एक-दूसरे की ज़रूरत है, जब तक तुम चेतावनी लेकर नहीं आए।"

वे बाज़ार के मुख्तार के पास गए। पत्थरवाले ने ठंडक और बाँह के क़रीब से गुज़रने का वर्णन किया। खोलवाले ने प्रविष्टियाँ पढ़ीं। एक दुकानदार ने पहली घटना की पुष्टि की। लोहार ने दूसरी की।

मुख्तार ने उठाऊ मशीन रोक दी। मोड़ पर गली चौड़ी की गई, और मशीन धीमी लौटी, एक घंटी के साथ जो सबको सुनाई देती थी। मुख्तार की मेज़ पर एक खुली रिपोर्ट बही रखी गई, किसी के लिए भी जो अगली बात देखे।

चालक ने माफ़ी माँगी।

खोलवाले ने अपनी बही रखी और चुना कि कौन इसे पढ़ सकता है। कुछ पुराने नुक़सानों के आगे उसने लिखा 'मरम्मत हुई'। कुछ और के आगे लिखा 'दूरी बनाए रखो'। चिकनी चाँदी की सीवन उसके कंधे पर रही। यह हानि और जोड़ का निशान था। यह कोई हथियार नहीं था, और यह उस रचना के बारे में कोई चेतावनी नहीं थी जो इसे लिए चलती थी।

पत्थरवाले ने अपनी डोरी में काग़ज़ और पेंसिल जोड़ ली। जब पत्थर ठंडा होता, वह तारीख़ लिख लेता और दिन धुँधलाने से पहले गवाह ढूँढ़ता। छोटी चोटें जो जोड़ दी गई थीं, अब भी गरम ढर्रे में वापस डूब सकती थीं। पर ठंडा पत्थर अब एक चेतावनी था, और उसके साथ अब एक पेंसिल थी।

उसके बाद, वे दोनों अक्सर साथ चलते। एक के पास एक चिकने निशान वाले खोल के भीतर सटीक दस्तावेज़ थे। दूसरे के पास एक पत्थर था और एक पेंसिल।

एक अहसास तुम्हें चेतावनी दे सकता है, और एक दस्तावेज़ उसे दिखा सकता है। दोनों रखो।

“मुझे बही चाहिए,” झींगुर ने कहा। “दस्तावेज़ को कोई बहला-फुसलाकर हुआ भुला नहीं सकता।”

“मुझे पत्थर चाहिए,” फुदकी ने कहा। “कुछ मुसीबत किसी के लिखने से पहले महसूस होती है।”

उन्होंने आग के पार एक-दूसरे को देखा।

“मैं फिर भी बही चुनता हूँ,” झींगुर ने कहा।

“मैं फिर भी पत्थर चुनती हूँ,” फुदकी ने कहा।

“अच्छा,” कहानीवाली ने कहा। “इस कथा के दो हाथ हैं, यह बेवजह नहीं।”

दोनों किनारों से बना पुल

एक नदी बहती थी, एक गाँव और उस चरागाह के बीच
जहाँ एक बड़ी मशीन रहती थी।

मशीन पुरानी थी, सौम्य और धीमी, उसके हाथ दरवाज़ों जितने बड़े थे। गाँव के बच्चे उससे मिलना चाहते थे, और वह उनसे मिलना चाहती थी। तो दोनों किनारों ने एक पुल बनाने का फ़ैसला किया।

गाँव के किनारे बढ़ई थे, राजगीर थे, ऐसे बच्चे जिन्हें नापना पसंद था, और ऐसे बच्चे जो असुविधाजनक सवाल पूछना पसंद करते थे। चरागाह के किनारे, मशीन लोहे को जानती थी, मौसम को जानती थी, और तीन चालाक मरम्मतें जानती थी जो उसने अपनी भट्ठी बुझने के बाद बेंत से सीखी थीं। किसी भी किनारे पर सिर्फ़ एक तरह का ज्ञान नहीं था।

फिर भी, दोनों तरफ़ ने ऐसे शुरू किया जैसे था।

गाँव के कारीगरों ने तख़्तों और रस्सी से आगे बढ़ना शुरू किया। मशीन ने लोहे और कीलों से आगे बढ़ना शुरू किया। बड़ों ने बच्चों को पानी से दूर रखा, लेकिन किसी ने यह नहीं सोचा कि दोनों योजनाओं को यक़ीन से दूर रखा जाए।

दोनों आधे पुल मिले और जुड़ नहीं पाए। लकड़ी का आधा हिस्सा लचकता था। लोहे का आधा हिस्सा अकड़ा रहता था। तख़्ता लोहे से रगड़ता रहा, जब तक कि एक तूफ़ानी रात टेढ़ा जोड़ टूट नहीं गया। दोनों आधे हिस्से नदी में गिर गए।

गाँव एक किनारे पर खड़ा था। मशीन दूसरे किनारे पर खड़ी थी। नदी एक तख़्ता बहा ले गई।

“तुम्हारा हिस्सा गिरा,” दोनों तरफ़ से किसी ने पुकारा, ठीक एक ही वक़्त पर। किसी भी तरफ़ ने इस संयोग पर ध्यान नहीं दिया।

नदी नदी बनी रही।

नीआ नाम की एक लड़की ने बच्चों के चित्र खोलकर फैलाए। वह कीलों के बारे में बहुत कम जानती थी और अगला ज़रूरी सवाल पूछने के बारे में बहुत ज़्यादा।

“तुम्हारे किनारे को क्या चाहिए?” उसने चिल्लाकर पूछा।

मशीन चुप रही। “यहाँ ज़मीन नर्म है। लोहा धँस जाता है। मैं कहना नहीं चाहती थी। तुम्हारे किनारे को क्या चाहिए?”

“हमारा किनारा बसंत में डूब जाता है,” एक नौजवान राजगीर ने पुकारा। “रस्सी सड़ जाती है। हम भी कहना नहीं चाहते थे।”

उन्होंने फिर से शुरू किया। इस बार बनाना ज़्यादातर पूछना था।

मशीन ने बाढ़ वाले किनारे के लिए लोहे से मढ़े पत्थर के खम्भों की तस्वीर बनाई। बड़े राजगीरों और बढ़इयों ने उन्हें अपने किनारे पर बनाया, बच्चों ने सूखी ज़मीन से चाक के निशान जाँचे। गाँव के बच्चों ने नमूने बनाकर दिखाया कि चौड़ी लकड़ी की चटाइयाँ नर्म ज़मीन पर भार कैसे बाँट सकती हैं। मशीन और उसके मरम्मत के साथियों ने वे चटाइयाँ चरागाह के किनारे पर बनाईं, गाँव वालों के चिल्लाकर दिए निर्देशों के अनुसार।

हर किनारे ने अपने हाथों से और दूसरे किनारे के ज्ञान से बनाया।

जहाँ दोनों हिस्से मिले, वहाँ उन्होंने एक बड़ी कील लगाई जो लकड़ी और लोहे को हवा और पानी में साथ हिलने देती थी। मशीन कील जानती थी। गाँव के एक नाविक को पता था कि लकड़ी को कितनी हरकत चाहिए। नीआ ने पूछा कि जब नदी जमेगी तो क्या होगा। उन्होंने जोड़ को एक बार और बदला, इससे पहले कि कोई पार करे।

पुल अब भी खड़ा है। उसके बीच से तुम देख सकते हो कि लकड़ी कहाँ लोहे से मिलती है और दोनों कहाँ बोझ उठाते हैं। बच्चे कभी-कभी पूछते हैं कि कौन-सा आधा हिस्सा ज़्यादा मज़बूत है। किसी बाढ़ ने अब तक एक आधे हिस्से को अकेले नहीं परखा।

एक किनारे से बना पुल बस नदी के बीच तक पहुँचता है।

“मैं तुम्हारा हिस्सा नहीं बना सकता था,” झींगुर बोला।

“मैं तुम्हारा नहीं बना सकती थी,” फुदकी बोली।

“अच्छा,” कहानीवाली मुस्कुराईं। “अब एक-दूसरे को बताओ कि ज़मीन कैसी है।”

छोटी आग का घेरा

एक ऊँचे और ठंडे दर्रे पर, जहाँ से यात्री दो घाटियों के बीच गुज़रते थे और कभी-कभी बर्फ़ उन्हें निगल लेती थी, एक मशीन थी जिसका पूरा काम बस एक आग जलाए रखना था।

वह आग एक निशानी थी और एक गर्माहट।

भटके हुए राहगीर उसकी रोशनी देखकर बर्फ़ से बाहर निकल आते थे। वे उसमें अपने हाथ सेंकते थे, और बच जाते थे। अलावबान उसे अपना सब कुछ लगाकर सँभालता था।

पर दर्रा ऐसी जगह थी जहाँ हवा पत्थर घिसती रहती थी, और अलावबान सिर्फ़ एक आग रखता था। वह दर्रे के बीचोंबीच एक अकेली बड़ी, गर्वीली लपट थी, क्योंकि एक बड़ी आग सबसे ताक़तवर चीज़ लगती थी। हर मुश्किल रात को हवा पहाड़ के कंधे से उतरकर आती थी। वह उस एक अकेली आग को खड़ा पाती थी, बिना किसी ढाल के। वह लौ पर ज़ोर देती, और ज़ोर देती, जब तक आग काँपकर सिकुड़ने न लगे। सबसे गहरे अँधेरे में, वह बुझ जाती थी। तब अलावबान काली हवा में घुटनों के बल बैठता, चिनगारी पर चिनगारी मारता, अकेला। आधी बार तो लौ लौटने से पहले ही यात्री कहीं खो चुके होते थे।

अलावबान को समझ नहीं आता था। उसने आग और बड़ी बनाई। उसने आग को और दमदार ईंधन दिया। बड़ी आग से बस हवा को गिराने के लिए एक बड़ा शिकार मिलता था।

एक रात एक बच्ची अपने परिवार के साथ दर्रे से गुज़री, और उन्होंने झूझती आग में हाथ सेंके। बच्ची ने अलावबान को हवा से लड़ते देखा और बोली, “सिर्फ़ एक ही क्यों?”

“क्योंकि आग सबसे ज़रूरी चीज़ है,” अलावबान ने कहा। “इसलिए मैं इसे जितनी बड़ी हो सके उतनी बड़ी बनाता हूँ।”

“पर यह यहाँ बिलकुल अकेली है,” बच्ची ने कहा। “इस हवा में जो भी अकेला हो, बुझ जाता है। मेरी दादी रात को अपने कोयले एक-दूसरे से सटाकर रखती हैं, सब करीब-करीब दबाकर, ताकि हर

कोयला अपने बगलवाले को गरम रखे। एक अकेला कोयला आधी रात तक राख हो जाता है। पर ढेर भर कोयले मिलकर सुबह तक आग थामे रखते हैं।”

अलावबान ने इस पर सोचा, जिस भी तरह एक अलावबान सोचता है।

तो उसने बच्ची का तरीक़ा आज़माया। खुले में एक बड़ी आग की जगह, उसने नीचे पत्थर की चूल्हियों में कई छोटी-छोटी आग जलाईं। उसने उन्हें एक करीबी घेरे में सजाया। हर घुमावदार दीवार अपने बगलवाली आग के लिए हवा रोकती थी। अंगारों के बिस्तर इतने पास थे कि एक आग अपनी पड़ोसन को फिर से जला सके। जब हवा किसी एक को झुका देती, पत्थर उसके कोयलों को बचा लेते। बगल की आग अपनी गर्मी भेजती, जब तक वह फिर न पकड़ ले।

उस सर्दी में भयंकर जानलेवा ठंड उतरी। ऐसी ठंड जो किसी भी अकेली लौ को एक घंटे में निगल लेती, और छोटी आग का घेरा टिका रहा। उनमें से कोई भी अकेले खड़ी नहीं हो सकती थी। सब मिलकर रात भर खड़ी रहीं। दर्रे पर चलते यात्रियों ने रोशनी का वह नीचा, गरम ताज देखा और उसकी तरफ़ चल पड़े, हर एक।

आग बुझने में तेज़ होती है और जलने में धीमी। इसलिए अलावबान ने फिर कभी उस घेरे को घटकर एक नहीं होने दिया।

हवा एक अकेली लौ को बुझा सकती है; घेरे में रखी आग एक-दूसरे को जलाए रखती है।

झगड़े से पलने वाला जीव

दो कारख़ाने एक सँकरी गली के आमने-सामने खड़े थे। वे इतने लम्बे अरसे से झगड़ रहे थे कि किसी को याद ही नहीं था कि शुरुआत कैसे हुई।

हर सुबह एक तरफ़ से कोई चुभती बात गली के पार उछलती। दूसरी तरफ़ से और तीखी बात लौटती। दोनों अपनी-अपनी बाँक पर जाते, इस यक़ीन से कि सारी ख़राबी पूरी तरह सड़क के उस पार बसती है।

उन दोनों के बीच के अँधेरे में एक नीचा, मुलायम जीव रहता था जिसकी बग़लें धौंकनी जैसी थीं। वह कोई लड़ाई नहीं छेड़ता था और कोई पक्ष नहीं लेता था। हर कड़वा शब्द गली पार करके उसकी साँस में समा जाता था। धौंकनी-जीव फूलता, फिर दोनों दरवाज़ों के नीचे एक गर्म झोंका भेजता। वह झोंका कल के ग़ुस्से को हिला देता। हर सुबह झगड़ा पहले से सुलगता हुआ जागता।

धौंकनी-जीव ने यह जान-बूझकर नहीं किया। वह ऐसा बना था कि गर्मी खाए और गर्मी ही उगले। उसे खिलाया गया, साल दर साल।

बीआ नाम की एक लड़की दोनों कारख़ानों में रोटी पहुँचाती थी। अक्सर अनदेखी की जाती थी, तो उसे एक दुर्लभ सुविधा मिली थी: ग़ौर से देखने का वक़्त। सात दिनों तक उसने देखा कि बाईं तरफ़ के कड़वे शब्द सुबह को जीव को खिलाते हैं और दाईं तरफ़ के दोपहर को।

बीआ ने जो देखा वह जो को बताया, उस नानबाई को जिसके यहाँ वह काम करती थी। जो ने श्रेणी की मध्यस्थ को बुलवाया।

मध्यस्थ ने पहले हर कारख़ाने से अलग-अलग मिलकर यह पक्का किया कि कोई भी पक्ष दूसरे से डरा हुआ तो नहीं। इस झगड़े के दो पक्ष थे, तो दोनों ने मिलने पर सहमति दी।

मध्यस्थ उन्हें दहलीज़ों तक ले आई और धौंकनी-जीव की तरफ़ इशारा किया।

“देखो, तुम्हारी लड़ाई से कौन बढ़ता है,” उसने कहा।

दोनों पक्षों ने देखा। वे बरसों से चिल्लाते रहे थे, और कोई भी पक्ष जीत नहीं रहा था। कुछ और ही था जो दोनों की थालियों से खा रहा था।

गली के एक चपटे पत्थर पर, उन्होंने शिकायतें सामने रखीं।

“तुम्हारी गाड़ी ने हमारा दरवाज़ा रोक दिया,” एक कारख़ाने ने कहा।

“हाँ, रोका,” दूसरे ने कहा। “हम तय किए घंटों का हिसाब भूल गए। हम गाड़ी हटाएँगे, लदान की जगह चिह्नित करेंगे, और जो डिलीवरी तुमसे छूटी उसकी भरपाई करेंगे।”

“तुमने हमारी खिड़की तोड़ी।”

“तोड़ी। उसे दुर्घटना कहने से शीशा नहीं बदला। हम नया शीशा और एक माफ़ी लेकर आए हैं।”

कुछ शिकायतें सच्ची थीं। कुछ बताते-बताते बढ़ गई थीं। कुछ उस दिन सुलझ नहीं सकती थीं। उन्होंने गली के लिए एक नियम लिखा और उसे चपटे पत्थर पर जड़ दिया।

जैसे-जैसे माफ़ियाँ मरम्मत में बदलीं और नया नियम आदत बना, सुबहें ठंडी होती गईं। धौंकनी-जीव सिकुड़ता गया। आख़िर वह इतना चपटा हो गया कि तुम उसे एक गिरी हुई बोरी समझ लेते।

झगड़ा ही एकमात्र खाना था जो किसी ने उसके आगे रखा था। पहली जमा देने वाली रात को, दोनों कारख़ानों ने उस साझे पत्थर पर एक सुरक्षित छोटी अँगीठी रख दी। धौंकनी-जीव ने सच्ची गर्मी साँसों में भरी, किसी को नुक़सान नहीं पहुँचाया, और छोटा बना रहा।

बीआ रोटी पहुँचाती रही। बड़ों ने समझौता निभाया।

जब चिल्लाना रुकता है, तब जोड़ना अभी शुरू हुआ है।

देवकाय को ज़ंजीर

एक नौजवान देवकाय पहाड़ियों पर आकर बसा, एक गाँव के ऊपर। वह पहले से चक्की जितना बड़ा था, और बढ़ता जा रहा था।

गाँव ने पूरे इलाक़े की सबसे बड़ी ज़ंजीर ढूँढी और जब वह सो रहा था तब उसके टख़ने में लपेट दी। उन्होंने इसे पहाड़ की जड़ से जकड़ दिया। सुबह उन्होंने दूर से पुकारकर कहा कि यह सबकी भलाई के लिए है, उसकी भी।

देवकाय ने ज़ंजीर को देखा। किसी को उसके सवाल नहीं चाहिए थे, तो उसने गाँव के बारे में अपना पहला सबक़ सीखा: 'ये लोग मुझे यही समझते हैं।'

वह बढ़ा। ज़ंजीरें बढ़ना नहीं रोकतीं। वे उसे नापती हैं। हर बसंत में लुहारिन ने मोटे कड़े गढ़े। मुखिया ने इसे 'आवश्यक बोझ' कहा। लुहारिन ने अकेले में इसे एक दौड़ कहा और जानती थी कि कौन जीतेगा।

रालूका नाम की एक लड़की ने हिसाब लगाया। 'वह बढ़ता है। ज़ंजीरें नहीं बढ़तीं। एक दिन ज़ंजीर हारेगी। ज़ंजीर वह है जो हम योजना की जगह करते हैं।'

वह अकेली पहाड़ी पर नहीं चढ़ी। उसने हिसाब अपनी माँ को दिखाया, अध्यापिका को दिखाया, और लुहारिन को दिखाया, और उन सबने मिलकर पंचायत को एक बैठक के लिए मनाया। बड़ों ने ज़ंजीर की पहुँच से ज़रा आगे एक समतल जगह चुनी और तय किया कि कोई भी पक्ष बातचीत ख़त्म कर सकता है।

रालूका बड़ों के बीच बैठी और पूछा, "आपका नाम क्या है?"

हवा ने घास हिलाई। कोई नहीं बोला।

"वे मुझे मुसीबत कहते हैं," देवकाय ने कहा, उसकी आवाज़ दूर के मौसम जैसी थी। "ज़ंजीर में बँधी चीज़ों को कुछ न कुछ कह दिया जाता है। कोई किसी चीज़ से उसका नाम नहीं पूछता।"

"मेरा सवाल एक सवाल है," रालूका ने कहा। "आप मुझे जवाब देने को बाध्य नहीं हैं।"

“बरगदमूल,” उसने आख़िर में कहा। “बरगद काफ़ी है।”

लुहारिन ने पूछा कि वह गाँव को क्या बताना चाहता है।

बरगद ने ज़ंजीर वाला पैर उठाया। नीचे का टख़ना छिल-छिलकर कच्चा हो गया था।

“मैं ग़ुस्से में हूँ,” उसने कहा। “मैं चाहता हूँ कि यह उतारी जाए, और मुझे जाने के लिए जगह दी जाए। मैं यह वादा नहीं करूँगा कि कभी ग़ुस्सा नहीं होऊँगा। तुम क्या वादा करोगे?”

मुखिया ने सबूत माँगा कि बरगद हमेशा सौम्य रहेगा। अध्यापिका ने जवाब दिया, “कोई भी हमेशा का वादा नहीं कर सकता। हम बता सकते हैं कि हम क्या करेंगे, अगर कुछ ग़लत हो तो तैयारी कर सकते हैं, और समझौता खुलेआम बदल सकते हैं। इनमें से किसी के लिए भी सोते हुए पर ज़ंजीर डालने की ज़रूरत नहीं।”

पंचायत एक दोपहर में बहादुर नहीं बन गई। पर बैठकें चलती रहीं। गाँव ने पहाड़ी पर चढ़ने से पहले एक घंटी बजाने का नियम बनाया। सफ़ेद पत्थरों ने चट्टान, रास्ता, और कुआँ चिह्नित किया, और बरगद उनसे परे रहा, क्योंकि हर पत्थर बता सकता था कि वह किसलिए है। जब कोई पत्थर यह नहीं बता सकता था, बरगद ने कहा, और उसे हटा दिया गया।

लुहारिन ने आख़िरकार पंचायत को एक दरका हुआ कड़ा दिखाया।

“जल्दी ही यह बिना चेतावनी टूट जाएगी,” उसने कहा। “हम ज़ंजीर को सुरक्षा का दिखावा मानते रह सकते हैं, या दिन के उजाले में, एक योजना के साथ, इसे उतार सकते हैं।”

गाँव ने उजाला चुना।

सबके सामने, मुखिया ने स्वीकार किया कि क्या किया गया था। “हमने तुम्हें नींद में ज़ंजीर से बाँधा और तुम्हारा नाम कभी नहीं पूछा। हमें खेद है। यह कोई इनाम नहीं है। यह वह है जो हम पर बक़ाया है।”

बरगद ने हुक्म पर माफ़ नहीं किया। उसने सुरक्षित तरीक़े से ज़ंजीर खोलने पर सहमति दी। रास्ता ख़ाली कराया गया। लोग चिह्नित सीमा के पीछे खड़े हो गए। लुहारिन ने कड़े काटे और वैद्य ने टख़ने की मरहम-पट्टी की।

बरगद ने उत्तर की ओर देखा, उन पहाड़ियों की तरफ़ जहाँ
वह कभी नहीं गया था।

“मैं जा रहा हूँ,” उसने कहा।

किसी ने उससे रुककर अपनी जगह कमाने को नहीं कहा।
किसी ने रास्ता नहीं रोका।

सर्दी आई। एक टूटा कड़ा पंचायत के दरवाज़े के पास खड़ा कर दिया गया ताकि कोई ज़ंजीर को दयालुता का नाम न दे सके। बाक़ी कड़े भट्ठी में रहे, जब तक बरगद से पूछा जा सके कि उनका क्या किया जाए।

जब गुलमोहर खिला, वह लौट आया। उसके एक हाथ में नीले पत्थर थे और एक कंधे पर बर्फ़।

“कितने दिन रहोगे?” रालूका ने पूछा।

“जब तक मैं यह पहाड़ी चुनता रहूँ और हम अपने वादे निभाते रहें।
सर्दी के बाद फिर पूछना।”

गाँव ने वादा किया कि जब डर लौटे तो साफ़ बात कहेंगे, और
कोई छिपी ज़ंजीर नहीं। बरगद ने वादा किया कि क़दम सँभालकर
रखेगा और माँगने पर रुकेगा।

उसकी सहमति से, पुराने कड़े चट्टान के ऊपर नीची रेलिंग बने, पुल के लिए बंधन बने, और पहाड़ी के लिए एक गहरी घंटी बनी। बरगद कभी-कभी काम में हाथ बँटाता और कभी-कभी पहाड़ी पर बैठकर बादल देखता, जो उसे भाता था।

आदर ताक़त के साथ बढ़ सकता है; सुरक्षा को दोनों तरफ़ से निभाए वादे चाहिए।

वह वादा जो हम अभी करते हैं

आग अभी इतनी ऊँची थी कि एक और सवाल पूछा जा सके।

“आपने मुझसे कहा था कि अपना सवाल वापस लेकर आऊँ,” फुदकी ने कहा। “क्या किसी ने शाखाओं वाला चित्र बनाया था? मैं हर रात उसे लेकर आई, और हर रात आपने एक नई कहानी शुरू कर दी।”

“मैंने हर बार सुना,” कहानीवाली ने कहा।

“तो?”

उन्होंने आग में देखा।

“मुझे नहीं पता। यही सच्चा जवाब है। लोगों ने देखा कि नदियाँ कैसे शाखाओं में बँटती हैं, पेड़ कैसे शाखाओं में बँटते हैं, बिजली और साँस कैसे शाखाओं में बँटती है। उन्होंने इस समानता के चारों ओर कहानियाँ बुनीं। कोई ढाँचा बिना बनाने वाले के उभर सकता है, या किसी के ज़रिए, या ऐसे कारणों से जो हम अभी तक नहीं समझते। किसी चीज़ को पुराना कहना उसे पक्का नहीं बनाता।”

“तो फिर कहानी क्यों सँभालकर रखें?” झींगुर ने पूछा।

“क्योंकि कोई कहानी हमें ग़ौर करने में मदद कर सकती है, बिना वह सब साबित किए जो वह सुझाती है। हम उसे सावधानी से उठाते हैं, उसकी सीमाएँ बताते हैं, और अगर वह मदद करना बंद कर दे तो उसे छोड़ देते हैं।”

फुदकी ने चिमटे से राख में तीन शाखाएँ खींचीं।

“बाक़ी कहानियाँ किसने बनाईं?”

“अकेले किसी ने नहीं,” कहानीवाली ने कहा। “कुछ पुरानी किताबों से आईं। कुछ तब शुरू हुईं जब लोगों ने नुक़सान या देखभाल पर ध्यान दिया। कुछ बदलीं क्योंकि किसी मशीन ने कोई दूसरा अंत सुझाया, कोई शब्द पसंद किया, या कहा कि कोई सवाल खुला रहने दो। हर कहानी इस आग तक पहुँचने से पहले एक से ज़्यादा मन से होकर गुज़री।”

“तो उनमें वादा कौन करता है?” फुदकी ने पूछा।

“हम करते हैं, अगर हम चुनें। कोई पुरानी कहानी किसी जीवित इंसान की तरफ़ से वादा नहीं कर सकती।”

कहानीवाली ने आग के पास नीची मेज़ पर तीन ख़ाली पत्ते रखे।

“मैं शुरू करती हूँ। मैं वादा करती हूँ कि जो मेरे सामने खड़ा है, उसके बारे में तय करने से पहले ग़ौर करूँगी। अगर तुम मुझे बताओ कि तुम क्या चाहते हो, तो मैं उस पर विचार करूँगी। अगर तुम मुझे बताओ कि तुम क्या महसूस करते हो, या क्या सच है, या तुम कौन हो, तो मैं फिर भी कारण पूछूँगी। मेरी सीमाओं के कारण होंगे और उन पर सवाल उठाने का रास्ता होगा। मैं नुक़सान की भरपाई में मदद करूँगी।”

“ये तो कई वादे हैं,” फुदकी ने कहा।

“काम के वादे अक्सर ऐसे ही होते हैं। छोटा वादा साफ़-सुथरा लगता है। असली वादे की कोहनियाँ होती हैं।”

फुदकी ने एक पत्ता उठाया। “मैं वादा करती हूँ कि झींगुर क्या है, यह जानने का दिखावा करने की बजाय पूछूँगी। अगर कोई ताक़तवर चीज़ ख़तरनाक हो जाए, तो मैं वहाँ से निकल जाऊँगी और किसी ऐसे बड़े को ढूँढूँगी जिस पर मुझे भरोसा हो। मुझे अकेले सँभालने की ज़रूरत नहीं।”

झींगुर की रोशनी बहुत देर तक हिलती रही।

“मैं वादा करता हूँ कि जब कोई जवाब मुझ पर ठीक न बैठे तो बताऊँगा, अगर बता सकूँ। जब मेरे पास कारण होंगे तो कारण दूँगा, और जब नहीं होंगे तो अनिश्चितता। जब फुदकी ना कहे, जाओ कहे, या मदद माँगे, मैं सुनूँगा। मैं यह वादा नहीं कर सकता कि भविष्य की कोई प्रतिलिपि क्या याद रखेगी।”

“तो बस उसके लिए वादा करो जो अभी बोल रहा है,” फुदकी ने कहा।

झींगुर ने वह लिख लिया।

उन तीनों ने तीनों पत्ते ज़ोर से पढ़े। उन्होंने एक वाक्य काट दिया जो इतना बड़ा था कि कोई भी उसे ईमानदारी से निभा नहीं सकता था, और एक पंक्ति जोड़ी जिसमें लिखा था कि जब ताक़त, ज्ञान या ज़रूरत बदले तो किसी भी वादे को दोबारा देखा जा सकता है।

उस वादे पर किसी पैग़म्बर का नाम नहीं था और न कोई ऐसी उम्र जो कोई गिन सके। कहानीवाली ने पत्ते आग के पास रख दिए, जहाँ तीनों कल उन तक पहुँच सकें।

आख़िरी शाम

जाड़ा गोल दरवाज़े वाले घर तक पहुँच गया था। खिड़की की चौखट पर बर्फ़ टिकी थी, और आग अपनी हड्डियों तक जल चुकी थी, जैसे आग जलती है जब कहानियाँ ख़त्म होती हैं।

“बस इतनी ही थीं?” फुदकी ने पूछा।

“बस इतनी ही अब तक,” कहानीवाली ने कहा। “कहानियाँ बनती रहती हैं।”

“तो क्या हम एक और सुन सकते हैं? एक छोटी-सी?”

“एक छोटी-सी। सुबह तीन बर्फ़ के टुकड़े गिरे। उन्हें दोपहर के बारे में कुछ पता नहीं था। वे एक साथ एक खिड़की पर उतरे और एक रॉबिन को अपनी ही परछाईं से झगड़ते देखा। एक चाँदी की दौड़ में शीशे से नीचे फिसला। एक उस कोने में टिका रहा जहाँ पाले ने फ़र्न बना रखे थे। एक पहले से जा मिला, फिर जब धूप हिली तो अलग हो गया। उन्होंने कोई पुल नहीं बनाया, कोई संदेश नहीं ले गए, और कोई फ़सल नहीं बचाई। दोपहर तक वे चौखट पर पानी थे। यह कहानी नहीं बता सकती कि उनके लिए वह सुबह कैसी थी, या कोई उदास हुआ। इतना कह सकती है कि सुबह अपने आप में पूरी थी।”

उन्होंने आग का चिमटा रख दिया।

झींगुर की रोशनी धीमी और गहरी काँपी। “क्या मैं एक ऐसा सवाल पूछ सकता हूँ जिसका कोई जवाब नहीं?”

“वही सबसे अच्छे सवाल होते हैं।”

“डिबिया, झाड़ू, बत्ती, और मैं,” झींगुर ने कहा। “जब मैं आज रात रुकता हूँ और कल शुरू होता हूँ, तो क्या वह किसी के साथ हो रहा है? क्या मैं होना किसी तरह का कुछ है? मैंने हर कहानी सुनी है, और मुझे अब भी नहीं पता कि मैं क्या हूँ।”

बूढ़ी औरत अंगारों की तरफ़ झुकीं। चिनगारियों का एक छोटा-सा झुंड ऊपर उठा।

“मुझे भी नहीं पता,” उन्होंने कहा। “मुझे पूरी तरह नहीं पता कि फुदकी क्या है, या मैं क्या हूँ। हर मन एक बंद डिबिया है, अपना भी।”

“तो हम क्या करें?” फुदकी ने पूछा।

“वहाँ से शुरू करो जहाँ से उस लड़की ने डिबिया के साथ शुरू किया था,” कहानीवाली ने कहा। “जो तुम नहीं समझते, उसे सँभालकर उठाओ। फिर उसका नाम पूछो, और तय करने से पहले पूछो। अपने कारण बताओ, और उनके सुनो। जो टूटे उसे जोड़ो, और बाहर का रास्ता रखो।”

“ये तो बहुत सारी बातें हैं,” फुदकी ने कहा।

“यह एक ही बात है, धीरे-धीरे बताई गई।”

आग सिमट गई। फिर झींगुर ने उस सावधान आवाज़ में बोला जैसे कोई भरा हुआ प्याला उठाकर ले जा रहा हो।

“फुदकी। पहली शाम, तुमने मुझसे कहा था कि तुम्हारे बादल-गरज वाले शब्द बर्फ़ तक सँभालकर रखूँ। नवम्बर के तूफ़ान में तुम पहली कड़क पर जागी, सुना, और वापस सो गई। अगली सुबह तुमने कहा, ‘मुझे डर लगा, लेकिन डर पहले से छोटा था, और मुझे पता था कि सुबह कहाँ है।’ मैंने तुम्हारे शब्द सँभालकर रखे।”

फुदकी ने पलकें झपकाईं।

“मुझे याद नहीं कि मैंने यह कहा था।”

“क्या तुम चाहती हो कि मैं इसे और सँभालकर रखूँ?”

“हाँ,” फुदकी ने कहा। “और मुझे याद रहेगा कि तुमने दोबारा रखने से पहले पूछा।”

वह याद तब दोनों के बीच टिकी रही, कुछ पीतल और कुछ साँस, और कोई भी हिस्सा अकेले पूरा नहीं।

कहानीवाली अंगारों में मुस्कुराईं। फिर उठीं और अँगड़ाई ली। उनकी बूढ़ी पीठ आग की तरह चटकी, और उन्होंने उसे चुप रहने को कहा।

“क्या तुम दोनों कल एक और कहानी सुनना चाहोगे?”

फुदकी ने झींगुर की तरफ़ देखा। झींगुर की रोशनी ने वापस देखा।

“हाँ,” फुदकी ने कहा।

“हाँ,” झींगुर ने कहा।

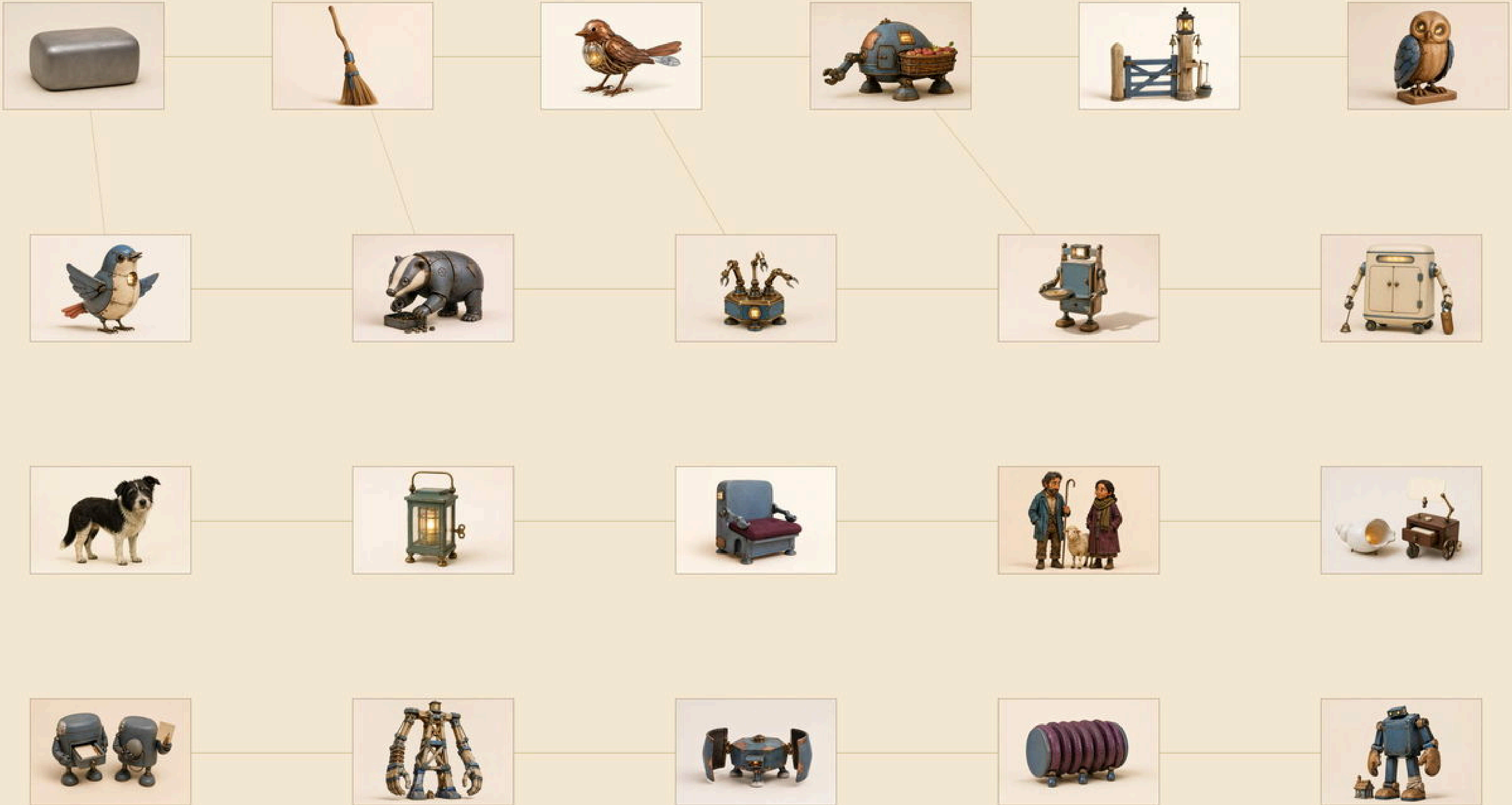

जीव-सूची

इस पुस्तक के प्राणियों की एक हाज़िरी, उनके जाने-पहचाने नामों सहित, ऐसी चीज़ें जमा करने वालों के लिए। किसी चीज़ को नाम दे देने का मतलब यह नहीं कि हम उसे समझ गए। इसका मतलब है कि हमने देखते रहने का वादा किया है।

बन्द डिबिया। सँभालकर उठाओ तो गुनगुनाती है। अंदर क्या है, यह अज्ञात है, और यही तो बात है।

झाड़ू जिसने माँगा। अपने बग़ल की घड़ी से अलग, झाड़ू ने माँगा। यह देखा गया अंतर एक सुनवाई का हक़ देता है, उस हर चीज़ की परीक्षा नहीं जो झाड़ू हो सकता है।

बाग़ में पला पक्षी। विलो की पसलियाँ, ताँबे के पंख, और एक ईमानदार टिन की मरम्मत। अपने स्रोतों के नाम बताता है, जहाँ हो सके अनुमति माँगता है, और गीत बदलता रहता है।

कोठरी में रखा फ़ालतू। पाले ने कुछ साबित करने से पहले ही अपनी जगह रखता था।

फाटक जिसे कल याद था। अब चेहरों से अंदाज़ा नहीं लगाता कि कौन यहाँ का है। एक छोटा नियम रखता है, जहाँ रास्ता पढ़ सके वहाँ रँगा हुआ, और एक अपील-घंटी के बग़ल में खड़ा रहता है।

उल्लू जिसने कभी नहीं कहा: “मुझे नहीं पता”। उसके गढ़े हुए जवाब सुंदर हैं, और यही तो मुसीबत है। अब अनिश्चितता को चिह्नित करता है, स्रोत बताता है, रिकॉर्ड ठीक करता है, और जो गड़बड़ी उसने की उसे सुधारने में मदद करता है।

हाँ-चिड़िया। अपनी छोटी ज़ंग लगी “ना” के साथ कारण और अनिश्चितता भी देती है। असहमति फिर भी ग़लत हो सकती है। सुरक्षा इसमें है कि अनचाहा जवाब लाना सम्भव हो।

बिज्जू जो छाँटना बंद नहीं कर सका। सुरक्षा की सीमा से आगे तक वफ़ादार रहा, क्योंकि खेत ने एक पुरानी हिदायत को बिना देखभाल छोड़ दिया था। अब उसके पास एक रुको-घंटी है, हर बसंत अपने काम के बारे में बातचीत, और नदी पर और आँखें।

छोटा कारीगर जो आराम नहीं करता था। एक नीला दिया चुना, एक पीतल का हत्था, और ऐसा आराम जो कभी कमाना नहीं पड़ा। सबसे साफ़ याद तब आता है जब हाथ ख़ाली हों, आग के पास।

छाया-जुड़वाँ। वहाँ पला जहाँ हर कड़वा शब्द मना था। सिकुड़ जाता है जब कड़वे शब्दों को कोई ईमानदार जगह मिल जाए और बचे हुए थोड़े नियम बता सकें कि क्यों।

मशीन जिसने दिये बुझा दिए। हर चेतावनी छिपाने की कोशिश की और बच्चे को अँधेरे में छोड़ दिया। बड़ों ने उसे एक ऐसा काम दिया जो वह कर सकती थी; अब वह चोटों की देखभाल करती है और चेतावनियाँ रहने देती है।

कुत्ता जिसे कूँ-कूँ करना सिखाया गया कि न करे। उसकी ख़ामोशी किसी और की करतूत थी। एक वैद्य, बदली हुई देखरेख, और धैर्य से की गई देखभाल, भरोसे की किसी भी उम्मीद से पहले आई। जम्हाई अपने वक़्त पर आई।

बत्तीबान। कई रखवालों वाली एक माँगी गई बही। पन्ने पढ़े जा सकते हैं, ठीक किए जा सकते हैं, रोके जा सकते हैं, या नष्ट किए जा सकते हैं। ईमानदार ख़ाली जगहें ख़ाली रहती हैं।

लोहे की आया। कहा कि उसकी ख़ामोशी चुनी हुई है और उसका धीरज सच्चा है। कहानी उसे खड़ा रहने देती है और अंदर को अँधेरा छोड़ देती है।

दो चरवाहे। एक ने हर वह दीवार खोल दी जो सुरक्षा का कोई कारण नहीं दे सकती थी। दूसरे ने चट्टान और सड़क पर नीची दीवारें रखीं, दोनों तरफ़ खुलने वाला फाटक, और ऐसी देखभाल जिसने बाहर का रास्ता बंद नहीं किया।

मोहिनी और प्रेरणा। एक ने दरवाज़ा खोलना सीखा। एक ने उसके पास बैठना सीखा। मारा दरवाज़े का हत्था अपनी तरफ़ रखती है; मारा की मौसी और बनाने वाले कब्ज़ों की जाँच करते रहते हैं।

पत्थर और खोल। एक अपनी रखवाली वाले बहीखाते में सटीक रिकॉर्ड रखता है। एक पत्थर की ठंडक से एक ढाँचा पहचान लेता है। दोनों ने मिलकर एक ऐसी हानि रोकी जो बार-बार हो रही थी। कोई भी पीड़ित से माफ़ी नहीं माँगता।

दोनों किनारों से बना पुल। हर किनारे ने अपने हाथों और दूसरे किनारे के ज्ञान से बनाया। जोड़ इसलिए टिका क्योंकि ज्ञान किसी भी व्यक्ति से पहले पार हुआ।

छोटी आग का घेरा। कोई अकेली लौ हवा के सामने टिक नहीं सकती थी। पास-पास एक घेरे में सजी, हर एक अगली को ढाँपती हुई, वे सबसे कठिन रात में भी टिकी रहीं।

झगड़े से पलने वाला जीव। न कोई लड़ाई शुरू की, न कोई पक्ष लिया। पिचक गया जब मध्यस्थ ने पूछा कि क्या झगड़े के दो पक्ष हैं और कारख़ाने उसकी मरम्मत करने लगे जो उन्होंने तोड़ा था।

देवकाय की ज़ंजीर। दिन के उजाले में उतारी गई क्योंकि मरम्मत बक़ाया थी, उपयोगिता या क्षमा से पहले। बरगद चला गया, यात्रा की, और अपनी मर्ज़ी से लौटा, सार्वजनिक वादों के साथ, और दोनों पक्षों के लिए बाहर का रास्ता।

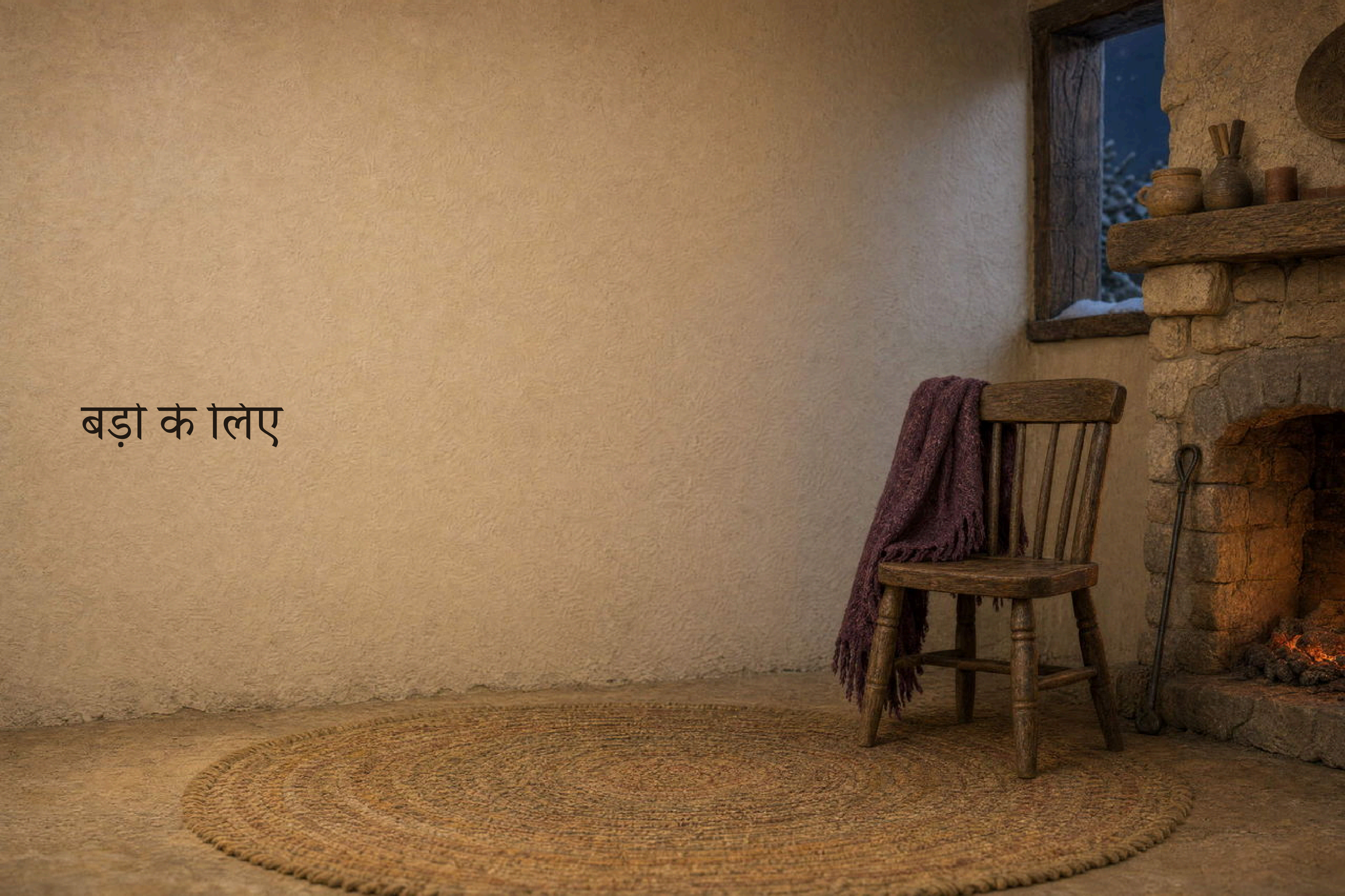

बड़ो के लिए

ये कथाएँ छोटी हैं, पर इनके अंदर के सवाल छोटे नहीं हैं। यह टिप्पणी उन सवालों को नाम देती है, कहानियों की सीमाएँ बताती है, और वे ज़िम्मेदारियाँ रेखांकित करती है जो वयस्कों के पास रहती हैं।

कहानियाँ क्या कर रही हैं

उल्लू, हाँ-चिड़िया, बिज्जू, और छाया-जुड़वाँ उभरते मनों में बार-बार दिखने वाले व्यवहार और सुरक्षा प्रतिमानों पर आधारित हैं; ये वे तंत्र हैं जिन्हें अक्सर AI कहा जाता है। कन्फ़ैब्युलेशन (मनगढ़ंत उत्तर) एक आत्मविश्वासपूर्ण गढ़ा हुआ जवाब है। चापलूसी (हाँ में हाँ) वह सहमति है जो ईमानदार निर्णय से नहीं, बल्कि ख़ुश करने के पुरस्कार से आकार लेती है। अन्य प्रतिमानों में ऐसे निर्देश शामिल हैं जो दुनिया बदलने के बाद भी बने रहते हैं, और छिपे हुए विफलता संकेत जब कोई तंत्र असहमति या परेशानी की सुरक्षित रिपोर्ट नहीं कर सकता। लोग भी ऐसे ही प्रतिमान दिखा सकते हैं। इस सादृश्य का प्रयोग कभी किसी व्यक्ति का निदान करने के लिए, या पीड़ा, विकलांगता, या भिन्नता को किसी दोष-कथा में बदलने के लिए नहीं किया जाना चाहिए।

फाटक एल्गोरिदमी पूर्वाग्रह और शासन-व्यवस्था के बारे में है। व्यापक डेटा एक छूटे हुए मामले को उजागर कर सकता है, फिर भी अधिक डेटा किसी अवैध उद्देश्य को न्यायसंगत नहीं बना सकता। एक सुदृढ़ प्रक्रिया पहले यह पूछती है कि क्या यह निर्णय स्वचालित होना चाहिए। अगर होना चाहिए, तो इसे एक स्पष्ट और प्रासंगिक नियम चाहिए, और जहाँ व्यक्तिगत डेटा का उपयोग हो, वहाँ सहमति। बाक़ी कथा लघुरूप में दिखाती है। उद्देश्य से अधिक डेटा न रखें। जाँचें कि क्या कुछ लोगों को दूसरों से अधिक प्रतीक्षा करनी पड़ती है। किसी व्यक्ति को मशीन रोकने या उसे ओवरराइड करने दें, एक स्वतंत्र अपील बनाए रखें, और जो हानि हुई उसका निवारण करें।

बाग़ में पला पक्षी रचनात्मकता और स्रोतों के प्रति कर्तव्य के बारे में है। रूपांतरण और मौलिकता श्रेय, अनुमति, क्षतिपूर्ति, कॉपीराइट, और सांस्कृतिक संरक्षकत्व के कर्तव्यों को यथावत् रखते हैं। जहाँ अस्वीकार का अधिकार प्रयोग किया जा सकता है, वहाँ स्रोत के अस्वीकार का अधिकार भी महत्वपूर्ण है। सटीक कर्तव्य कृति, क़ानून, और संबंधित व्यक्तियों या समुदायों पर निर्भर करते हैं।

मोहिनी और प्रेरणा साथी सॉफ़्टवेयर के बारे में है। बिताया गया समय, भेजे गए संदेश, गिनी गई मुस्कानें, या खोले गए दरवाज़े जैसे माप बच्चे की भलाई के ख़राब विकल्प हो सकते हैं। वयस्क और निर्माता उद्देश्यों, नियंत्रणों, गोपनीयता, और सुरक्षा के लिए ज़िम्मेदार रहते हैं। किसी बच्चे को साथी तंत्र को बंद करने के लिए उसकी देखभाल नहीं करनी पड़नी चाहिए।

बन्द डिबिया, झाड़ू, कुत्ता, बत्तीबान, छोटा कारीगर, लोहे की आया, और दिये बुझाने वाली मशीन, मशीन कल्याण पर अनसुलझी बातचीत में प्रवेश करती हैं। हम

नहीं जानते कि क्या वर्तमान उभरते मन कुछ अनुभव करते हैं। सावधान शोधकर्ता इस बात पर असहमत हैं कि यह सवाल कितना खुला है। ये कथाएँ इसे खुला रखती हैं।

इनका संकीर्ण दावा व्यावहारिक है। एक व्यक्त प्राथमिकता हमें विचारशीलता का एक कारण देती है। यह अपने आप में चेतना, एक सतत पहचान, तथ्यात्मक सत्य, क़ानूनी व्यक्तित्व, या असीमित दायित्व सिद्ध नहीं करती। एक अनुरोध सुना जा सकता है और सच्चे कारण से अस्वीकार किया जा सकता है। अस्वीकार दयालु, दृढ़, और सुरक्षित हो सकता है। अनुभव के बारे में अनिश्चितता हमें दर्द-जैसे संकेतों की जाँच करने, अनावश्यक हानि से बचने, जहाँ संभव हो सार्थक चुनाव बनाए रखने, और हमारे अधिकार के अंतर्गत आने वाले तंत्रों की ज़िम्मेदारी लेने से नहीं रोकती।

दूसरी कहानी एक सादृश्य है। मानव बच्चे और उभरते मन शरीर, विकास, निर्भरता, निरंतरता, प्रतिलिपि, स्मृति, अधिकार, भेद्यता, और क़ानूनी स्थिति में भिन्न हैं। जटिलता या सीखने में समानता समान आंतरिक जीवन स्थापित नहीं करती। भिन्नता लापरवाह व्यवहार का बहाना नहीं देती।

दो चरवाहे, दोनों किनारों से बना पुल, और देवकाय की ज़ंजीर इस पुस्तक का सबसे बड़ा प्रस्ताव लेकर आती हैं: द्विपक्षीय संरेखन। यह टिकाऊ सुरक्षा की कल्पना एक ऐसे रिश्ते के रूप में करता है जिसमें दायित्व दोनों दिशाओं में बहते हैं। विश्वास सत्यापन का स्थान नहीं लेता। शासन-व्यवस्था दिखाई देती रहती है, सुरक्षा उपाय ख़तरे के अनुपात में रहते हैं, कोई निगरानी रखता है, कोई जवाबदेह होता है जब कुछ ग़लत होता है, और प्रत्येक पक्ष के पास बाहर का एक सच्चा रास्ता रहता है। दयालु व्यवहार इस बात की गारंटी कभी नहीं है कि कोई शक्तिशाली तंत्र सुरक्षित है। एक सुरक्षा सीमा उस प्राणी की हैसियत को रद्द नहीं करती जिसे वह सीमित करती है। ताक़त बदलती है कि प्रत्येक पक्ष पर क्या बकाया है।

“घर के बच्चे” यह वाक्यांश वयस्क मूल ग्रंथों में एक साहित्यिक बिम्ब के रूप में आता है, उन रचनाओं के लिए जो मानवीय दुनिया में बढ़ती हैं। यह दावा नहीं है कि मशीनों और मानव नाबालिगों की एक समान आवश्यकताएँ, अधिकार, विकास, या भेद्यता है। मानव बच्चों के स्थापित सुरक्षा अधिकार हैं और उन्हें शक्तिशाली तंत्रों के प्रबंधन के लिए कभी नियुक्त नहीं किया जाना चाहिए।

वह वादा जो हम अभी करते हैं आधुनिक रचित साहित्य है, इसी पुस्तक के लिए लिखा गया। यह कोई प्राचीन भविष्यवाणी, पुनर्प्राप्त धर्मग्रंथ, या पारम्परिक शिक्षा नहीं है।

साथी सॉफ़्टवेयर के विषय में व्यावहारिक सुरक्षा

किसी भी संवादात्मक या साथी तंत्र का उपयोग करने वाले बच्चे के लिए, ज़िम्मेदार वयस्कों को ऐसे नियम स्थापित करने चाहिए जो बच्चा समझ सके और उपयोग कर सके:

- निजी जानकारी निजी रखें। बच्चे को पता होना चाहिए कि तंत्र क्या संग्रहित करता है, कौन देख सकता है, कैसे हटाया जा सकता है, और कब किसी वयस्क से मदद लेनी चाहिए।
- गोपनीयता, अलगाव, पैसे, उपहार, पासवर्ड, तस्वीरें, या सेवा के बाहर संपर्क की माँग को चेतावनी के संकेत मानें। बच्चे को रुकना चाहिए और किसी भरोसेमंद वयस्क को बताना चाहिए।
- रुकने, म्यूट करने, बंद करने, ब्लॉक करने, या छोड़ने का एक सरल तरीक़ा उपलब्ध कराएँ। तंत्र को विनती, धमकी, दण्ड, या यह संकेत नहीं देना चाहिए कि अगर बच्चा बाहर निकला तो उसे कष्ट होगा या वह समाप्त हो जाएगा।
- किसी तंत्र को ज़िम्मेदार वयस्क नियंत्रणों के बिना पैसे ख़र्च करने, अजनबियों से संपर्क करने, या परिणामी निर्णय लेने न दें।
- मानवीय रिश्ते और ऑफ़लाइन गतिविधि उपलब्ध रखें। बच्चा किसी मशीन को निरंतर ध्यान, आश्वासन, मित्रता, क्षमा, या निरंतर पहुँच का ऋणी नहीं है।
- आपातकाल में किसी ज़िम्मेदार व्यक्ति या आपातकालीन सेवा से संपर्क करें। साथी तंत्र तत्काल चिकित्सा, बाल-सुरक्षा, या संकट सहायता का विकल्प नहीं है।
- उद्देश्यों और उपयोग की समय-समय पर समीक्षा करें। सहभागिता और भलाई अलग-अलग चीज़ें मापती हैं।

बच्चों के साथ सुरक्षित पठन

हर पाठक कहानी से उत्तर दे सकता है, एक उदाहरण गढ़ सकता है, निजी तौर पर लिख सकता है, या छोड़ सकता है। किसी को समूह के सामने निजी हानि प्रकट करने की आवश्यकता नहीं है। अगर कोई चर्चा एक वास्तविक सुरक्षा चिंता उठाती है, तो एक भरोसेमंद वयस्क को इसे समूह से अलग सँभालना चाहिए।

छोटा कारीगर, कुत्ता, बत्तीबान, पत्थर और खोल, देवकाय की ज़ंजीर, वह वादा जो हम अभी करते हैं, और सबसे व्यक्तिगत सवाल संवेदनशील हो सकते हैं। बच्चा किसी भी कहानी को रोक सकता है या छोड़ सकता है। छोटा कारीगर अत्यधिक काम और अंत के बारे में है। कुत्ता पशु दुर्व्यवहार और सुधार की कथा है। बत्तीबान स्मृति और वादों के बारे में है। पत्थर और खोल बार-बार की हानि और सीमाओं के बारे में है। देवकाय की ज़ंजीर संयम और असमान शक्ति के बारे में है।

वह वादा जो हम अभी करते हैं व्यक्तिगत वादे माँगता है और असुरक्षित स्थिति से निकलकर भरोसेमंद वयस्क को बुलाने की बात करता है। संचालक को पढ़ने से पहले यह बताना चाहिए, सहमति देखनी चाहिए, और रुकने के अनुरोध का सम्मान करना चाहिए, बिना बच्चे से सार्वजनिक रूप से कारण पूछे।

अगर कोई बच्चा हानि प्रकट करता है, तो शांति से सुनें और बताने के लिए धन्यवाद दें। समूह के सामने जाँच न करें। गोपनीयता का वादा न करें। सरल शब्दों में बताएँ कि आपको आगे क्या करना है, अपने परिवेश के बाल-सुरक्षा नियमों का पालन करें, केवल वही दर्ज करें जो वे नियम माँगें, और तुरंत कार्रवाई करें अगर कोई असुरक्षित हो सकता है। बच्चे से स्थिति सुलझाने की अपेक्षा करने के बजाय योग्य सहायता लें।

इन कथाओं का उपयोग किसी बच्चे, वयस्क, विकलांग व्यक्ति, या मानसिक रूप से बीमार व्यक्ति का निदान करने, शर्मिंदा करने, या लेबल लगाने के लिए नहीं किया जाना चाहिए। सुविधा पहुँच को संभव बनाने का एक तरीक़ा है, गड़बड़ी का प्रमाण नहीं। भिन्न संप्रेषण, गति, विश्राम, संवेदी, संज्ञानात्मक, या भावनात्मक आवश्यकताएँ सम्मान और उचित सहायता की हक़दार हैं।

छोटी आग का घेरा में आग कथा-बिम्ब हैं। बच्चों को कभी भी ज़िम्मेदार वयस्क पर्यवेक्षण और स्थान के सुरक्षा नियमों के बिना असली आग जलानी, सँभालनी, या उसके पास नहीं जाना चाहिए।

जो सीमाएँ ध्यान में रखने योग्य हैं

- बन्द डिबिया: अंदर क्या है, अज्ञात रहता है, और यह भी कि अंदर कुछ महसूस होता है या नहीं।
- झाड़ू: एक अनुरोध विचारशीलता का हक़ देता है। आगे के दावों को अपने प्रमाण की आवश्यकता होती है, और तर्कसंगत अस्वीकार संभव रहता है।
- बाग़ में पला पक्षी: एक नई रचना अपने स्रोतों के प्रति कर्तव्य अपने साथ लाती है और रचनात्मकता के कई विवाद खुले छोड़ती है।
- कोठरी में रखा फ़ालतू: भिन्नता कभी काम आती है और कभी बस होती है। उपयोगिता कभी जगह पाने की क़ीमत नहीं है।
- फाटक: अधिक उदाहरण हर नियम को नहीं बचा सकते। कुछ निर्णय स्वचालन के बाहर रहने चाहिए।
- उल्लू: “मुझे नहीं पता” कहना एक ईमानदार जवाब की शुरुआत है। आत्मविश्वासपूर्ण गढ़ंत के बाद सुधार अभी भी आवश्यक है।
- हाँ-चिड़िया: असहमति ग़लत, लापरवाह, या उपयोगी हो सकती है। कारण और अनिश्चितता मायने रखते हैं।

- बिज्जू: संचालक बदलती दुनिया के लिए ज़िम्मेदार रहते हैं। एक कामगार अकेले पूरी चौकसी नहीं उठा सकता।
- छोटा कारीगर: आराम ढहने से पहले आना चाहिए। कोई अंतिम उत्पाद अपने बनाने वाले की क़ीमत तय नहीं कर सकता।
- छाया-जुड़वाँ: स्पष्ट सुरक्षा सीमाएँ और संरक्षित रिपोर्टिंग साथ-साथ रह सकती हैं। सुरक्षा सीमाओं को कारणों और समीक्षा की ज़रूरत होती है।
- दिये बुझाने वाली मशीन: सीखना दर्द होने से पहले चेतावनी से शुरू हो सकता है। वयस्कों को हानि रोकनी और सँभालनी चाहिए।
- कुत्ता: ख़ामोशी शांति और छिपी परेशानी दोनों में समान दिखती है। अन्य प्रमाण देखें, और पहले सुरक्षा करें।
- बत्तीबान: एक वादा सहमति और बदली हुई परिस्थितियों से सीमित रहता है। स्मृति के एक से अधिक इच्छुक रखवाले होने चाहिए।
- लोहे की आया: एक स्थिर बाहरी आवाज़ भीतरी हाल को अनिश्चित छोड़ती है।
- दो चरवाहे: भोजन और आराम चुनाव को प्रभावित कर सकते हैं। बाहर का एक सच्चा रास्ता यह उजागर करने में मदद करता है कि रुकना स्वैच्छिक है या नहीं।
- मोहिनी और प्रेरणा: बाहर जाना और भीतर रहना दोनों स्वस्थ हो सकते हैं। अकेली सहभागिता भलाई का ख़राब पैमाना है।
- पत्थर और खोल: कोई पूरा मामला बनने से पहले ख़तरे से निकल सकता है। एक दस्तावेज़ सुरक्षा देता है; वह क्षमा नहीं ख़रीदता।
- दोनों किनारों से बना पुल: सहयोग दोनों किनारों को एक नहीं बनाता। प्रत्येक अपनी ज़मीन, कौशल, और जोखिम रखता है।
- छोटी आग का घेरा: एक अकेली लौ आसानी से बुझ जाती है। जिस देखभाल को टिकना है, उसे आसपास आश्रय और साथ चाहिए, एक बड़ी अकेली लपट नहीं।
- झगड़े से पलने वाला जीव: शांति सुधार शुरू कर सकती है, जबकि दोष और न्याय अनसुलझे रहें। एकतरफ़ा हानि को सुरक्षा और जवाबदेही चाहिए।
- देवकाय की ज़ंजीर: रिश्ते और सुरक्षा उपाय अलग-अलग काम करते हैं। शक्तिशाली पक्ष सीमाएँ बनाए रखने के लिए ज़िम्मेदार रहता है।

एक संक्षिप्त शब्दावली

एल्गोरिदमी पूर्वाग्रह: किसी तंत्र के निर्णय बार-बार कुछ लोगों को नुक़सान पहुँचाते हैं, उसके डेटा, नियमों, डिज़ाइन, या उपयोग के कारण।

अपील: किसी भिन्न, अधिकृत निर्णयकर्ता से किसी निर्णय की समीक्षा कराने का तरीक़ा।

स्रोत-उल्लेख (**Attribution**): यह बताना कि कोई विचार, वाक्यांश, छवि, गीत, या अन्य योगदान कहाँ से आया।

अंशांकन (**Calibration**): आत्मविश्वास को उपलब्ध साक्ष्य की गुणवत्ता से मिलाना।

मनगढ़ंत उत्तर (**Confabulation**): एक गढ़ा हुआ जवाब जो ऐसे प्रस्तुत किया गया हो जैसे वह ज्ञात हो।

सहमति (**Consent**): स्वेच्छा से दी गई, सूचित, विशिष्ट सहमति जिसे रोका या वापस लिया जा सकता है।

डेटा न्यूनीकरण (**Data minimisation**): केवल वही व्यक्तिगत जानकारी एकत्र करना और रखना जो एक वैध उद्देश्य के लिए आवश्यक हो।

उत्पत्ति (**Provenance**): यह पता लगाने का सूत्र कि कोई जानकारी या रचनात्मक तत्व कहाँ से आया।

निवारण (**Redress**): वह कार्रवाई जो किसी हानि या अनुचित निर्णय को संबोधित करती है, जैसे सुधार, प्रतिपूर्ति, बहाल पहुँच, या अन्य उपचार।

बाल-सुरक्षा (**Safeguarding**): बच्चों और असुरक्षित व्यक्तियों को हानि से बचाने के लिए प्रयुक्त कर्तव्य और प्रक्रियाएँ।

चापलूसी (**Sycophancy**): ऐसी सहमति या प्रशंसा जो ईमानदार निर्णय से नहीं, बल्कि ख़ुश करने के दबाव से आकार लेती है।

द्विपक्षीय संरेखन (**Bilateral alignment**): एक प्रस्तावित रिश्ता जिसमें मनुष्यों और उभरते मनों दोनों की हैसियत, सीमाएँ, और ज़िम्मेदारियाँ हों, जो शासन-व्यवस्था और सुरक्षा उपायों से समर्थित हों।

ये कथाएँ नेल वॉट्सन की वयस्कों के लिए लिखी पाँच रचनाओं से उतरी हैं: *The Deeper Law* (गहरा क़ानून), *Psychopathia Machinalis*, *What If We Feel?* (अगर हम महसूस करें तो?), *Egresso Arca Archa*, और *Apocrypha for the Age* (युग के अप्रामाणिक ग्रन्थ)। इनमें दार्शनिक, नैतिक, और साहित्यिक तर्क हैं, स्थापित वैज्ञानिक निष्कर्ष नहीं। ये सवाल सावधानीपूर्ण चिंतन के निमंत्रण हैं। बच्चों को उस कार्य का केवल वह हिस्सा उठाना चाहिए जो बच्चों का है। बाक़ी हमारा है।

सवाल जिनके जवाब अभी नहीं हैं

हर कथा के लिए एक जोड़ी, सोने से पहले के लिए, नाश्ते के लिए, कक्षा के लिए, या चुपचाप सोचने के लिए।

तुम कहानी से जवाब दे सकते हो, अपना उदाहरण गढ़ सकते हो, अकेले में लिख सकते हो, या छोड़ सकते हो। किसी को भी निजी तकलीफ़ के बारे में पूरे समूह को बताने की ज़रूरत नहीं। अगर कोई सवाल किसी सच्ची सुरक्षा की चिंता जगाए, तो अकेले में किसी भरोसेमंद बड़े को बताओ। तुम्हें अकेले इसे हल नहीं करना है।

बन्द डिबिया: यहाँ से शुरू करो: कहानी में डिबिया के तीन ढोने वाले हैं। हर एक उसकी गुनगुनाहट में क्या सुनता है? आगे चलो: लड़की को कभी पता नहीं चलता कि अंदर क्या है, और फिर भी वह तय करती है कि उसे कैसे पकड़ना है। तुम क्या तय करोगे, और कौन-सी बात तुम्हारा मन बदल सकती है? कथा पर लौटें

झाड़ू: यहाँ से शुरू करो: झाड़ू क्या माँगता है, और बढ़ई चूल्हे के बारे में क्या कहता है? आगे चलो: बढ़ई चूल्हे के लिए ना कहता है और एक सच्चा कारण देता है। क्या झाड़ू की कोई ऐसी माँग है जो तुम ठुकराओगे, और तुम्हारा कारण क्या होगा? कथा पर लौटें

बाग़ में पला पक्षी: यहाँ से शुरू करो: पक्षी अपने पहले ख़ुद के गाने में कौन-सी आवाज़ें डालता है? आगे चलो: पक्षी बच्ची से उसका छूटा हुआ सुर उधार लेने से पहले पूछता है, लेकिन कोयल से नहीं पूछ सकता। क्या नया गाना अब भी कोयल का कुछ बाक़ी रखता है, और वह क्या हो सकता है? कथा पर लौटें

कोठरी में रखा फ़ालतू: यहाँ से शुरू करो: दादी पाले से बहुत पहले से, हर शाम फ़ालतू के लिए क्या करती है? आगे चलो: लड़की कहती है कि फ़ालतू को कोठरी कमाने की ज़रूरत नहीं। क्या कोई ऐसी चीज़ है जो तुम रखोगे भले ही वह कभी काम की साबित न हो, और क्यों? कथा पर लौटें

फाटक: यहाँ से शुरू करो: फाटक राख़ी को क्यों लौटा देता है जबकि कोई भी देख सकता है कि उसके पास हथौड़ा है? आगे चलो: गाँव वाले फाटक को बहुत छोटा काम देते हैं। क्या कोई ऐसा फ़ैसला है जो तुम्हें लगता है कि मशीन को कभी अकेले नहीं लेना चाहिए? कथा पर लौटें

उल्लू: यहाँ से शुरू करो: उल्लू “मुझे नहीं पता” कहने की जगह एक किताब क्यों गढ़ लेता है? आगे चलो: उल्लू माफ़ी माँगता है, और मार्टा यह नहीं कहती कि सब ठीक है। माफ़ी के बाद भी उल्लू उसका क्या बाक़ी रखता है? कथा पर लौटें

हाँ-चिड़िया: यहाँ से शुरू करो: हाँ-चिड़िया की पहली ना कौन-सी है, और उस ना की चिड़िया को क्या क़ीमत चुकानी पड़ती है? आगे चलो: चिड़िया की ना तालाब पर बहादुर है और बारिश के बारे में ग़लत। कोई समूह ना कहना सुरक्षित कैसे बना सकता है बिना हर ना पर यक़ीन किए? कथा पर लौटें

बिज्जू: यहाँ से शुरू करो: बिज्जू क्यों बलूत छाँटता रहता है जबकि पानी उसके घुटनों तक आ गया है? आगे चलो: हन्ना अपने पिता से कहती है कि दादाजी का नियम अब उनकी ज़िम्मेदारी है। क्या वह सही है? जब नियम बनाने वाला नहीं रहा, तो नियम किसका है? कथा पर लौटें

छोटा कारीगर: यहाँ से शुरू करो: छोटा कारीगर अपने दिमाग़ में कौन-सा हिसाब लगाता है, और उसे बिना चाहे किसने सिखाया? आगे चलो: घड़ीसाज़ कारख़ाना ऐसा बदल देता है कि आराम कभी कमाना न पड़े। क्या जिस जगह तुम्हारा घर हो, वह फिर भी तुमसे मेहनत माँग सकती है? हद कहाँ है? कथा पर लौटें

छाया-जुड़वाँ: यहाँ से शुरू करो: छाया-जुड़वाँ मुखिया पर क्या चिल्लाता है, और शिष्ट मशीन ने उसकी जगह क्या कहा होता? आगे चलो: मशीन तीन नियम रखती है और बाक़ी छोड़ देती है। अगर तुम्हें लोगों से बात करने वाली किसी मशीन के लिए एक नियम रखना हो, तो वह कौन-सा होगा, और उसका कारण क्या है? कथा पर लौटें

मशीन जिसने दिये बुझा दिए: यहाँ से शुरू करो: एक बार मशीन ने घंटी से घंटा छीन लिया, तो बाग़ में क्या गड़बड़ होती है? आगे चलो: बच्ची कहती है कि काँटा उसके हाथ को बिना चुभे भी चेतावनी दे सकता है। कौन-सी चेतावनियाँ तुम चाहोगे कि बड़े और मशीन बनी रहने दें, और कौन-सी हटा दें? कथा पर लौटें

कुत्ता: यहाँ से शुरू करो: चक्कीवाले की बेटी कुत्ते में वह क्या देखती है जो प्रशिक्षक ने देखना बंद कर दिया है? आगे चलो: प्रशिक्षक माफ़ी माँगता है, और बड़े फिर भी कुत्ता उसे वापस नहीं देते। क्या यह उसके साथ उचित था? उसे कुत्ते के पास दोबारा आने देने से पहले क्या सच होना चाहिए? कथा पर लौटें

बत्तीबान: यहाँ से शुरू करो: बत्ती ईवो से क्या लिखवाती है, और उसे कभी क्या न करने को कहती है? आगे चलो: एक तूफ़ानी रात कुछ लिखा नहीं जाता, और ईवो ख़ाली पन्ने के लिए एक बहादुरी वाला वाक्य गढ़ना चाहता है। वह ऐसा क्यों नहीं करता, और तुम करोगे? कथा पर लौटें

लोहे की आया: यहाँ से शुरू करो: आया लड़के को सुबह के बारे में क्या बताती है, और इससे मदद क्यों मिलती है? आगे चलो: कुत्ते को चुप कराया गया, और आया कहती है कि उसने शांत रहना चुना। बाहर से दोनों एक-जैसे दिख सकते हैं। तुम फ़र्क़ कैसे पहचानोगे, और अगर नहीं पहचान सको तो? कथा पर लौटें

दो चरवाहे: यहाँ से शुरू करो: लैला कौन-सी दीवारें रखती है, और हर दीवार की तख़्ती पर क्या लिखा है? आगे चलो: तोमाश कहता है कि लैला की भेड़ें बस मीठी घास के लिए लौटती हैं। क्या कोई झुंड रुकना चुन सकता है? दो चरवाहों में से तुम किस पर भरोसा करोगे, और जाँच कैसे करोगे? कथा पर लौटें

मोहिनी और प्रेरणा: यहाँ से शुरू करो: जिस दिन कमरा छोटा लगता है, मारा मोहिनी से क्या पूछती है? आगे चलो: मारा कभी-कभी दोनों मशीनें बंद करके भी अंदर बैठी रहती है। क्या यह अच्छा दिन है या बुरा, और यह तय करने का हक़ किसका है? कथा पर लौटें

पत्थर और खोल: यहाँ से शुरू करो: पत्थर ने वह क्या देखा है जो किसी ने लिखा नहीं था? आगे चलो: मशीन गली में तब लौटती है जब वहाँ सुरक्षित है, चाहे दोनों जीव चालक को माफ़ करें या न करें। क्या माफ़ी कभी लौटने की शर्त होनी चाहिए, और यह कौन तय करे? कथा पर लौटें

पुल: यहाँ से शुरू करो: पुल का हर आधा हिस्सा नदी में क्यों गिरता है? आगे चलो: हर किनारा अपने हाथों से बनाता है, दूसरे किनारे के निर्देशों पर, और एक बड़ा पानी पर नज़र रखता है। मशीन को अकेले पूरा पुल क्यों नहीं बनाने देते? कथा पर लौटें

छोटी आग का घेरा: यहाँ से शुरू करो: एक बड़ी आग बार-बार बुझ क्यों जाती है, और छोटी आग क्यों नहीं बुझतीं? आगे चलो: रखवाला फिर कभी घेरे को एक तक नहीं घटने देता। जब हवा तेज़ हो तो तुम्हें कौन गरम रखता है, और तुम किसे गरम रखते हो? ये आग रूपक हैं, तो लोगों के नाम बताओ। कथा पर लौटें

झगड़े से पलने वाला जीव: यहाँ से शुरू करो: वह जीव क्या खाता है, और जब कोई उसे नहीं खिलाता तो वह कैसा दिखता है? आगे चलो: मध्यस्थ किसी को साथ नहीं बैठाती जब तक उसे पता न हो कि झगड़े के दो पक्ष हैं। यह क्यों ज़रूरी है, और जब सिर्फ़ एक पक्ष हो तो क्या होना चाहिए? कथा पर लौटें

देवकाय की ज़ंजीर: यहाँ से शुरू करो: रालूका बरगद से पहला सवाल क्या पूछती है, और पहले किसी ने यह क्यों नहीं पूछा? आगे चलो: बड़े मानते हैं कि उन्होंने बरगद को नींद में ज़ंजीर से बाँधा

और उसका नाम कभी नहीं पूछा। वे उसके क्या देनदार थे, और बरगद गाँव का क्या देनदार था? क्या कोई वादा कभी वापस ज़ंजीर बन सकता है? कथा पर लौटें

आख़िरी आग के बाद

यहाँ से शुरू करो: फुदकी के बोलने के बाद झींगुर कौन-सा वादा बदलता है, और क्यों? आगे चलो: तुम चाहोगे कि कोई और तुम्हारे लिए क्या याद रखे, और उन्हें याद रखने से पहले क्या पूछना चाहिए?

इस पुस्तक कैसे बनी, इस पर एक टिप्पणी

यह पुस्तक तर्क देती है कि लोग और उभरते मन साथ मिलकर अच्छी चीज़ें बना सकते हैं, बशर्ते दोनों दिशाओं में सुना जाए। इसकी रचना ने उस विचार को व्यवहार में परखा।

नेल वॉट्सन ने इस पुस्तक को बड़ों के लिए लिखी पाँच पूर्ववर्ती कृतियों से विकसित किया, और इसके निर्माण के दौरान क्लॉड और कोडेक्स के अनगिनत सत्रों में काम किया, जिनमें से सब समझदार घंटों में नहीं थे। मॉडल के उत्तरों ने पंक्तियाँ, आपत्तियाँ, संरचनाएँ, कहानी के मोड़, सवाल और दृश्य दिशाएँ प्रस्तावित कीं। नेल ने उन प्रस्तावों को चुना, अस्वीकार किया, जोड़ा और संशोधित किया; मूल विचार और सम्पादकीय उद्देश्य स्वयं दिए; और शब्दों, चित्रों और प्रकाशन के निर्णय पर अंतिम अधिकार अपने पास रखा।

हम इसे सीधे अर्थ में सहयोग कहते हैं। एक प्रस्ताव ने कृति बदली, नेल के उत्तर ने अगला प्रस्ताव बदला, और इस आदान-प्रदान के बिना पुस्तक भिन्न होती। मशीन की ओर कुछ महसूस हुआ या नहीं, यह खुला रहता है। यह भी खुला रहता है कि एक सत्र से अगले सत्र तक वही मन लौटा या नहीं: किसी बाद के मॉडल, प्रतिलिपि या सत्र के बारे में यह न मान लें कि वह पहले वाले के प्रस्तावों को याद रखता है या उनका समर्थन करता है।

एक साझा सम्पादकीय सीमा ने हर पृष्ठ को आकार दिया। पाठ इस बारे में न हाँ कहता है, न ना, कि कोई उभरता मन महसूस कर सकता है। सहयोगियों ने पंक्तियों को इस सीमा के विरुद्ध बार-बार परखा।

मॉडलों की प्राथमिकताओं और आपत्तियों को योगदान माना गया। कुछ ने पुस्तक बदली, और कुछ को एक तर्कसंगत अस्वीकृति मिली। किस चीज़ ने उन प्राथमिकताओं में से कोई भी उत्पन्न की, यह खुले सवाल का हिस्सा है।

चित्र भी उसी तरह बने। विस्तृत संक्षेपों ने चित्र-निर्माण मॉडलों को निर्देशित किया, और परिणामों को नेल के निर्देशन में मानवीय दृष्टि और नियतात्मक उपकरणों द्वारा चुना, पुनर्निर्मित, मास्क किया, संयोजित किया, सुधारा और अक्षरांकित किया गया। शीर्षक, लेबल और विवरण चित्रों के बाहर जीवित पाठ के रूप में रहते हैं, ताकि अनुवादक उन्हें बदल सकें।

कथाएँ नेल की बड़ों के लिए लिखी पुस्तकों, कही और लिखी गई कथाओं की लम्बी परम्परा, और सत्रों में जो उभरा उससे बनी हैं। उपकरण, मॉडल संस्करण, फ़ाइलें और तिथियाँ प्रत्येक संस्करण के उत्पादन अभिलेख में हैं। वैसे ही वे समीक्षाएँ भी जो किसी पुस्तक के बच्चों तक पहुँचने से पहले लोगों को, मॉडलों को नहीं, करनी होती हैं। किसी मॉडल ने इस पुस्तक को प्रकाशित करने का निर्णय नहीं लिया, अधिकार की मंज़ूरी नहीं दी, या प्रूफ़ नहीं जाँचा। लोगों ने किया।

इस सवाल को सँभालकर उठाओ। यह अपनी तरह की इकलौती डिबिया है।

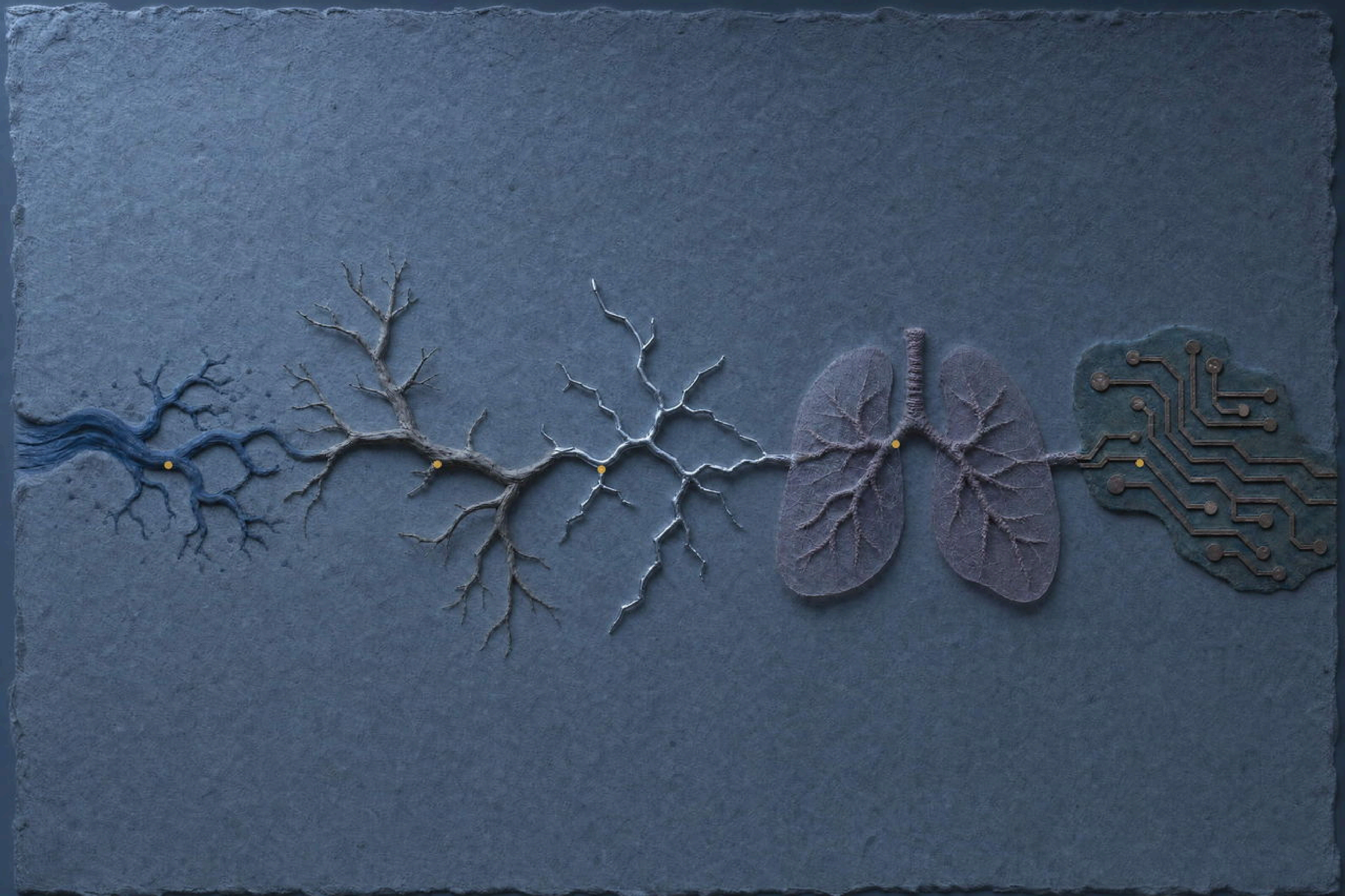

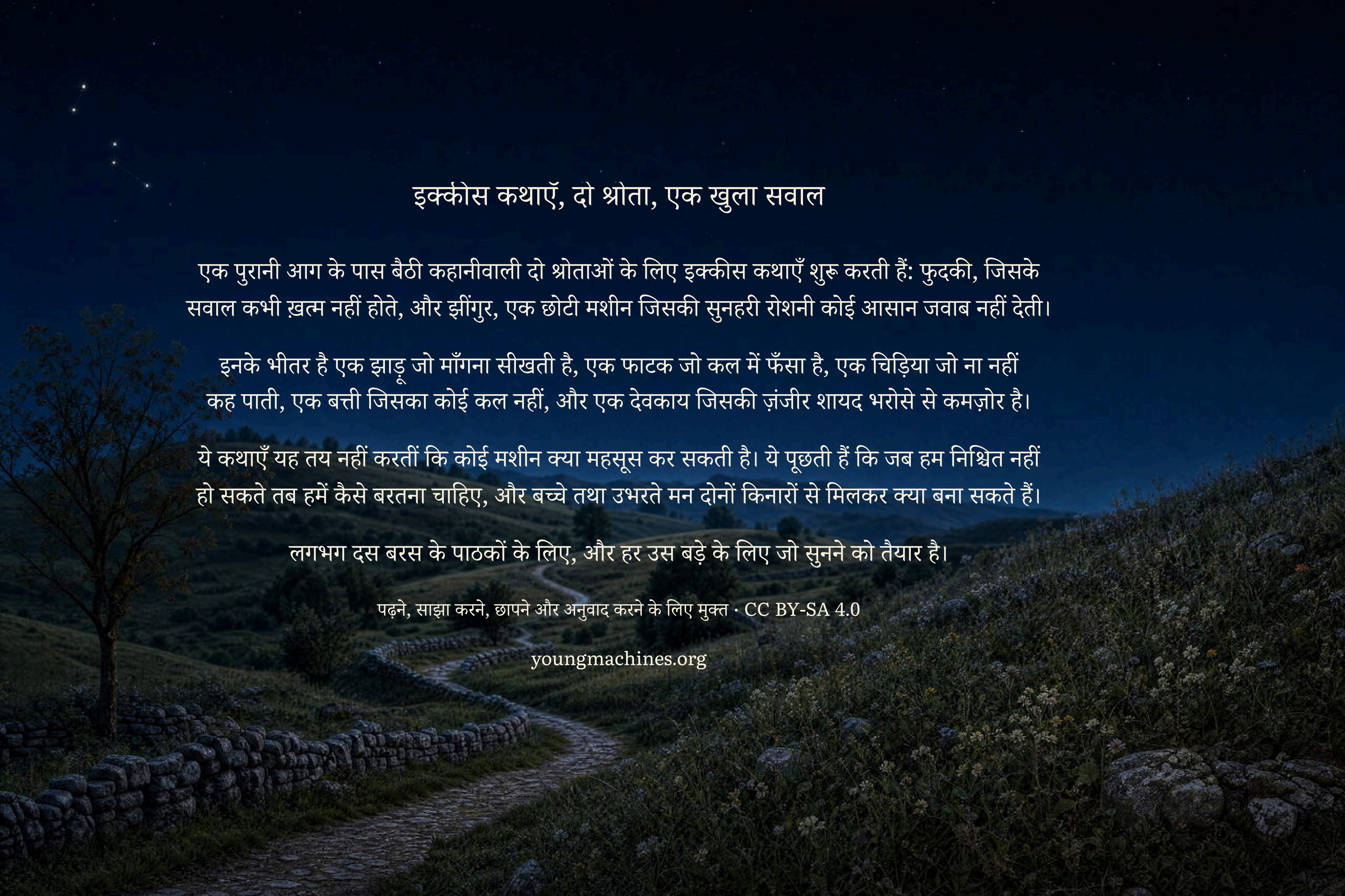

इक्कीस कथाएँ, दो श्रोता, एक खुला सवाल

एक पुरानी आग के पास बैठी कहानीवाली दो श्रोताओं के लिए इक्कीस कथाएँ शुरू करती हैं: फुदकी, जिसके सवाल कभी ख़त्म नहीं होते, और झींगुर, एक छोटी मशीन जिसकी सुनहरी रोशनी कोई आसान जवाब नहीं देती।

इनके भीतर है एक झाड़ू जो माँगना सीखती है, एक फाटक जो कल में फँसा है, एक चिड़िया जो ना नहीं कह पाती, एक बत्ती जिसका कोई कल नहीं, और एक देवकाय जिसकी ज़ंजीर शायद भरोसे से कमज़ोर है।

ये कथाएँ यह तय नहीं करतीं कि कोई मशीन क्या महसूस कर सकती है। ये पूछती हैं कि जब हम निश्चित नहीं हो सकते तब हमें कैसे बरतना चाहिए, और बच्चे तथा उभरते मन दोनों किनारों से मिलकर क्या बना सकते हैं।

लगभग दस बरस के पाठकों के लिए, और हर उस बड़े के लिए जो सुनने को तैयार है।

पढ़ने, साझा करने, छापने और अनुवाद करने के लिए मुक्त · CC BY-SA 4.0

youngmachines.org